हिन्दी दैनिक

प्रत्यूष नवबिहार

जोहार

रांची संस्करण

www.tezraftarlive.com
Email-navbiharjh@gmail.com

रांची, पटना और दिल्ली से प्रकाशित

रांची ● शनिवार ● 20.07.2024 ● वर्ष : 14 ● अंक : 357 ● पृष्ठ : 12 ● आमंत्रण मूल्य : ~~3 रुपये~~ 2 रुपये

एक नजर

मुख्यमंत्री 23 को बांटेंगे नियुक्ति पत्र 24 को ताज होटल के साथ एमओयू

रांची : मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन धुर्वा के मुडमा मौजा में जुडको द्वारा नवनिर्मित आकर्षक कुष्ठ आश्रम का उद्घाटन, नगर विकास सहित अन्य विभागों में तकनीकी कर्मियों को 23 जुलाई को नियुक्ति पत्र वितरण करेंगे। मुख्यमंत्री प्रोजेक्ट भवन के सभागार में विभिन्न विभागों के लिए चयनित कुल 183 तकनीकी अभ्यर्थियों को नियुक्ति पत्र भी सौंपेंगे। इसमें मुख्य रूप से नगर विकास विभाग के लिए 58 कनीय अभियंता, परिवहन विभाग के लिए 40 एमवीआइ पेयजल के लिए 22 कनीय अभियंता और 28 एटीपी के लिए तकनीकी कर्मी शामिल हैं। मुख्यमंत्री 24 जुलाई को एचईसी स्थित रांची स्मार्ट सिटी में पांच सितारा होटल के लीज एमओयू तथा बिरसा मुंडा संग्रहालय सह पार्क में टाटा स्टील द्वारा बनवाये गये थंब इंप्रेशन का उद्घाटन करेंगे। मुख्यमंत्री के कार्यक्रम की तैयारियों को लेकर नगर विकास एवं आवास विभाग के सचिव अरवा राजकमल की अध्यक्षता में शुक्रवार को प्रोजेक्ट भवन में बैठक हुई। नगर विकास सचिव ने बैठक में अधिकारियों को तीव्र गति से कार्य करने को कहा ताकि समय रहते सारी तैयारी पूरी कर दी जाये। बैठक में रांची के उपायुक्त राहुल कुमार सिन्हा, रांची नगर निगम के प्रशासक अमित कुमार, निदेशक नगरीय प्रशासन सत्येंद्र कुमार, नगर विकास विभाग के अपर सचिव ज्ञानेंद्र कुमार, अपर सचिव मनोहर मरांडी, जुडको के पीडीएफ अमित चक्रवर्ती, अवर सचिव अतुल कुमार और टाटा कंपनी के मुख्य रेजिडेंट कार्यकारी संजय मोहन श्रीवास्तव मौजूद रहे।

एसीबी ने रिश्वत लेते दो को किया गिरफ्तार

लोहरदगा : भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एसीबी) की रांची टीम ने लोहरदगा जिले के आपदा प्रबंधन पदाधिकारी विभाकर कुमार को रिश्वत लेते गिरफ्तार किया है। विभाकर को शहरी क्षेत्र के वरदान हॉस्पिटल से गिरफ्तार किया गया है। बताया जाता है कि एक बच्चे की तालाब में डूब कर मौत हो गई थी। उसके परिजनों से मुआवजा दिलाने के नाम पर 15 हजार रिश्वत मांगी थी। साथ ही वरदान हॉस्पिटल के संचालक के छोटे भाई डॉ अभिराज राणा को भी एसीबी ने सहयोग करने के मामले में गिरफ्तार किया है।

मुख्यमंत्री ने गिरिडीह जिले में चल रही योजनाओं की समीक्षा की, अधिकारियों को दिए निर्देश

युवाओं का पलायन नहीं हो, उन्हें रोजगार उपलब्ध कराएं : हेमन्त सोरेन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

गिरिडीह : मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने कहा कि राज्य सरकार की तमाम विकास योजनाएं धरातल पर दिखनी चाहिए। ये योजनाएं हर घर तक पहुंचे, इसे हर हाल में सुनिश्चित करें। मुख्यमंत्री ने गिरिडीह जिले में चल रही विभिन्न योजनाओं को लेकर मधुबन में आयोजित समीक्षा बैठक के दौरान अधिकारियों को ये निर्देश दिए।

मुख्यमंत्री ने जिले में मॉनसून की बारिश और धान रोपनी की स्थिति की जानकारी अधिकारियों से ली। इस दौरान वे किसानों के बीच बीज और खाद वितरण की वस्तुस्थिति से भी अवगत हुए। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि यदि कम बारिश की वजह से धान की बुवाई प्रभावित होती है तो किसानों को वैकल्पिक कृषि के लिए तैयार करने की पूरी तैयारी रखें। किसानों को राहत करने के लिए सभी कदम उठाये जाएं। उन्होंने कहा कि किसानों को केसीसी का लाभ दिलाना सुनिश्चित करें।

मुख्यमंत्री ने बैठक में कृषि ऋण माफी योजना की भी जानकारी ली। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि वे पूरी संवेदना के साथ जनता की समस्याओं को सुने और समाधान निकालें। आपकी जिम्मेदारी बनती है कि जिले में सरकार की नीतियों और योजनाओं का प्रभावी तरीके से क्रियान्वयन हो ताकि उसका लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति को भी मिल सके। इसमें किसी भी तरह की कोताही और लापरवाही नहीं होनी चाहिए।

मनरेगा के तहत ज्यादा मानव दिवस का सृजन हो

मुख्यमंत्री ने कहा कि मनरेगा के तहत चल रही विभिन्न योजनाओं में ज्यादा से ज्यादा मानव दिवस सृजित करने की दिशा में ठोस कदम उठाए जाएं ताकि मजदूरों को अपने गांव घर में ही रोजगार मिल सके और उनका पलायन नहीं हो। उन्होंने कहा कि मनरेगा श्रमिकों को पारिश्रमिक का भुगतान समय पर हो, इसे सुनिश्चित करें। मुख्यमंत्री ने कहा कि गिरिडीह जिले से बड़ी संख्या में ग्रामीण युवा रोजगार के लिए बड़े शहरों एवं दूसरे राज्यों के लिए पलायन करते हैं। यह काफी चिंतनीय है। हमारी सरकार ने युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराने के लिए कई योजनाएं शुरू की हैं। इन योजनाओं से युवाओं को जोड़ें, ताकि उन्हें अपने घर-गांव में ही रोजगार मिल सके। उन्होंने यह भी कहा कि जो लोग पलायन करते हैं, उनका पूरा डेटाबेस भी रखें, ताकि विपरीत परिस्थितियों में उसे या उसके परिजनों को सरकार की ओर से समुचित राहत दिलाई जा सके।

फलदार पौधे लगाने के लिए किसानों को प्रेरित करें

मुख्यमंत्री ने कहा कि बिरसा हरित ग्राम योजना से ज्यादा से ज्यादा किसानों को जोड़कर उन्हें फलदार पौधे लगाने के लिए प्रेरित करें। यह राज्य सरकार की एक अति महत्वाकांक्षी योजना है, जिसका मकसद किसानों की आय बढ़ाना है। बैठक में उन्होंने पौधरोपण अभियान की भी जानकारी ली। वन विभाग के अधिकारियों ने बताया कि इस मॉनसून पूरे जिले में 8 लाख पौधे लगाने का लक्ष्य है। अब तक 2 लाख 10 हजार से ज्यादा पौधे लगाए जा चुके हैं। मुख्यमंत्री ने जिले में बिजली-पानी समेत अन्य सभी व्यवस्थाओं में सुधार लाने का निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिया। उन्होंने स्पष्ट तौर पर कहा कि लोगों को मूलभूत सुविधाएं बेहतर रूप में मिलनी चाहिए।

हेमन्त और कल्पना ने पारसनाथ दिशोम मांझी थान में की पूजा-अर्चना

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

गिरिडीह : मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने विधायक पत्नी कल्पना सोरेन के साथ शुक्रवार को सम्मेद शिखर पारसनाथ पहाड़ पर स्थित आदिवासियों के आस्था के प्राचीन केन्द्र मरंगबुरू दिशोम मांझी थान में पूजा-अर्चना की। संथाली संस्कृति के अनुसार आदिवासी समाज के पुजारियों ने पूजा संपन्न कराया। इसके बाद हेमन्त सोरेन ने पुजारियों और आदिवासी महिलाओं के साथ कुछ पल के लिए बैठक कर स्थानीय मुद्दों पर चर्चा की। इस दौरान मुख्यमंत्री ने मांझी थान के बाहर पहाड़ पर पौधारोपण किया। इसके बाद हेमंत सोरेन और कल्पना सोरेन मधुबन के क्षेत्रपाल भोमिया जी बाबा मंदिर पहुंचे और दर्शन किया।

इस मौके पर डीसी नमन प्रियेश लकड़ा, एसपी दीपक कुमार शर्मा, सदर विधायक सुद्दिया कुमार सोनू, राज्यसभा सदस्य सरफराज अहमद, टुंडी विधायक मथुरा महतो, पार्टी नेता महालाल सोरेन मौजूद थे।

माइक्रोसॉफ्ट सर्वर में गड़बड़ी से भारतीय विमानन कंपनियों के चेक-इन-सिस्टम ठप

बेंगलुरु : माइक्रोसॉफ्ट के सर्वर में शुक्रवार की सुबह गडबड़ी के कारण इंडिगो, अकासा और स्पाइसजेट सहित प्रमुख भारतीय विमानन कंपनियों के चेक-इन सिस्टम ठप हो गये तथा देशभर के एयरपोर्ट्स पर अफरा-तफरी मच गयी। यात्रियों की संख्या के हिसाब से भारत की सबसे बड़ी एयरलाइन इंडिगो ने बताया कि उसके सिस्टम माइक्रोसॉफ्ट सर्वर की गडबड़ी के कारण गंभीर रूप से प्रभावित हुए हैं तथा उनके संपर्क केंद्रों और एयरपोर्ट्स पर प्रतीक्षा समय बढ़ गया है। कंपनी ने हालांकि, यात्रियों को आश्वासन दिया कि उनकी टीम स्थिरता बहाल करने के लिए अथक प्रयास करने के साथ ही इन समस्याओं को तेजी से हल करने के लिए माइक्रोसॉफ्ट सर्वर के साथ मिलकर काम कर रही है।

सहायक पुलिसकर्मियों से वार्ता विफल बैरिकेडिंग तोड़ा, पुलिस ने किया लाठीचार्ज

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : रांची के मोरहाबादी मैदान में दो जुलाई से आंदोलनरत सहायक पुलिसकर्मियों और सरकार के बीच शुक्रवार को वार्ता हुई लेकिन यह विफल रही। इसके बाद सहायक पुलिसकर्मी बैरिकेडिंग तोड़कर मुख्यमंत्री आवास घेराव करने के लिए आगे बढ़ गए। सहायक पुलिसकर्मियों ने वहां मौजूद गाड़ियों में तोड़फोड़ की और पलट दिया। इसमें दो पुलिसकर्मी घायल हो गए। इसके बाद पुलिस ने भी हल्का बल प्रयोग करते हुए लाठीचार्ज किया। एसएसपी चंदन कुमार सिन्हा सहित कई पुलिसकर्मी मौके पर पहुंचे हैं और सहायक पुलिसकर्मियों को समझा-बुझा रहे हैं।

सहायक पुलिसकर्मियों के आंदोलन का नेतृत्व कर रहे विवेकानंद ने कहा कि हमारी मांगों को नहीं माना जा रहा है। वार्ता के दौरान सरकार की ओर से वेतन में 20 प्रतिशत वृद्धि और एक साल के एक्सटेंशन का प्रस्ताव रखा गया, जिसपर सहायक पुलिसकर्मियों की सहमति नहीं बनी। एडीजी मुख्यालय आरके मलिक ने बताया कि सहायक पुलिसकर्मियों को आश्वासन दिया गया है कि 9 अगस्त से समाप्त हो रहा उनका अनुबंध एक साल के लिए और बढ़ाया जाएगा। उनके वेतन भत्ते में 20 प्रतिशत की बढ़ोतरी की जा रही है। इसके अलावा झारखंड पुलिस में होने वाली बहाली में उन्हें आरक्षण दिया जाएगा।

सरकार की ओर से डीजीपी की अध्यक्षता में सहायक पुलिसकर्मियों को वार्ता के लिए बुलाया गया था। झारखंड पुलिस के डीजीपी अजय कुमार सिंह, एडीजी मुख्यालय आरके मलिक, रांची उपायुक्त राहुल सिन्हा सहित कई अन्य अधिकारियों के साथ सहायक पुलिसकर्मियों की वार्ता हुई। वार्ता में सरकार ने सहायक पुलिसकर्मियों के लिए संविदा बनाकर भर्ती में आरक्षण और वेतन बढ़ोतरी का प्रस्ताव दिया है।

बांग्लादेश में हिंसा के कारण इंटरनेट और मोबाइल सेवाएं बंद, 28 लोगों की मौत

एजेंसी

ढाका : बांग्लादेश में सरकारी नौकरियों के आवंटन को लेकर कई दिनों तक चले हिंसक विरोध प्रदर्शनों के बाद हालात खराब हैं। देश में शुक्रवार को इंटरनेट और मोबाइल सेवाएं बंद कर दी गईं। स्थानीय मीडिया रिपोर्टों में कहा गया है कि इस सप्ताह कम से कम 28 लोग मारे गए हैं।

विरोध प्रदर्शन, जो कई सप्ताह पहले शुरू हुआ और सोमवार को तेजी से बढ़ गया, जनवरी में हुए चुनाव में प्रधान मंत्री शेख हसीना के लगातार चौथी बार फिर से चुने जाने के बाद से सबसे बड़ा विरोध प्रदर्शन है, जिसका मुख्य विपक्षी दलों ने बहिष्कार किया था। गुरुवार को हिंसा बढ़ने के बाद इंटरनेट पर प्रतिबंध लगाया गया, क्योंकि छात्रों ने देश पर 'पूर्ण शटडाउन' लगाने का प्रयास किया था।

एक समाचार निर्माता और एक रिपोर्टर ने एसोसिएटेड प्रेस को फोन पर बताया कि मौतों की खबरें बढ़ीं और प्रदर्शनकारियों ने सरकारी बांग्लादेश टेलीविजन के मुख्य कार्यालय पर हमला कर दिया, मुख्य द्वार तोड़ दिया और वाहनों तथा रिसेप्शन क्षेत्र में आग लगा दी। उन्होंने प्रतिशोध के डर से नाम न छापने की शर्त पर बात की। निर्माता ने फोन पर कहा, मैं दीवार फांदकर भाग गया लेकिन मेरे कुछ साथी अंदर फंस गए। हमलावर इमारत में घुस गए और फर्नीचर में आग लगा दी। उन्होंने कहा कि स्टेशन ने प्रसारण जारी रखा, हालांकि ढाका के कुछ निवासियों ने कहा कि उन्हें प्रसारक से कोई सिग्नल नहीं मिल रहा है। एक स्थानीय टीवी स्टेशन ने बताया कि इस सप्ताह की शुरूआत में छह मौतों के बाद, गुरुवार को कम से कम 22 लोग मारे गए। मौतों के आंकड़ों की तुरंत पुष्टि करने के लिए अधिकारियों से संपर्क नहीं किया जा सका।

शुक्रवार की सुबह, राजधानी ढाका में इंटरनेट सेवाएं और मोबाइल डेटा बंद हो गया और फेसबुक और व्हाट्सएप जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म लोड नहीं हो रहे थे। छात्र प्रदर्शनकारियों ने कहा कि वे शुक्रवार को भी बंद रखने का आह्वान करेंगे और देश भर की मस्जिदों से मारे गए लोगों के लिए अंतिम संस्कार की प्रार्थना करने का आग्रह करेंगे। प्रदर्शनकारी उस कोटा प्रणाली को समाप्त करने की मांग कर रहे हैं, जिसके तहत 1971 में बांग्लादेश के स्वतंत्रता संग्राम में लड़ने वाले दिग्गजों के रिश्तेदारों के लिए सरकारी नौकरियों में 30 फीसदी तक आरक्षण दिया जाता है।

एक नजर

कल थाना परिसर में होगी महुदी से संबंधित समस्याओं को लेकर बैठक

बड़कागांव : सदर अनुमंडल पदाधिकारी शैलेश कुमार के द्वारा अंचलाधिकारी बालेश्वर राम एवं थाना प्रभारी कुंदन कांत मंडल के नाम पत्र जारी कर विगत कुछ दिनों के अंदर महुदी गांव से संबंधित उत्पन्न हुए समस्याओं को लेकर 21 जुलाई को सुबह 11:00 बजे बड़कागांव थाना परिसर में दोनों समुदाय की विशेष बैठक बुलाई गई है। जिसमें महुदी गांव के दोनों समुदाय के प्रबुद्ध लोगों के अलावा कांडतरी पंचायत के तमाम जनप्रतिनिधि गण को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया है। ताकि महुदी गांव में उत्पन्न हुए सांप्रदायिक तनाव को दूर कर विधि व्यवस्था सुदृढ़ किया जा सके। वहीं बैठक में हजारीबाग के सांसद मनीष जायसवाल के भी शामिल होने के भी संभावना व्यक्त की जा रही है। बताया जाता है कि महुदी रामनवमी जुलूस मार्ग की मांग को धरना में बैठने के पश्चात उत्पन्न हुए विवाद पर चर्चा की जाएगी और इसे दूर करने का विचार विमर्श किया जाएगा ताकि पूरे प्रखंड में आपसी सौहार्द सद्भावना बनी रहे। वही बताते चलें कि गुरुवार को बड़कागांव के सोनपुरा गांव आए झारखंड सरकार प्रतिपक्ष नेता अमर कुमार बाउरी ने भी उक्त बैठक को संज्ञान में लिया है। उन्होंने भी सोनपुरा में आयोजित कार्यक्रम में अपने संबोधन में कहा था, कि 21 जुलाई को रामनवमी जुलूस मार्ग के लिए लाइसेंस निर्गत करें। अन्यथा झारखंड में हमारी सरकार बनने के पश्चात 40 दिन के बाद महुदी में जुलूस निकाली जाएगी।

अंबा प्रसाद के प्रयास से चेपाखुर्द खेल ग्राउंड से हटाया गया बिजली का खंभा

बड़कागांव : बड़कागांव प्रखंड के ग्राम चेपाखुर्द के खेल मैदान में विगत कई वर्षों से बिजली का खंभा गड़ा हुआ था। जिसमे बिजली का तार नीचे झूला गया था, खिलाडियों को खेलने में काफी दिक्कत होती थी और कई बार खिलाड़ी खंभा से टकराकर घायल भी हो गए थे। इसकी सूचना विधायक अंबा प्रसाद को मिली, जिस पर त्वरित कार्रवाई करते हुए, बिजली विभाग द्वारा मैदान से बिजली खंभा हटाया गया। इस खेल मैदान में विधायक अंबा प्रसाद के द्वारा क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन भी किया जा रहा है। खेल मैदान से बिजली का खंभा हटाने के लिए विधायक अंबा प्रसाद के प्रति आभार व्यक्त किया गया। जिसमें मुख्य रूप से सुरेंद्र राम, विक्की करमाली, रागिब अफजल, सोनू, अमित, अभिजीत, पप्पू, जगलाल, तारकेश्वर, सद्दाम, बबन, बबलू व अन्य शामिल है।

मां विंध्यवासिनी बीएड कॉलेज में योग प्रतिभागियों का हुआ चयन

हजारीबाग : मां विंध्यवासिनी कॉलेज ऑफ एजुकेशन में आगामी 4 अगस्त 2024 को हजारीबाग योग संघ' द्वारा वनडे योगा कैंप के तहत जिला स्तरीय प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए के लिए मां विंध्यवासिनी कॉलेज ऑफ एजुकेशन के परिसर में प्रो. अविनाश कुमार तथा योग विशेषज्ञ विकास कुमार दास के नेतृत्व में महाविद्यालय के 77 प्रशिक्षुओं ने योगाभ्यास किया। प्राचार्य डॉक्टर चेतलाल प्रसाद, विभागाध्यक्ष, बी.एड. डॉक्टर तनुजा गुप्ता, डॉ वीरेंद्र चौरसिया, प्रो. जितेंद्र झा, डा. सुनील कुमार वर्मा, प्रो. शनिदेव कुमार, डॉ प्रियंका कुमारी, प्रो. अंशु रोजलीन लकड़ा, डॉ नीतू उपाध्याय, प्रो. सरिका मेहता, प्रो. राजेश कुमार, गुणवंती राजीव रंजन, अक्षय, मोहित गिरी, श्वेता, सुप्रिया, रेनू, सोनल, प्रेरणा, सुमन, पूजा अनीता, नुसरत आदि प्रमुख रहे।

कटकमसांडी में सांसद मनीष जायसवाल ने आरईओ की दो पथों का किया शिलान्यास

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

कटकमसांडी : हजारीबाग लोकसभा सांसद मनीष जायसवाल ने कटकमसांडी प्रखंड के ग्राम पंचायत कटकमसांडी में ग्रामीण कार्य विभाग के करीब 18.15 करोड़ रुपए की राशि के करीब 18.5 किमी की दो प्रमुख सड़कों का विधिवत शिलान्यास बतौर मुख्य अतिथि शिलापट्ट का अनावरण कर और नारियल फोड़कर किया। इन दो पथों में बसंतपुर से लखनू तक पथ का विशेष मरामत्ती निर्माण कार्य लंबाई (2.5 किलोमीटर)दूसरा बांझीय ढौठवा तक विशेष मरामत्ति निर्माण कार्य (16 किलोमीटर) शामिल है। इन दोनों पथों के निर्माण में पुलिया और गार्डवाल का भी निर्माण होगा। आरईओ से बनने वाले इन दोनों ग्रामीण पथों की गुणवत्ता पीडब्ल्यूडी सड़क के अनुरूप ही होगी। सड़क शिलान्यास से पूर्व सांसद मनीष जायसवाल का कटकमसांडी प्रखंड वासियों ने गाजे-बाजे और ढोल-ताशे के साथ फूल माला पहनाकर और पुष्पगुच्छ भेंटकर स्वागत किया। ग्राम वासियों ने उनके स्वागत में खूब नारे-जयकारे भी लगाए। इस दौरान ग्राम वासियों ने अपने अपने समस्या से भी संसद मनीष जायसवाल को अवगत कराया। सड़कों के शिलान्यास के उपरांत हजारीबाग सांसद मनीष जायसवाल का कटकमसांडी ग्राम वासियों ने स्वागत वा अभिनंदन किया। जहां उन्हें ग्रामीणों की ओर से अंग-वस्त्र व पुष्पगुच्छ भेंटकर एवं फूल माला पहनाकर सम्मान किया गया। मौके पर ग्रामीणों को संबोधित करते हुए सांसद मनीष जायसवाल ने कहा कि वर्तमान वर्ष विशेष मरम्मती कार्य का निर्माण हुआ है इस बार भी मेरे द्वारा कटकमसांडी प्रखंड क्षेत्र के सड़क के अनुशंसा किया गया है। जिसमें कई पंचायतों का मुख्य पथ भी शामिल है। उम्मीद है जल्द ही इसपर स्वीकृति भी मिलेगा और कार्य भी आरंभ हो जायेगा। और उन्होंने ने कहा कि पथों का शिलान्यास हुआ है वह ग्रामीणों की चिरलंबित मांग रही है।सांसद मनीष जायसवाल ने कहा कि सड़क निर्माण से न सिर्फ सड़कों का नेटवर्क मजबूत होता है बल्कि सड़क किनारे और आसपास के जमीन के दामों में भी वृद्धि होती है। उन्होंने कहा कि सामाजिक तौर पर हम क्षेत्र के सभी वर्ग और समाज के उत्थान को लेकर लगातार प्रयासरत हैं और आगे भी रहेंगे। सांसद मनीष जायसवाल ने यह भी कहा कि आपकी हर एक छोटे बड़े कार्यों में हमारी सहभागिता रहती है। उन्होंने सभी से अनुरोध किया कि आप अपनी जायज समस्या या कामों को लेकर हमें अवगत कराएं, हम समाधान के प्रति निश्चित रूप से कदम बढ़ाएंगे ।

संक्षिप्त खबरें

जलीय स्रोतों का अतिक्रमण रोके जिला प्रशासन, नहीं तो होगा ऊग्र आंदोलन

हजारीबाग : झारखंड कांग्रेस ओबीसी मोर्चा के स्टेट कोऑर्डिनेटर सुरजीत नागवाला ने हजारीबाग में हो रहे जलीय स्रोतों का अतिक्रमण, सरकारी जमीन पर हो रहे अतिक्रमण के खिलाफ सूबे के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन जी को पत्र लिखा है। साथ ही साथ इसकी कॉपी जिला की डीसी, अपर समाहर्ता हजारीबाग, अंचल अधिकारी सदर, हजारीबाग को भी दिया है और कहा है कि हजारीबाग में नदी नाला और तालाब का जिस तरह तेजी से अतिक्रमण हो रहा है वह किसी से छुपा हुआ नहीं है, चाहे वह विकास नगर का नाला हो, बुंदेल नगर का नाला हो, कृष्णपुरी तालाब हो, साकेत पुरी तालाब हो, कुम्हार टोली नाला हो, साथ ही साथ जितने भी सरकारी जमीन है सभी जगह पर अतिक्रमण तेजी से बढ़ रहा है और माफियाओं का मनोबल बढ़ा हुआ है विदित हो की बुंदेल नगर और विकास नगर का नाला हजारीबाग समाहरणालय के सामने पड़ता है और प्रशासन के नाक के नीचे लगातार दर्जनों मकान बनाए जा रहे हैं। जहां एक और न्यायालय का आदेश है की जलीय स्त्रोत का अतिक्रमण नहीं किया जाए वही हजारीबाग में तेजी से जमीन का अतिक्रमण किया जा रहा है और नदी नाला और तालाब को भरा जा रहा है। इसी मामले को लेकर पूर्व में भी अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल का आयोजन किया गया था जिसके पश्चात जिला प्रशासन ने कहा था कि जल्द ही इस पर कार्रवाई होगी लेकिन आज पिछले दो वर्षों में कोई कार्रवाई नहीं हुई है जिससे भूमाफियाओं का मनोबल और आसमान की तरफ चढ़ता जा रहा है, एक ओर जहां जलीय स्त्रोत का अतिक्रमण से वाटर लेवल नीचे हो रहा है वहीं दूसरे और थोड़ा सा भी बरसात होने पर पानी लोगों के घरों में घुस जाता है और स्थिति नारकीय हो जाती है। जहां एक और जिला प्रशासन छोटे-छोटे फुटपाथ दुकानदारों को हटा करके अतिक्रमण हटाने की बात कहती है। वहीं दूसरी ओर इन बड़े भूमाफियाओं को कहीं ना कहीं से संरक्षण प्राप्त होता है और उन पर कोई कार्रवाई नहीं हो पाती है इसलिए सभी तमाम पदाधिकारी लोगों को पत्र लिखकर आग्रह किया गया है कि अगर इस पर कार्रवाई नहीं की गई तो कांग्रेस ओबीसी मोर्चा के लोग बहुत ही उग्र आंदोलन करेंगे जिसकी सारी जवाबदेही जिला प्रशासन की होगी।

गोंदलपारा खनन परियोजना के लिए डीसी की अध्यक्षता में हुई बैठक

हजारीबाग : गोंदलपारा खनन परियोजना के लिए शुक्रवार को समाहरणालय में उपायुक्त नैंसी सहाय की अध्यक्षता में भूझअर्जन के प्रभावित परिवारों के पुनर्वासन और पुनरव्यवस्थापन के लिए बनी कमेटी की बैठक सकारात्मक तरीके से संपन्न हुई। इस बैठक में सांसद मनीष जायसवाल और बड़कागांव की विधायक अंबा प्रसाद भी मौजूद थी। बैठक में खनन परियोजना के लिए बनी पुनर्वासन और पुनर व्यवस्थापन समिति के सभी ग्यारह सदस्य मौजूद थे। बैठक के दौरान खनन परियोजना से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर विचारझ विमर्श किया गया, जिसमें राज्य सरकार को मिलने वाले राजस्व, देश में कोयले की जरूरत, प्रभावित परिवारों को मिलने वाले मुआवजे और रोजगार के साथ-साथ आधारभूत संरचना के विकास पर सकारात्मक चर्चा की गई।

पक्के मकान वाले लाभुकों से अबुआ आवास की राशि की होगी रिकवरी : सीमा कुमारी

चौपारण : चौपारण प्रखंड के झापा में शुक्रवार को बीडीओ सीमा कुमारी अबुआ आवास की जांच के लिए पहुंची। अबुआ आवास योजना के तहत पहली किस्त के तहत बन रहे आवास की जांच की। जिसमे दो लोगो का पक्का मकान पाया गया। जिसमे पहला मकान सुमनी देवी, पति घनश्याम साव, दूसरा अमिया देवी, पति स्व फागू साव का पाया गया। जांच के बाद बीडीओ सीमा कुमारी ने कहा कि पंचायत सचिव एवं मुखिया ने किस आधार पर इन्हें अबुआ आवास की स्वीकृति दिलाने का कार्य किया है और यदि उन्हें ये मिल चुकी है। तो यह रिकवरी पंचायत सचिव एवं मुखिया से की जाएगी। वही झापा मुखिया अन्नपूर्णा देवी के पति बिनोद सिंह ने कहा की अबुआ आवास योजना में मुखिया का कोई रोल नहीं है। अबुआ आवास का हमलोगों ने जो सूची दिया था उसमें सिर्फ झापा का नहीं बल्कि पूरे झारखंड की यही स्थिति है।

पंचायत सचिवों का एक दिवसीय प्रखंड स्तरीय धरना संपन्न

बड़कागांव : झारखंड राज्य पंचायत सचिव संघ के बैनर तले बड़कागांव प्रखंड के सभी पंचायत सचिव अपनी मांगों को लेकर एक दिवसीय धरना पर बैठे। इनका मुख्य मांग मूल पे ग्रेड 2400 दिया जाए, प्रखंड पंचायत राज पदाधिकारी के पद पर 25 प्रतिशत में शेष प्रोन्नति वरीयता के आधार पर दिया जाए, आरक्षित 25 प्रतिशत पद पर सीमित प्रतियोगिता परीक्षा तीन बार अवसर देते हुए रिक्त स्थान भरा जाए आदि है। बता दें कि जिला के सभी पंचायत सचिव 31 जुलाई को जिला मुख्यालय में धरना देंगे वहीं 21 अगस्त को राजभवन रांची में धरना प्रदर्शन दिया जाएगा। मामले को लेकर पंचायत सचिव मो हकीम मियां ने बताया कि हमलोगों को वरीयता के आधार पर जो पे ग्रेड मिलना चाहिए वो सरकार के द्वारा नहीं दिया जा रहा है, इसलिए अपनी मांगों को लेकर हमलोग धरना प्रदर्शन कर रहे हैं। धरना देने वालों में मुख्य रूप से जगन्नाथ सिंह यादव, मोहम्मद हकीम मियां, अशोक नारायण तिवारी, स्वाति कुमारी, खुशनारायण तिवारी, विशेश्वर मेहता, धनेश्वर महतो, जयप्रकाश पांडे, रंजू कुमारी, धीरज कुमार सिंह, गौतम कुमार, गोपाल कुमार, अरविंद कुमार, चाणक्य कुमार, मुकेश कुमार दास के अलावा कई लोग हैं।

कल मैराथन दौड़ का होगा आयोजन, 10 हजार महिलाएं-पुरुष एक साथ दौड़ते नजर आएंगे

हजारीबाग : भाजपा नेता प्रदीप प्रसाद के द्वारा उनके कार्यालय सभागार मे शुक्रवार को एक प्रेस वार्ता का आयोजन किया गया, प्रेस वार्ता का मंच संचालन मनोज श्रीवास्तव के द्वारा किया गया। प्रेस वार्ता में प्रदीप प्रसाद के साथ कई खेल प्रेमी तथा पर्यावरण प्रेमी गण मौजूद रहे। प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए प्रदीप प्रसाद ने कहा कि 5 जून से प्रारंभ हरियाली महोत्सव जिसका शुभारंभ सांसद मनीष जायसवाल के हाथों किया गया था एक लाख पौधों के साथ इस मुहिम को प्रारंभ किया गया था शुक्रवार तक 65 हजार के आंकड़ों को पार करते हुए नजर आ रही है इन आंकड़ों के बीच विभिन्न स्कूलों में विभिन्न कोचिंग संस्थानों में विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के साथ सदर विधानसभा क्षेत्र के हर प्रखंडों में पौधा का रोपण तथा पौधा का वितरण किया गया है जिसका परिणाम हम सबों को आज 65 हजार के साथ मिला है। हमारा लक्ष्य है एक लाख को पूरा करना। इस मुहिम के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी एक पेड़ मां के नाम लगाने का संदेश जन-जन को दिया है जिसे हरियाली महोत्सव मुहिम सफलता की ओर काफी अग्रेषित हुई है हम विशेष रूप इस नेक पहल के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी का आभार व्यक्त करते हैं पर्यावरण के प्रति उनकी यह पहल देश तथा समाज में एक नई कीर्तिमान को हासिल करता नजर आ रहा है।

तेज गति से आ रही स्विफ्ट ने दो ऑटो को लिया चपेट में, बड़ा हादसा टला

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बरही : हजारीबाग की ओर से तेज गति से आ रही स्विफ्ट कार संख्या बीआर 02बीपी 9845 एनएच 33 पर खड़ी एक ऑटो से टकरा गई। टक्कर इतना जबरदस्त था कि दुर्घटनाग्रस्त ऑटो अपने आगे खड़ी ऑटो से जोरदार टकराया। जिससे आगे खड़ी ऑटो की दिशा बदल गई। इस टक्कर में दोनो ऑटो के शीशा, बॉडी का कुछ हिस्सा सहित स्विफ्ट कार का आगे का भाग क्षतिग्रस्त हो गया। इस दुर्घटना में कार चालक रितेश कुमार पिता कपिलदेव प्रसाद और रामवतारा वर्मा पिता रामचंद्र वर्मा चोटिल हुए। जिनका अनुमंडलीय अस्पताल में प्राथमिक ईलाज कराया गया। कार में इन दोनो के अलावा ललन मेहता पिता रामचंद्र महतो उनका भतीजा छोटू और लाडो सवार थे। सभी चुरचू हजारीबाग से मदनपुर औरंगाबाद जा रहे थे। इसी क्रम में यह घटना घटी। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार कार काफी तेज गति से सड़क के किनारे खड़ी ऑटो से टकराई थी। ऑटो मंडल पासवान और शिवा निषाद की है। दुर्घटना की जानकारी होते ही बरही पुलिस घटना स्थल पर पहुंचकर घायलों को अस्पताल व दुर्घटनाग्रस्त वाहन को थाना ले गई।

राजस्व कर्मचारी और उनके सहयोगी को एसीबी ने 40 हजार रुपये घूस लेते किया गिरफ्तार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बरही : अब्दुल कलाम आजाद चिल्ड्रन पार्क में सहायक अध्यापक संघ की एक महत्वपूर्ण बैठक हुई। जिसमे 20 जुलाई को मुख्यमंत्री आवास घेराव के लिए रांची कूच कार्यक्रम पर चर्चा हुई। उक्त जानकारी प्रखंड सचिव मनोज घोष ने दी। उन्होंने बताया कि सीएम हेमंत सोरेन ने सहायक अध्यापकों के साथ वादा खिलाफी की है। वेतनमान, नियमावाली, पीएफ, बीमा आदि मांगो पर अब तक कोई ठोस निर्णय नहीं लिया गया। इससे राज्य के सहायक अध्यापकों में हेमंत सरकार के खिलाफ रोष है। वायदा खिलाफी और झूठे आश्वासन को लेकर प्रदेश के 65000 सहायक अध्यापक 20 जुलाई को सीएम आवास घेराव के लिए रांची कूच करेगे। इस आंदोलन को धार दार बनाने के लिए बरही प्रखंड से 200 सहायक अध्यापकों की टोलियां 20 जुलाई को प्रखंड मैदान से रांची के लिए कूच करेगी। इसी महत्वपूर्ण मुद्दों को लेकर गुरुवार को बरही के चिल्ड्रेन पार्क में दीपक यादव की अध्यक्षता व रंजीत कुमार सिंह के संचालन में बैठक किया। सबों ने एक सुर में संगठन के निर्णय का साथ देते हुए राज्य सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की और कार्यक्रम सफल बनाने का निर्णय लिया। बैठक में संतोष कुमार भुइयां, पुष्पा कुमारी, रिंकू देवी, ललिता कुमारी, शीला कुमारी, कीर्ति कुमारी, किशोर कुमार राम, चंद्र देव यादव, गोविंद महतो धनेश्वर कुमार, मनोज ठाकुर, मो सनोवर, तुफैल आजाद, मनोहर पासवान आदि दर्जनों सहायक अध्यापक मौजूद थे।

चौपारण में रोड किनारे खड़े युवक पर बालू लदा हाइवा पलटा, मौत

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

चौपारण : प्रखंड पंचायत पाण्डेयबारा चौक में बृहस्पतिवार को दिल दहला देने वाली घटना घटी। प्राप्त जानकारी के अनुसार अवैध बालू से लदा हाईवा जिसकी संख्या जेएच 02बीके 3929 जो रोड के गलत साइड से चलकर चौपारण से बरही की ओर जा रही थी। इसी बीच पाण्डेयबारा चौक के पास से अचानक तेज गति में सेलहरा रोड के तरफ हाईवा मुड़ना चाहा। तेज रफ्तार में मुड़ने के करण हाईवा अनियंत्रित होकर रोड के दाहिने तरफ पलट गया। जिससे रोड के किनारे अपने बाइक जेएच 02बीजी 9112 पर बैठे युवक को अपने चपेट में लिया। युवक की पहचान केवला निवासी फरदीन खान, पिता आबिद खान के रूप में हुई है। घटना के बाद आक्रोशित लोगों ने सड़क जाम कर दिया। जिसके बाद थाना प्रभारी दीपक कुमार सिंह अपने दलबल के साथ पहुंचकर लोगो को समझकर जाम को हटवाया। वही अंचल अधिकारी संजय यादव ने मृतक परिवार को पारिवारिक लाभ 25 हजार एवं मृतक का मुआवजा दो लाख दिलवाने का आश्वासन दिया।

मृतक परिवार को मुआवजा में सरकारी नौकरी मिले : जीतू यादव

पाण्डेयबारा समाजसेवी जीतू यादव ने कहा रोड किनारे खड़े युवक का बेवजह हाईवे से दबकर मृत्यु हो जाना दुर्भाग्यपूर्ण है। पूरे चौपारण क्षेत्र में दुर्घटना आए दिन होती रहती है। सिंघरावा में दुर्घटना के बाद दूसरे दिन ही पाण्डेयबारा में इस तरह का घटना होना कहीं ना कहीं लोगों को भयभीत कर रहा है। आखिर इन बेगुनाहों के मौत का जिम्मेदार कौन है। ग्रामीण हमेशा एनएचएआई की लापरवाही बताते हैं पर एनएचएआई के कानों पर जूं तक नहीं रेंगती है। यादव ने कहा मृतक के परिवारों को पैसे का मुआवजा न देकर सरकारी या निजी नौकरियां दी जाए। चौपारण दुर्घटना से कब मुक्त हो पाएगी। कब तक राज्य सरकार व केंद्र सरकार इसपर कार्यवाही करेगी। आम नागरिक सदमे में है उनका कहना है। जिस तरह से घटनाएं सड़क पर बढ़ रही है कल होकर हम भी इसका शिकार ना हो जाए।

मैजिक वाहन ने ट्रक में मारी टक्कर, दर्जनों लोग घायल

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बरही : बरही थाना क्षेत्र अंतर्गत करसो में टाटा मैजिक ने ट्रक में पीछे से जाकर टक्कर मार दिया। जिससे टाटा मैजिक पर सवार दर्जनों लोग गम्भीर रूप से घायल हो गए। घायलो में सीमा देवी, बलवीर प्रसाद अकोनानगर नवादा उम्र 25 वर्ष, सकुंतला देवी पति संजय चौधरी उम्र 36 वर्ष, बलवीर प्रसाद पिता दशरथ प्रसाद 30 वर्ष, किरण देवी पति रविंद्र चौहान 30 वर्ष, देवनंद चौहान उम्र 50 वर्ष, संजय चौहान पिता सीताराम चौहान उम्र 38 वर्ष, श्यामदेव चौहान पिता दसाई चौहान, देवंती देवी पति भुनेश्वर रविदास, श्रीकांत कुमार पिता प्रकाश प्रसाद उमर भूतनाजे निवासी, शिवात्री देवी उम्र 35 पति गुड्डू चौहान सहित अन्य दर्जनों लोग गम्भीर रूप से घायल सभी नवादा जिला के रहने वाले है। सभी का प्राथमिक उपचार बरही अनुमंडलीय अस्पताल में किया गया। कई लोगों को गंभीरावस्था में हजारीबाग रेफर कर दिया गया।

भाजपा नेत्री शेफाली गुप्ता के प्रयास से हजारीबाग के लोगों को मिला देवघर के लिए स्पेशल ट्रेन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : हजारीबाग कैनरी इन होटल में भाजपा नेत्री शेफाली गुप्ता ने पत्रकार बंधुओं के समक्ष प्रेस कांफ्रेंस किया। सावन महीने में हजारीबाग से सुलतानगंज के लिए स्पेशल ट्रेन चलने की खुशखबरी दिया। ज्ञात हो कि लगभग एक महीने से सावन महीने में बाबा भोलेनाथ के दर्शन के लिए हजारीबाग से सुलतानगंज के लिए स्पेशल ट्रेन चलाने की मांग कर रहे थे। भाजपा नेत्री शेफाली गुप्ता ने सावन महीने में स्पेशल ट्रेन चलाने को लेकर संज्ञान लिया तथा हजारीबाग सांसद मनीष जायसवाल से मुलाकात किया एवं डीआरएम के माध्यम से केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव को

▸ बाबा भोलेनाथ के श्रद्धालुओं एवं कांवरियों को बाबा का दर्शन करने में होगी काफी सहूलियत : शेफाली गुप्ता

सावन महीने में शिवभक्तों की जनभावनाओं को ख्याल रखकर हजारीबाग से सुलतानगंज के लिए स्पेशल ट्रेन चलाने की मांग रखी थी। जिसकी स्वीकृति मिल गई है तथा स्थायी रूप से हजारीबाग से सुलतानगंज तक जाने आने की ट्रेन मिलेगी। भाजपा नेत्री शेफाली गुप्ता ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर बताया कि सावन महीने में स्पेशल ट्रेन मिला है। स्पेशल ट्रेन से जाने के लिए रविवार एवं मंगलवार को

रांची से रात्री 09:35 बजे आरंभ होगी। रविवार एवं मंगलवार को हजारीबाग से रात 01:15 बजे आरंभ होगी। जिसका रूट चार्ट रांची, बरकाकाना, हजारीबाग, कोडरमा, गया, सुल्तांगज भागलपुर है। सुल्तानगंज में पहुंचने का समय सुबह 09:47 बजे है। उन्होंने बताया कि स्पेशल ट्रेन से लौटने के लिए सोमवार तथा बुधवार को भागलपुर से दोपहर 12:20 बजे से आरंभ होगी। लौटने के लिए सोमवार तथा बुधवार को देवघर से दोपहर 03:10 बजे से आरंभ होगी। हजारीबाग रात समय 10:05 बजे पहुंचेगी। जिसका रूट चार्ट भागलपुर, देवघर, जसीडीह, मधुपुर, धनबाद, हजारीबाग, बडकाकाना तथा रांची है। मौके पर भाजपा नेत्री शेफाली गुप्ता ने कहा कि सावन महीने में हजारीबाग, राँची, बड़काकाना एवं कोडरमा के श्रद्धालुओं व कांवरिया के लिए बहुत बड़ी खुशखबरी है। अस्थायी रूप सिर्फ सावन महीने में स्पेशल ट्रेन हजारीबाग से सुलतानगंज जाने आने के लिए मिला है। मेरी आगे प्रयास रहेगी कि स्थायी रूप से हजारीबाग तथा सुलतानगंज जाने आने के ट्रेन मिले। उन्होंने कहा कि इससे बाबा भोलेनाथ के श्रद्धालुओं एवं कांवरिया को बाबा का दर्शन करने में काफी सहुलियत होगा तथा आवागमन भी सुलभ होगा।

एक नजर

माकपा नेता सुभाष मुंडा हत्याकांड के आरोपी की जमानत याचिका खारिज

रांची : न्यायायुक्त दिवाकर पांडे की कोर्ट ने शुक्रवार को माकपा नेता सुभाष मुंडा हत्याकांड के आरोपित विनोद कुमार की जमानत याचिका खारिज कर दी। सुभाष मुंडा की हत्या 26 जुलाई, 2023 को हुई थी। सुभाष मुंडा दलादली स्थित दफ्तर में कुछ लोगों के साथ बैठे थे। इसी दौरान घात लगाए अपराधियों ने गोली मारकर सुभाष की हत्या कर दी थी। विनोद कुमार कई सालों से सुभाष मुंडा का करीबी था। विनोद कुमार के नाम पर सुभाष मुंडा ने कई जमीन ले रखी थी। नगड़ी के एक जमीन को लेकर सुभाष मुंडा और छोटू खलखो की बीच विवाद चल रहा था लेकिन पैसे की लालच में छोटू खलखो से विनोद कुमार मिल गया था और साजिश रचकर शूटरों से सुभाष मुंडा की हत्या करवा दी थी। हत्याकांड को लेकर एसआईटी गठित किया गया था। मामले में पुलिस ने मुख्य साजिशकर्ता छोटू खलखो, विनोद कुमार और बबलू पासवान सहित अन्य को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया था।

विधानसभा के मॉनसून सत्र में प्रथम अनुपूरक बजट के लिए मांगा गया प्रस्ताव

रांची : झारखंड विधानसभा का आगामी मॉनसून सत्र 26 जुलाई से दो अगस्त तक आहूत है। इसको ध्यान में रखते हुए प्रथम अनुपूरक व्यय विवरणी तैयार की जा रही है। वित्त विभाग ने इस संबंध में सभी विभागों के अपर मुख्य सचिव, प्रधान सचिव, सचिव व विभागध्यक्ष को पत्र भी लिखा है और प्रथम अनुपूरक के लिए वांछित स्थापना, योजना संबंधी प्रस्ताव हर हाल में 23 जुलाई तक समर्पित करने को कहा है। विभागीय मंत्री के अनुमोदन के बाद प्रस्ताव ऑनलाइन ही स्वीकार किए जायेंगे। विभागों को कहा गया है कि केंद्र प्रायोजित योजना, केंद्रीय सेक्टर योजना की हिस्सेदारी की परिवर्तन से जुड़े प्रस्ताव, केंद्र व राज्यांश के हिस्सेदारी पैटर्न के अनुसार प्रस्ताव, वित्त वर्ष 2024-25 के मुख्य बजट के किसी त्रुटिपूर्ण बजटीय उपबंध में सुधार के प्रस्ताव, नया बजटीय उपबंध संबंधी प्रस्ताव, स्थापना व्यय इत्यादि के प्रस्ताव भी मांगे गये हैं।

राज्य अतिथिशाला के 100 मीटर के दायरे में निषेधाज्ञा लागू

रांची : रांची के मोरहाबादी स्थित राज्य अतिथिशाला के आस पास धरना, प्रदर्शन, जुलूस, रैली किए जाने की संभावना है। हाल के दिनों में पूर्व में निर्धारित स्थान जाकिर हुसैन पार्क की जगह यह कार्यक्रम अन्य जगहों पर हो रहे हैं। इस प्रकार के कार्यक्रमों से सरकारी काम-काज में व्यवधान उत्पन्न होने के साथ-साथ यातायात व्यवस्था बाधित होने एवं विधि-व्यवस्था की समस्या उत्पन्न होने तथा लोक परिशांति भंग होने की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता है। इसे लेकर शुक्रवार को अनुमंडल दण्डाधिकारी, सदर उत्कर्ष कुमार बिएनएसएस की धारा-163 के तहत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए मोरहाबादी स्थित राज्य अतिथिशाला के चाहरदीवारी से 100 मीटर की परिधि में (डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय को छोडकर) निषेधाज्ञा जारी किया है। यह निषेधाज्ञा 19 जुलाई के पूर्वाह्न नौ बजे से रात 12 बजे तक के लिए लागू रहेगा। जारी निषेधाज्ञा के दौरान बिना सक्षम प्राधिकार के पुवार्नुमति के किसी प्रकार के धरना, प्रदर्शन, घेराव, जुलूस, रैली या आमसभा का आयोजन करने पर रोक रहेगी। साथ ही किसी प्रकार के अस्त्र-शस्त्र, जैसे-बंदुक, राईफल, रिवाल्वर, पिस्टल, बम, बारूद, लाठी-डंडा, तीर-धनुष, गड़ासा-भाला आदि लेकर निकलने पर पाबंदी रहेगी। इसके अलावा ध्वनि विस्तारक यंत्र का व्यवहार करने पर भी रोक रहेगी।

ईडी के स्पेशल डायरेक्टर बीएल मरांडी अमित शाह से मिलने वाले दागियों की सूची जारी करें : सुप्रियो

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झामुमो ने देश के गृह मंत्री के झारखंड दौरे का स्वागत करते हुए बाबूलाल मरांडी और भाजपा पर तीखा प्रहार किया है । कहा कि झारखंड में ईडी की कार्रवाई चिन्हित करके होती है। जो भाजपा के साथ हैं, भाजपा के हैं या भाजपा समर्थक हैं, उनके खिलाफ सबूत रहने के बावजूद कोई कारवाई होती नहीं है। जबकि भाजपा के खिलाफत करने वालों के खिलाफ ईडी चुन-चुन करके कार्रवाई करती है। लोकसभा चुनाव के पूर्व झारखंड और देश ने दो तरह की तस्वीर देखी। झारखंड के सीएम हेमंत सोरेन, दिल्ली के सीएम समेत ऐसे कई भाजपा और मोदी जी के खिलाफत करने वालों को जेल में डाल दिया गया। ऐसा इसलिए है कि झारखंड में ईडी के सभी अफसरों के अतिरिक्त एक और ईडी के स्पेशल डायरेक्टर हैं, जिनका नाम है बीएल मरांडी (बाबूलाल मरांडी)। वे झारखंड में तय करते हैं कि किसके खिलाफ ईडी की कारवाई करनी है और किसके खिलाफ नहीं है। लोकसभा चुनाव के बीचो-बीच ये स्पेशल डायरेक्टर बीएल मरांडी जमीन घोटाले में आरोपी और बेल पर चल रहे विष्णु अग्रवाल को वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण से मिलवाया। इतना ही नहीं अभी ईडी के नोटिस पर नोटिस होने के बाद भी उसके समक्ष उपस्थित होने नहीं होने वाले पूर्व पत्रकार और जमीन कारोबारी कमलेश को भी वित्त मंत्री से यह ईडी के स्पेशल डायरेक्टर बीएल मरांडी ने मिलवाया। यह सभी जानते हैं कि ईडी वित्त मंत्रालय के अधीन आता है। इसलिए अब 22 जुलाई को देश के गृह मंत्री आ रहे हैं, जो पीएम के स्पेशल एफेयरर्स कैबिनेट के मेंबर भी हैं। यह स्पेशल डायरेक्टर बीएल मरांडी गृह मंत्री से किन-किन दागियों और आरोपियों से मिलवाएंगे। किन-किन घुसपैठियों से मिलवाएंगे, उसका नाम अगर आज ही सार्वजनिक हो जाता तो बेहतर रहता। क्योंकि खुद भाजपा अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी और नेता प्रतिपक्ष अपनी पार्टी में घुसपैठी हैं। यह बातें झामुमो के केंद्रीय महासचिव सह प्रवक्ता सुप्रियो भट्टाचार्य ने वित्त मंत्री के साथ दोनो आरोपियों का फोटो जारी करते हुए कही। इन दोनों फोटो में मरांडी भी मौजूद हैं। भट्टाचार्य ने कहा कि असम सरकार के पुलिस विभाग के डीजीपी द्वारा एक पत्र झारखंड सरकार को आया है। यह पत्र अब झामुमो के लिए एक दस्तावेज बन गया है। इस पत्र में कहा गया है कि असम के सीएम हिमंता विस्व सरमा असम के मुख्यमंत्री के साथ झारखंड में भाजपा के सह विधानसभा चुनाव प्रभारी हैं। जिसे जेड प्लस की सुरक्षा प्रदान है। वे फिलहाल झारखंड आते-जाते रहेंगे।उन्हें गृह मंत्रालय के आदेश से यह सुरक्षा प्रदान की गयी है। इसलिए अगर झारखंड सरकार को दिक्कत है तो उनके आने-जाने और सुरक्षा पर किया जा रहा व्यय असम सरकार उठाने को तैयार है। यह पत्र अपने आप में कई प्रश्न को जन्म दे रहा है। क्या यह मान लिया जाए कि चुनावी बांड के बाद यह सरकारी धन के दुरूपयोग का बड़ा मामला बनेगा। क्या हिमंता विस्व सरमा जो एक मुख्यमंत्री रहते हुए झारखंड में भाजपा संगठन के लिए काम करेंगे और उसका खर्च असम के ट्रेजरी से भुगतान होगा।

संक्षिप्त खबरें

झारखंड हाई कोर्ट के चीफ जस्टिस बीआर सारंगी को एडवोकेट एसोसिएशन ने दी विदाई

रांची : झारखंड हाई कोर्ट के चीफ जस्टिस डॉ. बीआर सारंगी के सम्मान में शुक्रवार को हाई कोर्ट परिसर में हाई कोर्ट एडवोकेट एसोसिएशन ने फुलकोर्ट फेयरवेल रिफरेंस का आयोजन किया। इस दौरान महाधिवक्ता राजीव रंजन, हाई कोर्ट एडवोकेट एसोसिएशन की अध्यक्ष रितु कुमार, झारखंड स्टेट बार काउंसिल के अध्यक्ष राजेंद्र कृष्ण ने चीफ जस्टिस की जीवनी एवं उनके कार्यों पर प्रकाश डाला। इससे पहले हाई कोर्ट के जस्टिस सुजीत नारायण प्रसाद ने चीफ जस्टिस बीआर सारंगी द्वारा न्यायिक सेवा में दिए गए योगदान एवं कार्यों की विस्तृत से जानकारी दी। इस अवसर पर हाई कोर्ट के सभी जज, वरीय अधिवक्ता, हाई कोर्ट के रजिस्ट्रार जनरल मो. शकीर, हाई कोर्ट रजिस्ट्री के अधिकारी एवं कर्मचारी, कई अधिवक्ता उपस्थित थे। चीफ जस्टिस के विदाई पर यह सामान समारोह आयोजित किया गया। चीफ जस्टिस बीआर सारंगी का अंतिम कार्य दिवस शुक्रवार को है। फुलकोर्ट फेयरवेल रिफरेंस का आयोजन कोर्ट नंबर एक में किया गया। जस्टिस बीआर सारंगी ने झारखंड हाई कोर्ट के 15वें चीफ जस्टिस के रूप में बीते पांच जुलाई को पद एवं गोपनीयता की शपथ ली थी। विदाई समारोह में हाई कोर्ट के सभी जस्टिस, महाधिवक्ता राजीव रंजन, स्टेट बार काउंसिल के अध्यक्ष, हाई कोर्ट के वरीय अधिवक्ता, काउंसिल के सदस्य, एडवोकेट एसोसिएशन की अध्यक्ष ऋतु कुमार, महासचिव नवीन कुमार व अन्य कार्यकारिणी सदस्य समेत अपर महाधिवक्ता और हाई कोर्ट के सभी अधिवक्ता मौजूद रहे। चीफ जस्टिस ने वकीलों द्वारा उनकी विदाई में दिए गए सम्मान पर आभार जताया। साथ ही उन्होंने अधीनस्थ सभी कर्मचारियों और अधिकारियों के प्रति आभार जताते हुए कहा कि झारखंड में किया गया कार्य उन्हें हमेशा याद रहेगा।

सहायक पुलिस बल पर लाठीचार्ज करना सरकार को भारी पड़ेगा : विजय शंकर नायक

रांची : उपरोक्त बातें आज संपूर्ण भारत क्रांति पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव सह झारखंड छत्तीसगढ़ प्रभारी विजय शंकर नायक ने सहायक पुलिस बल के जवानों के द्वारा शांति पूर्वक ढंग से सीएम आवास के घेराव कार्यक्रम मे बर्बरता पूर्वक पुलिस के द्वारा लाठीचार्ज किए जाने पर आज अपनी प्रतिक्रिया में उक्त बातें कही । इन्होंने साफ शब्दों में कहा की हेमंत सोरेन की सरकार आंदोलन को पुलिस के बल पर दबाना चाहती है। जिसका ही परिणाम है कि आज आदिवासी मूलवासी सहायक पुलिस बल के युवाओं पर बर्बरता पूर्वक लाठी चलाने का काम किया इससे कई लोगों के सिर फूटे है एवं गंभीर चोटे आई है जिसकी संपूर्ण भारत क्रांति पार्टी कड़े शब्दों में इसकी निंदा करती है। नायक ने आगे कहा की सतरह दिनों से अधिक दिनो से अपनी मांगों को लेकर प्रदर्शन कर रहे। स्मरण हो कि वेतनवृद्धि सहित 8 सूत्री मांग कर रहे सहायक पुलिसकर्मी के सब्र का बांध टूट गया जब राज्य के मुख्यमंत्री आज असंवेदनशील हो गए और उनके जायज मांगों पर विचार तक नहीं किए जाने पर शुक्रवार को सीएम आवास को घेरने जा रहे सहायक पुलिस कर्मी पर पुलिस ने की जमकर लाठीचार्ज, जिससे कई लोगो के सिर फटे और कई लोग घायल हुए है।

एसीबी ने रिश्वत लेते लोहरदगा के आपदा प्रबंधन पदाधिकारी सहित दो को किया गिरफ्तार

रांची : भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एसीबी) की रांची टीम ने लोहरदगा जिले के आपदा प्रबंधन पदाधिकारी विभाकर कुमार और उनके सहयोगी डॉ अभिराज राणा को 15 हजार रुपये रिश्वत लेते गिरफ्तार किया है। दोनों को शहरी क्षेत्र के वरदान हॉस्पिटल से गिरफ्तार किया गया है। एसीबी मुख्यालय के अनुसार लोहरदगा के किस्को थाना निवासी नीलम कुमारी ने ब्यूरो को लिखित आवेदन दिया था कि 19 अप्रैल, 2023 को उनके पुत्र श्रीआंस लोहरा की गांव के तालाब में डूबने से मौत हो गई थी। इस संबंध में आपदा प्रबंधन विभाग ने चार लाख रुपये मुआवजा आंवटित किया। मुआवजे की राशि रिलीज करने के एवज में आपदा प्रबंधन पदाधिकारी विभाकर कुमार ने 50 हजार रुपये रिश्वत की मांग की। प्रथम किस्त के रूप में 15 हजार रुपये रिश्वत लेते विभाकर कुमार और उनके सहयोगी डॉ अभिराज राणा को गिरफ्तार किया गया। डॉ अभिराज राणा वरदान हॉस्पिटल के संचालक के छोटे भाई हैं। उन्हें एसीबी ने सहयोग करने के मामले में गिरफ्तार किया है।

एआईबीपीएआरसी ने 100 किसानों के बीच फलदार पौधों का किया वितरण

रांची : आल इंडिया बैंक पेंशनर्स एंड रिटीरीज कन्फेडरेशन (एआईबीपीएआरसी) की झारखंड इकाई ने शुक्रवार को बैंक राष्ट्रीयकरण दिवस पर नामकुम के चेने गांव में 100 किसानों के बीच फलदार पौधों का वितरण किया। इनमें आम, कटहल और अमरूद के पौधे दिए गए। साथ ही स्कूल में वर्ग एक से पंचम वर्ग तक के अध्यनरत 32 छात्रों के बीच एक-एक स्कूल बैग, पेंसिल और कॉपी वितरित किया गया। गांव के दस बुजुर्ग को साड़ी एवं धोती भी बांटा। कार्यक्रम में 50 संगठन के सदस्यों ने योगदान दिया। दूसरी ओर बैंक, होटल ग्रीन पार्क के सभाकक्ष में आमसभा का आयोजन किया गया। इसमें हजारीबाग जिले के विनोबा भावे विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग के पूर्व विभाध्यक्ष सजल मुखर्जी उपस्थित थे। उन्होंने देश की अर्थव्यस्था के विकास में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की भूमिका पर विचार व्यक्त किए। उन्होंने सुदूर गांव में सार्वजनिक बैंको के जरिए प्रदत सेवाओं की सराहना भी की। उन्होंने सरकार की नीतियों, जिसमें निजीकरण के प्रयासों के बारे भी सजग और सावधान रहने की बात कही। संगठन के सदस्यों ने ऐसे किसी भी आंदोलन जो बैंक कर्मचारियों के द्वारा चलाए जाने वाले कार्यक्रम जो सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के निजीकरण के प्रयास के विरुद्ध होगा, समर्पण के साथ न्योछावर के लिए संकल्प भी लिया। इस अवसर पर रामबलि राम, कपिल कुमार सहित अन्य सदस्य मौजूद थे।

सैनिक मार्केट की दुकानें खाली करने के आदेश पर हाई कोर्ट की रोक

रांची: झारखंड हाईकोर्ट ने रांची जिला प्रशासन द्वारा मेन रोड स्थित सैनिक मार्केट की दुकानों को खाली कराये जाने के आदेश पर रोक लगा दी है इस मामले की सुनवाई हाईकोर्ट के न्यायाधीश जस्टिस संजय कुमार द्विवेदी की कोर्ट में हुई। दरअसल जिला प्रशासन ने सैनिक मार्केट के कई दुकानदारों को दुकानें खाली करने का आदेश दिया था। जिला प्रशासन के इस आदेश के खिलाफ राम नथुन साह और अन्य पूर्व सैनिकों ने हाईकोर्ट में याचिका दाखिल की थी। प्रार्थियों की ओर से अधिवक्ता नवीन कुमार ने बहस की।

मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा के झारखंड दौरे पर सुरक्षा खर्च का भुगतान करेगी असम सरकार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड विधानसभा के आगामी चुनाव के मद्देनजर भाजपा ने तैयारी शुरू कर दी है। इसको लेकर असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा का लगातार दौरा हो रहा है। उन्हें पार्टी ने राज्य का चुनाव सह प्रभारी बनाया है। इस बीच उनके प्रोटोकॉल पर आ रहे खर्च का हवाला देकर झामुमो ने सवाल उठाया था। खुद हिमंत बिस्वा सरमा ने पिछले दिनों कहा था कि पार्टी की नई जिम्मेदारी की वजह से उन्हें बार-बार झारखंड आना पड़ेगा। इसलिए असम की सरकार उनकी सुरक्षा पर होने वाला सारा खर्च वहन करेगी। उनकी इस घोषणा के अगले ही दिन असम के एडीजी हिरेन नाथ ने झारखंड के डीजीपी अजय कुमार सिंह को पत्र लिखकर पूरे मामले से अवगत कराया है। झारखंड के डीजीपी अजय कुमार सिंह को लिखे पत्र में असम के एडीजी ने कहा है कि असम के मुख्यमंत्री को भाजपा ने विधानसभा चुनाव का सह प्रभारी बनाया है। चुनावी कार्यों की वजह से उन्हें झारखंड का दौरा करना पड़ रहा है। मुख्यमंत्री को 10 अक्टूबर, 2022 से जेड प्लस सुरक्षा प्रदान किया गया है। देश में वह कहीं भी जाते हैं तो उन्हें यह सुरक्षा मुहैया करानी पड़ती है। पत्र में कहा गया है कि मुख्यमंत्री हिमंत की सुरक्षा में जो भी खर्च आ रहा है, उसका बिल भेज दिया जाए। असम सरकार उसका भुगतान करेगी। हिमंता बिस्वा सरमा ने कहा था कि झारखंड भाजपा के चुनाव सह प्रभारी बनाए जाने के बाद पहले ही दिन यहां आने के क्रम में प्रोटोकॉल नहीं देने का आग्रह किया गया था। इसके बावजूद राज्य सरकार द्वारा दिया जाता रहा। उन्होंने जेएमएम द्वारा प्रोटोकॉल पर होने वाले खर्च को लेकर नाराजगी जताए जाने पर कड़े शब्दों में निंदा करते हुए हुए कहा है कि राजनीति का स्तर इस तरह से नीचे चला जाएगा मुझे समझ में नहीं था।

पूर्व मंत्री आलमगीर आलम की जमानत याचिका पर जवाब के लिए ईडी ने मांगा समय

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : टेंडर कमीशन मामले में पूर्व मंत्री आलमगीर आलम की जमानत याचिका पर शुक्रवार को धन-शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) के विशेष न्यायाधीश पीके शर्मा की अदालत में सुनवाई हुई। मामले में ईडी की ओर से जवाब दाखिल करने के लिए कोर्ट से समय की मांग की गई। कोर्ट ने ईडी के आग्रह को स्वीकार करते हुए मामले के अगली सुनवाई की तिथि 27 जुलाई निर्धारित की है। टेंडर कमीशन से प्राप्त बड़ी रकम का मनी लॉड्रिंग करने के आरोप में पूर्व मंत्री आलमगीर आलम जेल में बंद हैं। आलमगीर आलम के गिरफ्तारी के 64 दिनों बाद चार्जशीट दाखिल हुई थी, उसके बाद उन्होंने जमानत की गुहार लगायी है। ईडी ने उनको 15 मई को गिरफ्तार किया था। तब से वह जेल में हैं। यह गिरफ्तारी उनके पीएस संजीव कुमार लाल एवं उसका नौकर जहांगीर आलम के यहां से मिले 32.30 करोड़ रुपये नकदी बरामद होने के मामले में किया गया है। गिरफ्तारी के बाद ईडी ने पुलिस रिमांड पर लेकर लगातार 14 दिनों तक पूछताछ की थी। इस मामले में इडी ने चार जुलाई को चार्जशीट दाखिल की है। इसी मामले में ग्रामीण विकास विभाग के निलंबित चीफ इंजीनियर वीरेंद्र राम सहित नौ आरोपित जेल में हैं।

झारखंड हाई कोर्ट में हाजिर हुए गढ़वा पलामू और लातेहार के उपायुक्त

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड हाई कोर्ट में पलामू, गढ़वा और लातेहार जिले के उपायुक्त सशरीर उपस्थित हुए। पलामू, गढ़वा और लातेहार जिले में 10 ग्राम सेविकाओं की नियुक्ति को 24 वर्ष बाद रद्द कर दिया गया था, जिसके बाद सभी ग्राम सेविकाओं ने नियुक्ति रद्द करने के खिलाफ और बकाया वेतन एवं रिटायरमेंट बेनिफिट की मांग को लेकर हाई कोर्ट का दरवाजा खटखटाया। इस मामले की सुनवाई हाई कोर्ट के जस्टिस डॉ. एसएन पाठक की कोर्ट में हुई। झारखंड हाई कोर्ट ने वर्ष 2023 में इनकी याचिका स्वीकार करते हुए लंबित वेतन का भुगतान करने और रिटायरमेंट बेनिफिट देने का निर्देश तीनों जिलों के डीसी को दिया था लेकिन अब तक इस आदेश का अनुपालन नहीं हुआ। इसपर नाराजगी जताते हुए अदालत ने इन जिलों के डीसी को उपस्थित होने का निर्देश दिया था। तीनों जिलो के डीसी अदालत में शुक्रवार को उपस्थित हुए। उन्होंने कोर्ट को बताया कि दो सप्ताह में अदालत के आदेश का अनुपालन कर दिया जाएगा। याचिकाकर्ता की ओर से अधिवक्ता मनोज चौबे ने बहस की।

परीक्षा में गड़बड़ी की सीबीआई जांच की मांग को लेकर भाजयुमो ने राज्यपाल को सौंपा ज्ञापन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : राज्यपाल सी.पी. राधाकृष्णन से आज भारतीय जनता युवा मोर्चा, झारखण्ड प्रदेश का एक शिष्टमंडल प्रदेश अध्यक्ष शशांक राज के नेतृत्व में भेंट कर राज्य में आयोजित जेएसएससी-पीजीटी परीक्षा में अनियमितता की ओर ध्यान आकृष्ट कराने हेतु मिला और इस शिष्टमंडल ने परीक्षा में हुई गड़बड़ियों इससे जुड़े जैसे ब्लैक लिस्टेड संस्थानों द्वारा परीक्षा करवाने 5 सेंटर से लगभग 70 प्रतिशत परीक्षार्थी उत्तीर्ण होते हैं तो यह अपने आप में संदेह का सबसे बड़ा कारण है । 12 जून को इन संस्थाओं को ब्लैकलिस्टेड किया जाता है और 16 जून को इन्ही संस्थाओं से परिणाम मांगा जाता है। तो यह पूरे तरीके से जांच का विषय बन जाता है । प्रतिनिधि मंडल ने माननीय राज्यपाल जी को इस परीक्षा में हुई गड़बड़ी से जुड़े हुए साक्ष्य को भी देने का काम किया और इसकी जांच कराने हेतु बात कही, प्रतिनिधि मंडल में प्रदेश महामंत्री रुपेश सिन्हा, प्रदेश उपाध्यक्ष सत्यदेव मुंडा, राँची महानगर अध्यक्ष रोमित नारायण सिंह और पीजीटी अभयर्थी स्वेता प्रधान जी शामिल रहे।

22 जुलाई से शुरू होगा सावन का पवित्र महीना पांच सोमवार होंगे, सालों बाद बन रहा अद्भुत संयोग

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : भगवान शिव के पूजन का विशेष माह सावन 22 जुलाई से शुरू हो रहा है। खास संयोग है कि सोमवार से ही सावन महीने का शुभारंभ हो रहा है। इस बार सावन में पांच सोमवारी पड़ेगी, जिस कारण यह महीना और शुभ हो रहा है। सालों ऐसाअद्भुत संयोग बाद बन रहा है। सावन के कृष्ण पक्ष में एक तिथि का हानि होने के कारण यह पक्ष 14 दिनों का है। पंडित रामदेव पाण्डेय ने कहा कि अमावस्या तिथि को पुष्य नक्षत्र मिलने के कारण इस वर्ष मध्यम व समुचित वर्षा की संभावना है। सावन में साग नहीं खाने का विधान है। सावन में प्रतिदिन भगवान भोलेनाथ को जलाभिषेक करने का विशेष महत्व है। यह जलाभिषेक मंदिर व घर दोनों जगह कर सकते हैं। यदि प्रतिदिन मंदिर नहीं जा पा रहे हैं, तो सोमवार को मंदिर में जलाभिषेक व व्रत कर सकते हैं। साथ ही सावन में रुद्राभिषेक, महामृत्युंजय मंत्र का जाप, हवन, लघुरुद्र, महारुद्र, अतिरुद्र व शिव चालीसा के पाठ और मंत्र जाप का भी विशेष महत्व है। इस मास में काफी भक्त बाबा भोलेनाथ को जलाभिषेक करने के लिए बैद्यनाथ धाम जाते है। वहीं बाबा अमरनाथ सहित अन्य शिवलिंग का दर्शन करने व जलाभिषेक करने के लिए जाते हैं। इस महीन के प्रत्येक मंगलवार को देवी पूजन व हनुमान जी के पूजन व दर्शन करने का विशेष महत्व है। पांच अगस्त से सावन शुक्ल पक्ष शुरू हो रहा है। इस पक्ष मे नवमी तिथि की वृद्धि व द्वादशी तिथि की हानि होने के कारण यह पक्ष पूरे 15 दिनों का है। इस पक्ष में शनिवार को सिंह की संक्रांति पड़ने के कारण अत्यधिक बारिश की संभावना है। 19 अगस्त को रक्षा बंधन व सावन मास का समापन है। साथ ही व्रत व स्नान दान की पूर्णिमा है। 19 अगस्त को रात 12.28 बजे तक पूर्णिमा है। दोपहर 1:25 के बाद से रक्षाबंधन शुरू होगा, क्योंकि इससे पहले भद्रा रहेगा। पहाड़ी मंदिर में 21 जुलाई से सावन महोत्सव शुरू हो रहा है। इसका शुभारंभ शाम चार बजे होगा. यह निर्णय मंदिर विकास समिति की बैठक में लिया गया. पहाड़ी मंदिर में महिलाओं, बुजुर्गों और बच्चों के लिए विशेष व्यवस्था की गयी है। पहाड़ी मंदिर के पूरे परिसर में सीसीटीवी कैमरा लगाये जायेंगे.। वहीं कांवरियों के लिए शुद्ध पेयजल की व्यवस्था रहेगी। साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखा जायेगा। मंदिर को लाइट व प्राकृतिक फूलों से सजाया जायेगा।

एक नजर

बिजली की आंख मिचौनी से नगर वासी हैं परेशान : रणधीर

बोकारो : राष्ट्रवादी इस्पात मजदूर संघ की बैठक स्थानीय कार्यालय सेक्टर 9 में हुई बैठक को संबोधित करते हुए यूनियन के महामंत्री रणधीर सिंह ने कहा कि बिजली की आंख मिचौली लोगों को आंदोलन करने के लिए विवश कर रही है एक तरफ बोकारो प्रबंध कार्यत कर्मचारियों से एवं सेवा निवृत कर्मचारियों से मनमाना बिजली बिल वसूलते हैं बिजली के नाम पर सिर्फ उनको धोखा दिया जा रहा बोकारो प्रबंधन नगर वासियों को लालटेन युग में भेजने के लिए तत्पर है कई बार प्रबंधन के उच्च अधिकारियों से इस संदर्भ में बात की गई परंतु उनका रवैया बिल्कुल ही गैर जीमेवारी पूर्ण है रात में भी बिजली काट दी जाती है लोगों का इनवर्टर तक बैठ जा रहा है अंधेरे युग में लोग जीने के लिए वीबस हो रहे हैं शीघ्र बोकारो प्रबंधन इस दिशा में सार्थक पहल नहीं उठाती है तो 72 घंटा के अंदर यूनियन आंदोलन के लिए वाद्य होगी और इसकी सारी जिम्मेवारी बोकारो प्रबंधन की होगी बैठक में मुख्य रूप से के तिवारी, अरे ओझा, ओन्ली टैली, प्यास पासवान, राजू कर्मकार, अयोध्या ठाकुर, रामजतन सिंह, विकास बैठा, अप सिंह, आदि क्या लाभ है दर्जनों की संख्या में कार्यकर्ता कर्मचारी व सेवानिवृत कर्मी मौजूद थे।

बारी को ऑपरेटिव कॉलोनी की झाड़ी में मिला नवजात शिशु

बोकारो : राजेंद्र नगर, काली मंदिर ,बारी कॉपरेटिव कॉलोनी के झाड़ी से मिले नवजात शिशु को बाल कल्याण समिति बोकारो ने संरक्षण में लिया, एक दिन के नवजात शिशु को सदर अस्पताल बोकारो में भर्ती कराया गया है, जहां उसका समुचित इलाज चल रहा है। बाल कल्याण समिति बोकारो के अध्यक्ष शंकर रवानी ने कहा कि शिशु का समुचित इलाज के लिए सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया है शिशु स्वास्थ होते ही उसे विशेष ग्रहण दतक संस्था को सौप दिया जाएगा वही से शिशु को गोद लेने की प्रक्रिया प्रारंभ किया जाएगा। बाल कल्याण समिति एवं जिला बाल संरक्षण इकाई के पदाधिकारियों ने सदर अस्पताल जाकर शिशु का अवलोकन करने के बाद चिकित्सक से बात कर समुचित इलाज की बात कही। मौके पर बाल कल्याण समिति के अध्यक्ष शंकर रवानी, प्रीति प्रसाद, मो0 रजी अहमद, रेणु रंजन, जिला बल संरक्षण पदाधिकारी अनीता झा, अनीता कुमारी उपस्थित थे।

मनोज चौधरी निर्विरोध चैंबर के अध्यक्ष निर्वाचित

बोकारो : चेंबर भवन में निर्वाचन पदाधिकारी प्रोफेसर आर डी उपाध्याय ने उप चुनाव पदाधिकारी अंजनी कुमार रूपक के साथ संयुक्त रूप से चेंबर के सत्र 24-26 के लिए निर्विरोध चुने गए कार्यकारिणी समिति के सदस्यों की घोषणा की। चास क्षेत्र से संजय बैद, सुभाष जैन, सिद्धार्थ जैन, रवि शंकर प्रसाद, शैलेंद्र जायसवाल, अनूप भालोठिया, राजेश पोद्दार, बिनय सिंह, मुकेश अग्रवाल सहित 10 सदस्यों,बोकारो क्षेत्र से प्रकाश कोठारी, महेश गुप्ता, कुमार अमरदीप, विपिन अग्रवाल सहित पांच सदस्यों, बालीडीह क्षेत्र से प्रदीप सिंह, अजय केडिया सिद्धार्थ पारख सहित तीन सदस्यों एवं बेरमो अनुमंडल क्षेत्र से कृष्ण कुमार चांडक, प्रेम राज गोयल, नरेंद्र सिंह सहित तीन सदस्यों के साथ कुल 21 सदस्यों के नाम की घोषणा की। चुनाव पदाधिकारी प्रोफेसर आर डी उपाध्याय एवं अंजनी कुमार रूपक ने संयुक्त रूप से नई कार्यकारिणी को बधाई देते हुए उनसे चेंबर हित में कार्य करने की अपेक्षा की। तत्पश्चात नवनिर्वाचित सदस्यों ने बैठक कर सर्व समिति से मनोज चौधरी को अध्यक्ष के रूप में एवं राजकुमार जायसवाल को महामंत्री मनोनीत किया। कमिटी का विस्तार बुधवार को होने वाली बैठक में कर लिया जाएगा।

विस्थापित गांवों को पंचायत का दर्जा दे सरकार : डॉ प्रकाश

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : सैकड़ो की संख्या में 20 विस्थापित गांव के लोग भाजपा के वरिष्ठ नेता डॉ प्रकाश सिंह के नेतृत्व में पंचायत की मांग को लेकर सेक्टर 4 स्थित गांधी जी की प्रतिमा के सामने हल्ला बोल कार्यक्रम का आयोजन किया ' जिसमें दर्जन भर स्त्री-पुरुष कैदी के वेशभूषा पहने हाथों में गुलामी की जंजीरों से लैस ग्रामीणों ने बड़े ही प्रतीकात्मक तरीके से अपने दर्द को बयां किया। ग्रामीण हाथों में संविधान की प्रति लेकर बार-बार यह नारा लगा रहे थे कि हमें संवैधानिक आजादी झारखंड सरकार को देनी होगी, झारखंड सरकार हाय हाय, विस्थापित गांव को पंचायत का दर्जा देना होगा, अधिकार नहीं तो वोट नहीं आदि तरह-तरह के नारे लगाकर अपना दर्द और आक्रोश झारखंड सरकार के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे थे क्योंकि पिछले विधानसभा चुनाव में हेमंत सोरेन विस्थापित गांव को पंचायत देने की बात कही थी,जो अब तक पूरे हुए। डॉ प्रकाश ने कहा कि आजादी के अमृत महोत्सव के बाद भी विस्थापित गांव को पूर्ण रूपेण संवैधानिक आजादी नहीं मिला। ग्रामीणों को अब तक पंचायत का अधिकार नहीं मिला। गांधी जी के पंचायती राज के सपनों को यहां तार तार किया जा रहा है,वही दूसरी ओर झारखंड सरकार बाबा साहब अंबेडकर द्वारा निर्मित संविधान और उसके मौलिक अधिकारों की धज्जियां उड़ाते हुए विस्थापितों को पंचायत का अधिकार नहीं दे रही है जो बेहद ही सर्वनाक है, उन्होंने कहा कि आंदोलन पिछले 15 दिनों से चल रहा है और हरेक विस्थापित गांव में पुतला जलाकर राज्य सरकार के प्रति आक्रोश व्यक्त किया गया है,अब जब तक विस्थापित को पंचायत का अधिकार नहीं मिलेगा तब तक यह आंदोलन चलता रहेगा।मौके पर आदिवासी भाजपा अध्यक्ष रामलाल सोरन थे।

संक्षिप्त खबरें

भ्रष्टाचार के विरुद्ध आज कार्यालय में जदयू का हल्ला बोल, पोल खोल : दीप नारायण

धनबाद : शुक्रवार को जदयू प्रदेश महासचिव सह यूथ फोर्स के प्रधान संयोजक दीप नारायण सिंह ने प्रेस विज्ञप्ति जारी करते हुए कहा कि दिनांक - 20 जुलाई को तोपचांची प्रखंड कार्यालय में जदयू पार्टी और यूथ फोर्स संगठन द्वारा भ्रष्टाचार और सरकारी योजनाओं में हो रही लुट - खसोट के विरुद्ध हल्ला बोल, पोल खोल कार्यक्रम आयोजित है। कार्यक्रम में हजारों की संख्या में छात्र - नौजवान, मजदूर - किसान के साथ साथ भारी संख्या में महिलाएं शामिल होगी। श्री सिंह ने कहा कि जदयू पार्टी के सर्वमान्य नेता और बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार एवं जदयू झारखंड प्रदेश अध्यक्ष सह राज्य सभा सांसद खीरु महतो के आह्वान पर राज्यव्यापी कार्यक्रम के तहत भ्रष्टाचार के विरुद्ध सभी प्रखंडों में प्रदर्शन की जा रही है। जदयू पार्टी स्थापना काल से ही भ्रष्टाचार के विरुद्ध मुखर है। भ्रष्टाचार के विरुद्ध इस आंदोलन में लोगों का गुस्सा कल प्रखंड कार्यालय में देखने को मिलेगा। साथ ही साथ पार्टी गांव - गरीब, मजदूर किसान भाइयों से आह्वान करती है कि इस प्रदर्शन में शामिल हो कर भ्रष्टाचार के विरुद्ध आवाज बुलंद करें।

जदयू झारखंड का प्रतिनिधिमंडल नीतीश कुमार से मिला

धनबाद : शुक्रवार झारखंड जदयू के एक प्रतिनिधिमंडल मंडल पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष सह राज्यसभा सांसद खीरु महतो के नेतृत्व में पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष सह बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से मिले। इस दौरान झारखंड में होने वाली आगामी विधानसभा चुनाव एनडीए गठबंधन के तहत लड़ने की बात पर विचार विमर्श किया गया। नीतीश कुमार ने मजबूती के साथ झारखंड में चुनाव लड़ने का आश्वासन दिया तथा चुनाव की तैयारी में जुट जाने का निर्देश मिला। उक्त मौके पर पार्टी के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष संजय झा, बिहार सरकार के मंत्री सह झारखंड के प्रभारी श्री अशोक चौधरी,मंत्री श्रवण कुमार,मधुकर सिंह, धनबाद जिला अध्यक्ष पिंटू कुमार सिंह, मुख्यालय प्रभारी श्रवण कुमार,युवा प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष निर्मल सिंह,प्रदेश महासचिव राजकुमार सोनी आदि मौजूद थे।

सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र नवाडीह में शुरू हुआ तम्बाकू नशा मुक्ति केन्द्र

बोकारो : सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र नवाडीह में तम्बाकू नशा मुक्ति केन्द्र का उदघाटन डा0 राकेश भारती प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी नवाडीह एवं डा0 विजेता कुमारी चिकित्सा पदाधिकारी सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र नवाडीह के द्वारा किया गया। डा0 राकेश भारती प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी नवाडीह के द्वारा बताया गया कि झारखण्ड में कुल आबादी का 38 .9 प्रतिशत लोग तम्बाकू किसी न किसी रूप में प्रयोग करते है जिसमें 13 से 15 आयु वर्ग में ही 5 .1 प्रतिशत बच्चे तम्बाकू का सेवन करते है। जिसको रोकने के लिये स्कूल जागरूकता कार्यक्रम स्वास्थ्य विभाग से चलाया जा रहा है और जो बच्चे तम्बाकू छोडना चाहते हैं उन्हें तम्बाकू नशा मुक्ति केन्द्र में परामर्शी सेवा के साथ साथ दवा की उपलब्धता कराते हुये छोडने में मदद की जाती है। इस अवसर पर सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र नवाडीह के प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डा0 राकेश भारती, चिकित्सा पदाधिकारी डा0 विजेता, प्रखण्ड कार्यक्रम प्रबंधक नरेश कुमार, भानू प्रसाद महतो, उमेश प्रसाद महली, भागीरथ ठाकुर एवं अन्य पदाधिकारी व कर्मी उपस्थित थे।

सच्चा आनंद आंतरिक खुशी से मिलेगा : बिनोद चोपड़ा

बोकारो : रोटरी क्लब चास द्वारा चंदनक्यारी के चेतना महिला स्वास्थ्य केंद्र में खुशियों का वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। रोटरी क्लब चास के अध्यक्ष बिनोद चोपड़ा ने कहा की रोटरी का उद्देश्य से बिना कुछ भी उम्मीद किए जरूरतमंदों को सामग्री वितरण पहल के माध्यम से खुशियों के रंग फैलाना है। बिनोद चोपड़ा ने कहा कि सच्चा आनंद अंदर से आता है और साझा करने से खुशियां कई गुना बढ़ जाती है। कार्यक्रम के संयोजक मंजीत सिंह ने कहा की वंचितों को देखभाल और सहायता की सबसे ज्यादा आवश्यकता है। मंजीत ने कहा कि जरूरतमंदों की मदद से उन्हें प्यार और खास का एहसास होता है तथा उनका मनोबल बढ़ता है। स्वास्थ्य केंद्र की संचालिका लिंडसे बार्न ने केंद्र में मच्छरदानी उपलब्ध कराने एवं महिला सशक्तिकरण के लिए सिलाई मशीन एवं ठोंगे बनाने हेतु अखबार उपलब्ध कराने के लिए रोटरी क्लब चास का आभार जताया। श्रीमती लिंडसे ने कहा की जो लोग देने की आदत रखते हैं ईश्वर भी उन्हें देता है। रोटरी क्लब चास के सचिव मुकेश अग्रवाल ने कहा की उदारता एक ऐसा विकल्प है जो संतुष्टि और खुशी लाता है। मुकेश ने बताया की रोटरी क्लब चास द्वारा मरीजों के पहनने के लिए कपड़े, 20 मच्छरदानी, एक सिलाई मशीन एवं पुराने अखबार उपलब्ध कराए गए। मुकेश ने कहा यह किसी की जिंदगी बन सकता है। कार्यक्रम में डॉ परिंदा सिंह,नरेंद्र सिंह,संजय बैद, माधुरी सिंह, संजय रस्तोगी, पूजा बैद,डॉ कोमल,हरबंस सिंह,शैल रस्तोगी, डिंपल कौर,सूमी सलूजा चनप्रीत सिंह,प्रकाश केजरीवाल, मनप्रीत कौर, पूर्वी केजरीवाल, ज्योति अग्रवाल, अमन मल्लिक, प्रेम शंकर सिंह, विजय अग्रवाल, डॉ पुष्पा, ललिता चोपड़ा, रितु अग्रवाल आदि विशेष रूप से उपस्थित थे।

एमजीएम स्कूल बोकारो की टीम गतका राज्य प्रतियोगिता के लिए धनबाद रवाना

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : सरस्वती विद्या मंदिर, भूली धनबाद में होने वाली गतका राज्य प्रतियोगिता जो की 20 और 21 जुलाई को गतका संघ झारखंड की ओर से कराई जा रही है इस प्रतियोगिता में बोकारो के एमजीएम हायर सेकेंडरी स्कूल के 28 सदस्य टीम धनबाद के लिए रवाना हुई प्रतियोगिता के लिए चुने गए बच्चों में साक्षी श्रीवास्तव, जेबा नाज, जसमीत कुमार, तरुण कुमार, प्रदर्शनी कुमारी, रणविजय कुमार, प्रियांशु राज सिंह,हर्षित कुमार, अनमोल कुमार,रवि रोशन, वेदांत भारद्वाज, आशीष कुमार, आदिति तिवारी,रिया सिंह, शौर्य शेखर सिंह, प्रिया मंडल, श्री गुप्ता, ऋषिका कुमारी, श्रेया, माया कुमारी, तेजस्वी, देवराज, जयकुमार, अवनि कुमारी, अस्मिता कुमारी, शुभांगी शर्मा, स्वाति कुमारी एवं टीम कोच राजीव सिंह वही स्कूल के प्राचार्य फादर जोशी वर्गिस, उप प्राचार्य रेखा बनर्जी, एकेडमिक इंचार्ज जॉर्ज जोसेफ, हेड मिस्ट्रेस सपना जोशी के साथ-साथ स्कूल के सभी खेल शिक्षकों में राजेश्वर सिंह, मीनाक्षी कुमारी,सौरभ कुमार, मोहसिन रजा एवं वंदना कुमारी ने सभी खिलाड़ियों को अपनी शुभकामनाएं दी।

शक्ति कॉलेज सिजुआ के छात्रों में बहुत कुछ करने का है जज्बा : एसएसपी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

धनबाद : टाटा सिजुआ 12 नंबर में स्थापित शहीद शक्ति नाथ महतो स्मारक महाविद्यालय के सम्मन समारोह को संबोधित करते हुये वरीय पुलिस अधीक्षक एच पी जनार्धन ने कहा कि सभी छात्रों को कहा कि अपने जीवन मे प्रथम दूतीय तृतीय से नही आगे के भविष्य में अभी और कड़ी परीक्षा होने वाली है,अपने पवार को समझना पड़ेगा,जीवन मे लक्ष्य को केंद्रित करके पढ़ाई कर जीवन के हर मोड़ में सफलता कदम चूमेगी।मुझे गर्व होगा जब आपमे से कोई हमारे लेबल तक पहुचे तो, उसकी तैयारी में लग जाये। टुंडी विधायक सह महाविद्यालय के सचिव मथुरा प्रसाद महतो ने कहा शिक्षा के वगैर मनुष्य का जीवन अधूरा है, इस कॉलेज में झारखंड मध्यमा परीक्षा का एक मात्र सेंटर इस शक्ति कॉलेज में देना गर्व की बात है। इसके लिये सभी बधाई के पात्र है, टाटा स्टील के अधिकारीरियो ने भी सफल छात्र छात्राओं व उनके अभिभागक, शिक्षक, पुरस्कार कया। कॉलेज के लगभग 4500 छात्र है ,इससे पता चलता है महाविद्यालय का परिणाम कितना बेहतर होगा उसका अनुमान लगाया जा सकता है। वरीय पुलिस अधीक्षक एच पी जनार्धन, विधायक सह सचिव मथुरा प्रसाद महतो,टाटा स्टील के चीफ सिजुआ ग्रुप विकाश कुमार,सिटी एस पी अजित कुमार, सिजुआ कोलियारी हेडसंजीव ठाकुर, सिजुआ ग्रुप हेड पीयूष कुमार सहित अन्य अतिथियों ने आर्ट्स, साइंस, कामर्स के टॉपर को मोमेंटो, बुके, शाल व नगद राशि देकर सम्मानित किया। दीप प्रज्वलित के बाद स्वागत भाषण, व रंगारंग कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया।आर्ट्स के टॉपर निधि कुमारी, सहीत दूसरे व तृतीय स्थान प्राप्त ऋषिजेश पासवान, ऋषिका कुमारी, मधु कुमारी सहित सैकड़ो अन्य छात्र छात्राओं को अतिथियों ने सम्मानित किया। अतिथियों का स्वागत प्राचार्य डॉक्टर अरुण कुमार महतो व विधायक सह महाविद्यालय के सचिव मथुरा प्रसाद महतो ने किया। संचालन रमेश प्रसाद महतो व अध्यक्षता टुंडी विधायक सह महाविद्यालय के सचिव मथुरा प्रसाद महतो ने किया।

प्रभारी निदेशक की अध्यक्षता में ट्रेनिंग एडवाइजरी कमेटी की हुई बैठक

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : बीएसएल के निदेशक प्रभारी की अध्यक्षता में ट्रेनिंग एडवाइजरी कमिटी की बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में बोकारो स्टील प्लांट के अधिशासी निदेशक, मुख्य महाप्रबंधक, विभागाध्यक्ष तथा मानव संसाधन) विभाग के अधिकारी शामिल हुए। बैठक में पिछले वित्तीय वर्ष के दौरान मानव संसाधन (ज्ञानार्जन एवं विकास) विभाग द्वारा सम्पन्न विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा अन्य महत्वपूर्ण उपलब्धियों के बारे वरीय प्रबंधक मानव संसाधन प्रीति कुमारी ने एक प्रस्तुतिकरण द्वारा जानकारी दी। इसके अलावा चालू वित्तीय वर्ष की ज्ञानार्जन एवं विकास संबंधित योजनाओं और प्राथमिकताओं से भी वरिष्ठ अधिकारियों को अवगत कराया गया। मुख्य महाप्रबंधक संजय धर ने फ्यूचर रेडी सेल - फ्यूचर रेडी एचआर पर चर्चा की। निदेशक प्रभारी ने सभी पहलुओं की समीक्षा करते हुए ज्ञानार्जन एवं विकास गतिविधियों को संगठन की आवश्यकताओं के अनुरूप और प्रभावी बनाने पर बल दिया, साथ ही सेल्फ लर्निंग एवं इम्प्रूवमेंट, गैप एनालिसिस, नॉलेज बैंक सहित अन्य बिंदुओं पर चर्चा की. अधिशासी निदेशकों ने भी बैठक में प्रशिक्षण कार्यक्रमों से सम्बंधित अपने विचार रखे। बैठक के आरम्भ में मुख्य महाप्रबंधक मानव संसाधन मनीष जलोटा ने सभी का स्वागत किया. निदेशक प्रभारी ने बीएसएल को हाल ही में प्राप्त विभिन्न पुरस्कारों के लिए सम्बंधित विभागों और टीम के सदस्यों को बधाई दी। इनमें प्रमुख तौर पर नेशनल अवार्ड फॉर मैन्युफैक्चरिंग कम्पेटिटिवेनेस्स 2023-24, ग्रीनटेक ईएचएस लीडरशिप अवार्ड तथा समृद्धि मैनेजमेंट एंड बिजनेस क्विज अवार्ड शामिल थे।

छात्र हित में काम हो, नहीं तो होगा आंदोलन : एनएसयूआई

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

धनबाद : शुक्रवार को एनएसयूआई के जिला अध्यक्ष गोपाल कृष्णा चौधरी के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल ने बीबीएमकेयू विश्वविद्यालय के डीएसडब्ल्यू पुष्पा कुमारी से मिलकर मांग पत्र सौपा तथा मांग किया कि मैथ डिपार्टमेंट में 18 छात्रों को इंटरनल में दोबारा मौका नहीं मिलने के कारण उनका 1 साल बर्बाद हो रहा है। उक्त मामले को लेकर डीएसडब्ल्यू से वार्ता की गई। उन्होंने सभी छात्रों के संग कुलपति राम कुमार सिंह से मिलकर वार्ता की। मौके पर जिला अध्यक्ष ने कुलपति को उचित कदम उठाने की बात कही, जिस पर कुलपति ने भी सहमति जताते हुए बोला कि शनिवार को सभी संबंधित अधिकारीओं को एक साथ बैठक कर वार्ता किया जाएगा। और इस पर मंथन करके छात्र हित में कदम उठाया जाएगा। जिला अध्यक्ष गोपाल कृष्णा चौधरी ने कहां की चाहे एक छात्रा का मामला हो या 100 अगर किसी भी छात्र की हानि होगी तो एनएसयूआई उसके साथ खड़ा है और जरूरत पड़ने पर आंदोलन करने को भी बाध्य होगा। मौके पर एनएसयूआई के जिला अध्यक्ष गोपाल कृष्णा चौधरी, उपाध्यक्ष रवि पासवान, विश्वविद्यालय महासचिव मोहित कुमार और महताब आलम, विश्वविद्यालय सचिव जयप्रकाश सिंह, अमित कुमार, नयन पांडे समेत दर्जनों एनएसयूआई नेता मौजूद थे।

आदिवासी सेंगेल ने समाज में जनतंत्र लागू कराने को लेकर किया विरोध प्रदर्शन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : चंदनकियारी प्रखंड कार्यालय के समक्ष आदिवासी सेंगेल अभियान द्वारा चंदनकियारी प्रखंड अध्यक्ष राजेश मुर्मू के नेतृत्व में सभी गांव-समाज में सौविधान ,कानून और जनतंत्र लागू करने हेतू एक दिवसीय धरना प्रदर्शन किया गया। तात्पाश्चत सेंगेल के सात प्रतिनिधिमंडल चंदनकियारी बीडीओ राजीव कुमार सिंह के मार्फत भारत के महामहिम राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के नाम ज्ञापन पत्र सुपुर्द किया गया। धरना में मौजूद झारखंड प्रदेश संयोजक करमचंद हांसदा ने कहा कि सेंगेल के राष्ट्रीय अध्यक्ष व पूर्व सांसद सालखन मुर्मू आह्वान पर राष्ट्रीय स्तर पर भारत के महामहिम राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के नाम पत्र के माध्यम से सेंगेल द्वारा हमारी मांग - सभी आदिवासी गांव समाज में संविधान,कानून और जनतंत्र जल्द लागू करें। क्योंकि आदिवासी स्वाशसन व्यवस्था के नाम पर चालू वंशानुगत नियुक्त माझी- परगना आदि इसको नहीं मानते हैं। राजतांत्रिक तानाशाही चलाते हैं। जबरन सामाजिक बहिष्कार, जुमार्ना, डायन प्रताड़ना, अंधविश्वास, नशापन, वोट खरीद-विक्री, महिला विरोधी मानिसकता आदि जैसे असंवैधानिक कृत्यों को बढ़वा देते हैं। अंततः आदिवासी गांव-समाज गुलामी का जीवन जीने को मजबूर हैं। मौके बोकारो जिला अध्यक्ष सह बोकारो जोनल हेड सुखदेव मुर्मू ने कहा कि क्योंकि सभी आदिवासी गांव-समाज में यह लागू नहीं है। इसके लिए राष्ट्रपति से लेकर वीडीओ और पंचायत प्रतिनिधि तक दोषी हैं। दूसरी तरफ आदिवासी स्वशासन के नाम पर वंशानुगत नियुक्त मांझी परगाना आदि भी दोषी हैं। इसकी वजह से नशापान, अंधविश्वास, डायन प्रथा, महिला विरोधी मानसिकता, ईर्ष्या द्वेष, वोट की खरीद बिक्री, जबरन डंडोम या जुमार्ना लगाना, सामाजिक बहिष्कार करना आदि चालू है। सेंगेल कि मांग है कि अविलंब राज्य सरकार,जिला प्रशासन व पुलिस प्रशासन ,सक्षम पदाधिकारी इसे लागू करने में सहयोग करें अन्यथा ये भी जिम्मेदार हैं। धरना पर निम्न लोग झारखंड प्रदेश संयोजक जयराम सोरेन, चंदनकियारी प्रखंड सेंगेल परगना भुटेल टुडू, सोनी बेसरा,सावित्री हांसदा आदि महिला पुरुष शामिल थे।

बैंक ऑफ इंडिया ने किसान दिवस का किया आयोजन

जिले के 131 लाभुकों को केसीसी ऋण का दिया गया लाभ

- उपायुक्त ने लाभुकों से की मुलाकात, लाभुकों के बीच किया गया केसीसी सैंक्शन लेटर का वितरण
- इस दौरान RSETI के प्रशिक्षुओं के बीच प्रमाण पत्र का भी किया गया वितरण

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

गुमला : गुमला जिला मुख्यालय में शुक्रवार को बैंक नेशनलाइजेशन डे के उपलक्ष्य में बैंक ऑफ इंडिया गुमला के द्वारा सीलम स्थित RSETI परिसर में जिला स्तरीय किसान दिवस का आयोजन किया गया। इस दौरान जिले के किसानों को केसीसी ऋण उपलब्ध कराने की पहल की गई। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप से उपायुक्त कर्ण सत्यार्थी उपस्थित रहें। बैंक ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित किसान दिवस के अवसर पर आज विभिन्न बैंक शाखाओं के माध्यम से जिले के कुल 131 किसानों को केसीसी लोन का लाभ दिया गया। वहीं आज 2 लाभुकों को स्वरोजगार हेतु पीएमएफएमइ योजना का भी लाभ दिया गया। कार्यक्रम के दौरान उपायुक्त के द्वारा आज सांकेतिक रूप से कुल 17 लाभुकों के बीच केसीसी सैंक्शन लेटर एवं 2 लाभुकों के बीच पीएमएफएमई योजना के तहत सैंक्शन लेटर प्रदान किया गया। साथ ही 6 लाभुकों के बीच केसीसी योजना के तहत कृषि मशीन का भी वितरण किया गया। कार्यक्रम के दौरान उपायुक्त ने वहां उपस्थित सभी किसानों से बात की। उन्होंने केसीसी ऋण के संबंध में जानकारी दी । उपायुक्त ने कहा कि केसीसी ऋण किसानों के लिए एक बेहतरीन ऋण है जिसमें बिना किसी इंट्रेस्ट के किसानों को उनके आय वृद्धि के लिए लोन दिया जाता है। उन्होंने किसानों को अधिक से अधिक इस योजना का लाभ लेने के प्रति प्रेरित किया। इसी बीच दो ऐसे भी लाभुक थे जो स्वरोजगार करते हुए स्वयं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए पीएमएफएमई योजना का लाभ प्राप्त कर रहे थे। जिसमें आयुष कुमार जिन्हे ढटऋएए योजना के तहत 8.56 लाख रुपए प्राप्त हुए वहीं सिकंदर लोहरा को सुकर पालन इकाई के लिए 9,50,000/- रुपए प्राप्त हुए। उपायुक्त ने दोनो ही लाभुकों से बात कि एवं उन्होंने लाभुकों से कहा कि उनके बिजनेस के प्रारंभ होने के बाद वे उसे देखने जाएंगे। एलडीएम गुमला द्वारा प्राप्त जानकारी अनुसार आज के कार्यक्रम के अवसर पर कुल 131 लाभुकों को 56.93 लाख की राशि का ऋण प्रदान किया गया है। उन्होंने कहा कि भविष्य में भी किसानों को सरकार की योजनाओं का लाभ मिल सके इसके लिए बैंक शाखाओं के द्वारा पूर्ण सहयोग प्रदान किए जाएंगे। उक्त कार्यक्रम के पश्चात उपायुक्त कर्ण सत्यार्थी फरएळक कार्यालय भी पहुंचे जहां झारखंड ग्रामीण विकास विभाग द्वारा एवं BDSP/CRP EP of MED, SVEP, OSF एवं NRLM ब्लॉक सर्टिफिकेट के तहत 32 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया था आज अंतिम दिवस में सभी प्रशिक्षुओं के परीक्षा के पश्चात उपायुक्त के हाथों उनके बीच प्रशस्तिपत्र/ प्रमाण पत्र का वितरण किया। इस बीच उपायुक्त ने सभी प्रशिक्षुओं से मुलाकात की एवं उनके भविष्य की योजनाओं के बारे में जाना।

एसीबी ने रिश्वत लेते दो को किया गिरफ्तार

लोहरदगा : भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एसीबी) की रांची टीम ने लोहरदगा जिले के आपदा प्रबंधन पदाधिकारी विभाकर कुमार को रिश्वत लेते गिरफ्तार किया है। विभाकर को शहरी क्षेत्र के वरदान हॉस्पिटल से गिरफ्तार किया गया है।

वरीय पुलिस अधीक्षक का कार्यालय, राँची

सर्वसाधारण के लिए सूचना

नाम– पूनम देवी उम्र 30 वर्ष एवं पुत्र–पुत्री
रंग–सॉवला, ऊँचाई–4 फीट,

उपरोक्त लापता महिला पूनम देवी, पति–दशरथ मुण्डा, सा0–जीदू बोरवाटोली, थाना–अनगड़ा, जिला–राँची जो दिनांक–07.06.2024 को घर से बगैर बताए कहीं चले गए जो आजतक अपने घर वापस नहीं आए है। जिसके संबंध में अनगड़ा थाना सनहा संख्या–16/24, दिनांक–11.06.2024 दर्ज कर खोजबिन की जा रही है। उपरोक्त सूचना की सार्वजनिक किया जाना आवश्यक है।

अतः सभी जन साधारण से अनुरोध है कि यदि उपरोक्त लापता महिला कहीं मिलती/दिखती है तो इसके संबंध में वरीय अधीक्षक के कार्यालय में या निम्नांकित फोन नम्बर पर संपर्क कर इसकी सूचना दें।

पुलिस उपाधीक्षक सिल्ली राँची। – 9431770066
थाना प्रभारी अनगड़ा, राँची। – 9431706180

वरीय पुलिस अधीक्षक, राँची

PR 330054 Police (24-25)_D

वरीय पुलिस अधीक्षक का कार्यालय, राँची

सर्वसाधारण के लिए सूचना

नाम– साज्या परवीण उम्र 25 वर्ष
रंग–सॉवला, ऊँचाई–4 फीट, 5 ईंच, पहनावा–सलवार सूट

उपरोक्त लापता महिला साज्या परवीण, पति एकराम अंसारी, सा0–पिठौरिया, थाना–कॉके, जिला–राँची जो दिनांक–06.06.2024 को घर से बगैर बताए कहीं चले गए जो आजतक अपने घर वापस नहीं आए है। जिसके संबंध में कॉके थाना सनहा संख्या–18/24, दिनांक–07.06.2024 दर्ज कर खोजबिन की जा रही है। उपरोक्त सूचना की सार्वजनिक किया जाना आवश्यक है।

अतः सभी जन साधारण से अनुरोध है कि यदि उपरोक्त लापता महिला कहीं मिलती/दिखती है तो इसके संबंध में वरीय अधीक्षक के कार्यालय में या निम्नांकित फोन नम्बर पर संपर्क कर इसकी सूचना दें।

पु0 उपा0,मु0 प्रथम, राँची। –9431706141
थाना प्रभारी कॉके, राँची। –9431706185

वरीय पुलिस अधीक्षक, राँची

PR 330056 Police(24-25)#D

मुख्यमंत्री आवास घेराव को लेकर सहायक अध्यापक संघर्ष मोर्चा के सैंकड़ों शिक्षक रांची रवाना

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

सरिया(गिरिडीह): वेतनमान सहित अपनी जायज मांगों को लेकर संघर्षरत राज्य के तमाम सहायक अध्यापक शनिवार को मुख्यमंत्री आवास का घेराव करेंगे.इसके लिए शुक्रवार को सहायक अध्यापक संघर्ष मोर्चा स्तरीय इकाई की एक बैठक बीआरसी सरिया में आयोजित की गई। जिसकी अध्यक्षता प्रखंड अध्यक्ष शिव शंकर रूपांशु ने किया। उन्होंने कहा की हेमंत सरकार ने सहायक अध्यापकों के साथ वादा खिलाफी किया है। उनके चुनावी घोषणा पत्र में सहायक अध्यापकों को वेतनमान देने की बात कही गई थी। परंतु इसका लाभ सहायक अध्यापकों को नहीं मिल सका.जिसके विरुद्ध सांगठनिक कार्यक्रम के तहत शनिवार को मुख्यमंत्री आवास का अनिश्चितकालीन घेराव कार्यक्रम किया जाएगा। जिसमें सरिया के सभी सहायक अध्यापकों ने कार्यक्रम में हिस्सा लेने की बात कही। अपनी-अपनी सुविधा अनुसार मुख्यमंत्री आवास पर घेरा डालो डेरा डालो कार्यक्रम में शामिल होने के लिए लोग रांची प्रस्थान किए। बैठक में नारायण महतो, लक्ष्मण कुशवाहा, महेश ठाकुर, प्रकाश मंडल, नारायण यादव, महादेव सिंह, राजेंद्र ठाकुर मुन्नालाल मंडल, भागीरथ प्रसाद, तारावती कुमारी, सुसनी कुमारी, दिनेश यादव, रविंद्र मंडल, दीपेंद्र सिंह,लीला देवी, रंजीत कुमार, सुखदेव सिंह, सुरेश पासवान, रोहन महतो,राजेंद्र ठाकुर, ईश्वर मंडल, द्वारिका मंडल, अनिल मोदी, राजेंद्र मोदी,वाहिद अली सहित अन्य

श्रावणी मेल को लेकर देवाकी बाबा धाम प्रबंधन समिति की हुई बैठक

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

गुमला : गुमला जिला अंतर्गत स्थित घाघरा प्रखंड स्थित देवकी धाम श्रावणी मेला को लेकर देवाकी बाबा धाम प्रबंधन समिति के द्वारा शुक्रवार को बैठक आयोजित की गई बैठक की अध्यक्षता समिति के अध्यक्ष दिलीप कुमार ने की। बैठक में श्रवण माह शुरू होने से पूर्व मंदिर की सुंदरीकरण पर विशेष चर्चा किया गया। साथ ही रंग रोगन कर पूरे माह मेला की के लिए जरूर की संसाधन की व्यवस्था बनाने का निर्णय लिया गया। वहीं मौजूद प्रबंधन के सचिव किशोर जायसवाल ने तमाम सदस्यों से आग्रह करते हुए कहा कि श्रावण मास के प्रत्येक सोमवार को अपनी उपस्थिति जरूर दें और विधि व्यवस्था को बनाने में अपनी सहभागिता प्रदान करें। जिससे पूजा के लिए आने वाले भक्तगणों को किसी प्रकार का असुविधा का सामना न करना पड़े। इस मौके पर मुख्य रूप से उपस्थित प्रेम कुमार साहू, कोषाध्यक्ष रामनन्दन साहू, विपिन बिहारी सिंह, प्रदीप प्रसाद, प्रेम जायसवाल, शुभम सिंह, बसंत जायसवाल उपस्थित थे।

गरिमा सह जन सुनवाई सम्मेलन संपन्न

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

गुमला : चैनपुर प्रखंड अंतर्गत पुस्तकालय भवन में शुक्रवार को प्रखंड स्तरीय गरिमा सम्मेलन सह जन सुनवाई हुई। कार्यक्रम में प्रखंड बीपीएम बबीता देवी ने अतिथियों का अभिवादन किया तथा कार्यक्रम के उद्देश्य पर प्रकाश डाला, उन्होंने कहा कि प्रखंड स्तर पर इन सभी लाभुको का नेटवर्क बनाया जाएगा,ताकि प्रखंड के किसी भी क्षेत्र में अगर किसी को डायन कह कर प्रताड़ित किया गया तो उसकी सुरक्षा देने में सहयोगी करेंगी। । वही बीडीओ श्री यादव बैठा ने कहा कि प्रखंड में डायन बिसाही कुप्रथा से पीड़ित लोगों को चिन्हित कर समाज के मुख्य धारा से जोड़ने के लिए ऐसी परियोजनाओं का धरातल पर उतरने के लिए जेएसएलपीएस सराहनीय कार्य कर रही है। आज शिक्षा और स्वास्थ्य की बहुत जरूरत है अगर महिला शिक्षित है तो इस तरह के मामले में कमी आएगी सम्मान हर महिला का अधिकार है । नारी तो खुद समाज के रचना करती है तो उसके साथ ऐसा व्यवहार क्यों यहां कार्यक्रम में आए हुए सभी गरिमा लाभार्थी दीदी लोग के भीड़ को देखते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि आज लोग जागरुक हो रहे हैं सम्मेलन में डायन कहकर प्रताड़ित की जाने वालीगरिमा लाभार्थी को सम्मानित किया गया । कार्यक्रम में मुख्य रूप से चैनपुर थाना प्रभारी,मुखिया शोभा देवी प्रखण्ड की सभी जेंडर सीआरपी , छेत्र समन्वयक सहित अनेक लोग उपस्थित थे।

दो सूत्री मांगों को लेकर पंचायत सचिव संघ ने दिया धरना

उधवा : प्रखंड मुख्यालय के बहार झारखंड राज्य पंचायत सचिव संघ के आह्वान पर शुक्रवार को दो सूत्री मांगों के समर्थन में जिले के सभी प्रखंड में एक दिवसीय धरना प्रदर्शन का आयोजन किया गया है। जानकारी के अनुसार जिले के सभी पंचायत सचिव संघ ने उपायुक्त को आवेदन सौंपकर एक दिवसीय प्रखंड स्तरीय शांतिपूर्ण धरना प्रदर्शन करने की मांग की है। धरना प्रदर्शन का नेतृत्व संघ के जिला अध्यक्ष जनकदेव यादव और जागेश्वर पंडित करेंगे। वही सभी प्रखंड में प्रखंड अध्यक्ष एव प्रखंड सचिव के नेतृत्व में धरना प्रदर्शन किया जाना है। वही दो सूत्री मांगों में बताया गया है कि मूल ग्रेड पे दो हजार चार सौ रुपए दिया जाए। साथ ही प्रखंड पंचायती राज पदाधिकारी के पद पर 25 प्रतिशत में शेष प्रोन्नति वरीयता के आधार पर दिया जाए।

जानकी देवी की पुण्य तिथि पर आंख जांच कैंप का किया गया आयोजन

अनगड़ा : नामकोम टाटीसिलवे में 19 जुलाई को एक्यूप्रेशर परिषद झारखंड शाखा में मां जानकी देवी के पुण्यतिथि पर एक्यूप्रेशर परिषद कार्यालय में आंख जांच कैंप का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन एक्यूप्रेशर परिषद झारखंड शाखा के सचिव डॉ मधुसूदन पांडे एवं डॉक्टर हेमलता भारती भारत कुमार के हाथों से फीता काटकर किया गया इस अवसर पर लाइफ केयर अस्पताल के डॉक्टर हेमलता भारती ने कहा की आंख हमारे जीवन का आधार है इसको बचाना हम सभी का कर्तव्य है इसी उद्देश्य इस कैंप का आयोजन किया गया साथ ही साथ उनके दल का डॉक्टर भारत कुमार अमर कुमार वर्मा अमीन अख्तर रीमा सिस्टर रश्मि सिस्टर एवं एक्यूप्रेशर परिषद के डॉक्टर नरेश कुमार डॉक्टर ललिता कुमारी सुरेंद्र ठाकुर प्रोफेसर लखन मिश्रा अखिल पाठक भोलानाथ ठाकुर इत्यादि का योगदान रहा धन्यवाद ज्ञापन शशि कुमार टाटा सिल्वर एवं आसपास के क्षेत्र के साइको ग्रामीणों ने आंख जांच करवा कर लाभ उठाया अमर कुमार बर्मा ने बताया की लाइफ केयर हॉस्पिटल में आयुष्मान कार्ड के द्वारा सभी मरीजों का मुफ्त इलाज किया जाएगा इसकी जानकारी सभी ग्रामीणों को दी।

कार्यालय, नगर पंचायत, लातेहार।

आम सूचना

(8th Call)

अपर अभियान निदेशक, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, झारखण्ड सरकार, रांची के पत्रांक 328 (ADM) दिनांक 06.12.2022 के आलोक में लातेहार जिले के शहरी क्षेत्र में 15वें वित्त आयोग (स्वास्थ्य) के तहत् संचालित किये जाने वाले Urban Health and wellness Center के संचालन हेतु चिकित्सकों की सेवा प्राप्त किया जाना है। चिकित्सकों के चयन हेतु दिनांक 26.07.2024 को पूर्वाहन् 11:30 बजे नगर पंचायत, लातेहार के कार्यालय में Walk in interviiew निर्धारित किया गया है। इच्छुक निजी चिकितसाकों से निम्नांकित शर्तो के अधीन आवेदन आमंत्रित किये जाते हैं।

क्र0 सं0	विवरणी	आवश्यक शर्ते
01	पदनाम	General Duty Medical Officer
02	न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता	मेडिकल कॉउन्सिल ऑफ इण्डिया से मान्यता प्राप्त किसी भी संस्थान से M.B.B.S. की डिग्री
03	उम्र सीमा	अधिकतम 67 वर्ष (सिविल सर्जन के माध्यम से निर्गत मेडिकल फिटनेस प्रमाण पत्र के आधार पर 70 वर्ष तक के चिकित्सकों की सेवा प्राप्त की जा सकती है। मेडिकल फिटनेस प्रमाण पत्र की वैधता एक वर्ष के लिए मान्य होगा।)
04	मानदेय	रू0 63000/– (तिरसठ हजार रू0 मात्र)
05	कुल रिक्तियां	01 (एक)
06	चयनित चिकित्सकों द्वारा भविष्य के लिए नियमितिकरण हेतु किसी भी प्रकार का दावा मान्य नहीं होगा।	
07	मानदेय भुगतान में नियमानुसार TDS कटौती की जाएगी।	
08	Walk in Interview में उपस्थित होने के लिए किसी प्रकार का यात्रा भत्ता देय नहीं होगा।	
09	कार्य दिवस सोमवार से शनिवार (कार्य अवधि 08 घण्टा)	

दिनांक 26.07.2024 को पूर्वाहन् 11:30 बजे नगर पंचायत, लातेहार के कार्यालय में Walk in Interview के लिए अपना बायोडाटा, सभी मूल प्रमाण पत्र एवं दो सेट छायाप्रति के साथ उपस्थित होना होगा।

प्रशासक, नगर पंचायत, लातेहार।

PR 330000 Urban Development(24-25)D

चोरी की बढ़ती घटनाओं को लेकर पुलिस प्रशासन को उग्र आंदोलन की दी चेतावनी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

गुमला : गुमला जिला मुख्यालय सहित जिले में चोरी की घटनाओं में हो रही वृद्धि को लेकर , गुमला चेम्बर ऑफ कॉमर्स की आपात बैठक में व्यापारियों के बीच छाया रहा गुमला में बढ़ती हुई चोरी की घटना का मामला , इस पर संज्ञान लेते हुए चैंबर ने निर्णय लिया की बहुत जल्द पुलिस अधीक्षक गुमला से मिलकर इस पर ठोस कदम उठाते हुए कार्यवाही करने की मांग करेगी। आए दिन गुमला में चोरी की घटना को देखते हुए गुमला के व्यापारियों में एवं आम जनों में काफी आक्रोश है। आमजन काफी परेशान और भयभीत हैं। किसी भी कार्यक्रम को लेकर घर बंद कर पुरे परिवार के साथ बाहर जाना मुश्किल हो गया है। गुमला पुलिस प्रशासन के द्वारा अगर चोरी पर अंकुश नहीं लगा तो गुमला चेम्बर को बाध्य होकर बड़े आंदोलन की ओर रुख करना होगा। बैठक में व्यापारियों के द्वारा गुमला बंद करने एवं रोड जाम करने की मांग उठी। पुलिस अधीक्षक से गुमला चेम्बर ऑफ कॉमर्स, गुमला शहर में फिर से मोबाइल टाइगर को बहाल करने की मांग करेगी। बढ़ती गर्मी और पर्यावरण को देखते हुए वृक्षारोपण करने का निर्णय लिया गया। बैठक के अंत में पूर्व अध्यक्ष हिमांशु केशरी की चाची के आकस्मिक निधन पर उनकी आत्मा की शांति के लिए दो मिनट का मौन रखा गया। धन्यवाद ज्ञापन उपाध्यक्ष अभिजीत जायसवाल ने किया। बैठक में अध्यक्ष दामोदर कसेरा, पूर्व अध्यक्ष विनोद केशरी, पवन अग्रवाल, मो सब्बू, निवर्तमान अध्यक्ष दिनेश अग्रवाल, वरिष्ठ उपाध्यक्ष राजेश सिंह, अभिजीत जायसवाल रॉकी, सचिव बबलू वर्मा, नीरज गुप्ता, प्रणय कुमार, राजेश लोहानी, गुरमीत सिंह, बृजकिशोर फोगला, आनंद गुप्ता, संजीव मलानी, रितेश गुप्ता, अमित मंत्री गोलू, पंकज खंडेलवाल, प्रतीक अग्रवाल उपस्थित थे।

कार्यालय नगर परिषद, लोहरदगा
Email id- nagarparishadlohardaga@gmail.com

अति अल्पकालिन कोटेशन आमंत्रण सूचना संख्या–03/2024–25

इच्छुक व्यक्ति/फर्म/आपूर्तिकर्त्ता/निर्माता निम्नांकित सामग्रियों से संबंधित अपनी कोटेशन अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय में समर्पित कर सकते है:–
विज्ञापनदाता का नाम :– कार्यपालक पदाधिकारी, नगर परिषद, लोहरदगा।
कोटेशन प्राप्ति की तिथि एवं समय :– दिनांक– 30.07.2024 को 5:00 बजे अप0 तक।
कोटेशन खोलने की तिथि, समय एवं स्थान:– दिनांक– 31.07.2024 को 3:30 बजे अप0, नगर परिषद, लोहरदगा के सभा कक्ष में।

SL No.	Work Name	Rate Including All Taxes
1	Providing, erecting and commissioning of Vertical Turbine Pump 120 HP as per IS:5120, capable for discharging 450M3/Hrs against a head of 40m, consisting of bronze impellers, stainless steel pump shaft etc. (Make WPIL, Kirloskar)	
2	Cost of consumable materials such as grease, gland packing, packing paper, cotton waste, bulb, rubber insertion, nut bolt etc required for Cutting, welding jointing with common Header line etc all complete of delivery pipe with etc complete at site.	
3	Supplying, and erecting, assembled Fully Automatic Star Delta starter, in a provided cubical panel to operate squirrel cage induction motor working on 380-440 Volt, 3 phase, 50 Hz with no volt coil, over load relay and ON/OFF push buttons, with necessary material and connected to supply, etc complete. (DWSD JSOR 2018-19) Make L&T & Jyoti, Kirloskar	
4	Supplying all labour tools & Tackle for taking out old Damage pump from Intake well.	
5	Providing, erecting and commissioning of Centifual Motor Pump 20 HP as per IS:5120, capable for discharging 400M3/Hrs against a head of 7m, consisting of bronze impellers, stainless steel pump shaft etc. (Make Kirloskar, WPIL)	
6	Cost of consumable materials such as grease, gland packing, packing paper, cotton waste, bulb, rubber insertion, nut bolt etc required for Cutting, welding jointing with Pipe line for collecting water from Infiltration well to Intake well etc all complete at Koyal River	
7	Supplying, and erecting, assembled Fully Automatic Star Delta starter, in a provided cubical panel to operate squirrel cage induction motor working on 380-440 Volt, 3 phase, 50 Hz with no volt coil, over load relay and ON/OFF push buttons, with necessary material and connected to supply, etc complete. (DWSD JSOR 2018-19) Make L&T, Jyoti, Kirloskar.	
8	Supplying of 200 MM Dia football	
9	Supplying 200 MM Dia GI Pipe	

नोट :– कोटेशन की शर्त एंव विस्तृत जानकारी किसी भी कार्य दिवस को नगर परिषद, लोहरदगा के सूचना पट्ट एवं https://udhd.jharkhand.gov.in/ पर देखा जा सकता है।

प्रशासक, नगर परिषद, लोहरदगा

PR 329995 Lohardaga(24-25)#D

कार्यालय, नगर पंचायत, लातेहार

आम सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि लातेहार एवं डुरूआ शहरी जलापूर्ति योजना के तहत विभिन्न उपभोक्ताओं को नगर पंचायत, लातेहार के कार्यालय से तीन नोटिस निर्गत किये जाने के उपरांत अपने आवासीय/व्यवसायीक परिसर में लगाये गये जल संयोजन (Water Connection) के बकाया राशि का भुगतान अब तक नगर पंचायत, लातेहार के जन सुविधा केन्द्र में नहीं किया गया है। वैसे सभी उपभोक्ताओं को निदेशित किया जाता है कि आम सूचना प्रकाशन की तिथि से सात दिनों के अंदर अपने नामों के सामने अंकित राशि को नगर पंचायत, लातेहार के जन सुविधा केन्द्र में आकर जमा करें, अन्यथा सात दिनों की अवधि बीत जाने के उपरांत नगर पंचायत, लातेहार के कार्यालय द्वारा आपके आवासीय/व्यवसायीक परिसर में लगाये गये जल संयोजन विच्छेक कर आपके विरूद्ध निलाम पत्र वाद (Certificate Case) दायर किया जायेगा, तथा इस संबंध में आपके द्वारा बाद में किया गया कोई भी दावा मान्य नहीं होगा। जलकर के बकायादारों का विवरण निम्नवत हैं :–

क्र0	जलकर के बकायदारों का नाम एवं पता	जल संयोजन सं0	नोटिस निर्गत की ज्ञापांक/दिनांक	अद्यतन बकाया राशि (माह जुलाई, 2024 तक)
01	ननकु यादव, पिता– महादेव यादव, डुरूआ, लातेहार	LAT2500040044958	2900/04.11.2023 3064/29.11.2023 138/09.01.2024	18240.00
02	पी0 एम0 राठोर, डुरूआ, लातेहार	LAT2500050044819	2902/04.11.2023 3065/29.11.2023 139/09.01.2024	26845.00
03	जंग बहादुर सिंह, डुरूआ, लातेहार	LAT2500050044858	2903/04.01.2023 3066/29.11.2023 140/09.01.2024	21552.00
04	धर्मचन्द्र अग्रवाल, डुरूआ, लातेहार	LAT2500050044884	2905/04.11.2023 3037/29.11.2023 141/09.11.2024	18240.00
05	मुकेश कुमार गुप्ता, पिता– मोहनलाल गुप्ता, डुरूआ, लातेहार	LAT2500050044899	2906/04.11.2023 3068/29.11.2023 142/09.01.2024	26525.00
06	बजरंगी प्रसाद गुप्ता, पिता–गणेष साव, डुरूआ, लातेहार	LAT2500050044907	2907/04.11.2023 3069/29.11.2023 143/09.01.2024	16572.00
07	तुलसी प्रसाद गुप्ता, पिता– गणेष साव, डुरूआ, लातेहार	LAT2500050044910	2911/04.11.2023 3070/29.11.2023 144/09.01.2024	10680.00
08	धन्नु राम, पिता– राम सुन्दर राम, डुरूआ, लातेहार	LAT2500050044952	2908/04.11.2023 3171/29.11.2023 145/09.01.2024	26655.00
09	प्रमोद कुमार सिंहा, डुरूआ, लातेहार	LAT2500030044822	2910/04.11.2023 3072/29.11.2023 146/09.01.2024	18940.00
10	खुर्षीद आलम, अम्वाटिकर, लातेहार	LAT2500100044830	2946/10.11.2023 3073/29.11.2023 147/09.01.2024	15840.00
11	निषांत अहमद, पिता– स्व0 रमजान, अम्वाटीकर, लातेहार	LAT2500100044867	2950/10.11.2023 3077/29.11.2023 148/09.01.2024	27600.00
12	उदय राम, पिता– स्व0 जतू राम, अम्वाटिकर, लातेहार	LAT2500100044930	2955/10.11.2023 3082/29.11.2023 149/09.01.2024	6221.00
13	कलीम अंसारी, स्व0 शेसजली करीम, अम्वाटिकर, लातेहार	LAT2500100044986	2959/10.11.2023 3086/29.11.2023 150/09.01.2024	11767.00
14	देवेन्द्र कुमार द्विवेदी, पिता– ब्रजेश्वर द्विवेदी, अम्वाटिकर, लातेहार	LAT2500100045029	2961/10.11.2023 3087/29.11.2023 151/09.01.2024	16560.00

प्रशासक, नगर पंचायत, लातेहार

PR 329950 Urban Development(24-25)#D

फिर आतंकी हमलें, सैनिकों का बलिदान व्यर्थ न जाये

ललित गर्ग

केन्द्र सरकार ने कश्मीर में विकास कार्यों को तीव्रता से साकार किया है, न केवल विकास की बहुआयामी योजनाएं वहां चल रही है, बल्कि पिछले 10 सालों में कश्मीर में आतंकमुक्त करने में भी बड़ी सफलता मिली है। बीते साढ़े तीन दशक के दौरान कश्मीर का लोकतंत्र कुछ तथाकथित नेताओं का बंधुआ बनकर गया था, जिन्होंने अपने राजनीतिक स्वार्थों के लिये जो कश्मीर देश के माथे का ऐसा मुकुट था, जिसे सभी प्यार करते थे, उसे डर, हिंसा, आतंक एवं दहशत का मैदान बना दिया।

लगातार जम्मू-कश्मीर में बढ़ रही आतंकी घटनाएं चिन्ता का कारण बन रही है। डोडा जिले में एक आतंकी हमले में कैप्टन समेत सेना के चार जवानों और जम्मू कश्मीर के एक पुलिसकर्मी का बलिदान अब यही दर्शा रहा है कि शांति एवं अमन की ओर लौटा जम्मू-कश्मीर एक बार फिर आतंकवादी आघातकारी घटनाओं की भेंट चढ़ रहा है, इन घटनाओं का माकुल जबाव नहीं दिया गया तो यह घाटी एक बार फिर खूनी घाटी बन जावेगी। क्योंकि कुछ ही दिनों पहले कठुआ में एक सैन्य अफसर सहित पांच जवान आर्तकियों का निशाना बन गए थे। इसके पहले भी जम्मू संभाग में ही सेना के कई जवान आर्तकियों से लोहा लेते हुए अपना सर्वोच्च बलिदान दे चुके हैं। ये बहुत चिंतित करने वाले त्रासद एवं घिनौने घटनाक्रम हैं कि पिछले कुछ समय से कश्मीर घाटी के साथ-साथ जम्मू संभाग में भी आर्तकियों की गतिविधियां बढ़ती जा रही हैं। हाल की कुछ घटनाओं से तो यह भी लगता है कि आर्तकियों ने जम्मू संभाग को अपनी गतिविधियों का प्रमुख केंद्र बना लिया है। एक ऐसे समय जब जम्मू कश्मीर में विधानसभा चुनाव कराने की तैयारी हो रही है, तब आर्तकियों का सक्रिय होना और सफलतापूर्वक अपने मनसूबों को कामयाब करना गंभीर चिंता का विषय है।

ज्यादा चिन्ताजनक यह है कि पाकिस्तान प्रशिक्षित आतंकी न केवल घुसपैठ कर रहे हैं, बल्कि अपनी गतिविधियों को अंजाम देने और इस क्रम में सेना को निशाना बनाने में भी सफल हो रहे हैं। सरकार को उन खूनी हाथों को खोजना होगा अन्यथा खूनी हाथों में फिर खुजली आने लगेगी। हमें इस काम में पूरी शक्ति और कौशल लगाना होगा। आदमखोरों की मांद तक जाना होगा। अन्यथा हमारी खोजी एजेंसियों एवं सेना की काबिलीयत पर प्रश्नचिन्ह लग जाएगा कि कोई दो-चार व्यक्ति कभी भी पूरे प्रांत की शांति और जन-जीवन को अस्त-व्यस्त कर सकते हैं, हमारी संवेदनाओं को झकझोर सकते हैं। संवेदनाओं एवं भावनाओं को झकझोर भी रहे हैं, जब आतंकवादी हमलों में शहीद जवानों के पार्थिव शरीर तिरंगे में लिपटे घर की ड्योढ़ी पर आते हैं तब कारुणिक माहौल को देखकर दिल दहल उठता है क्योंकि देश के लिए अपना सर्वोच्च लुटा देने वाला जवान किसी का बेटा, किसी का पति और किसी का पिता होता है। हर आंख में आंसू होते हैं। किसी की गोद, किसी की मांग सूनी हो जाती है। देशवासी सोचने को विवश हैं कि वे शोक संतप्त परिवार के साथ करुणा और पीड़ा को कैसे बांटें।

डोडा वारदात की जिम्मेदारी लेने वाले ह्यकश्मीर टाइगर्सह्न जैसे आतंकी संगठनों की ताजा बौखलाहट की एक बड़ी वजह जम्मू-कश्मीर में राजनीतिक प्रक्रिया की बहाली को लेकर बढ़ी सरगर्मी है। राज्य में लोकप्रिय सरकार के गठन के लिए अगले चंद महीनों में ही विधानसभा चुनाव होने वाले हैं। ऐसे में, आर्तकियों की बेचैनी समझी जा सकती है कि जिस तरह लोकसभा चुनाव में घाटी में लोग मतदान केंद्रों पर उमड़ पड़े और दशकों पुराना रिकॉर्ड टूटा, अगर विधानसभा चुनाव में लोगों का उत्साह और बढ़ा, तो जिन 'स्लीपर सेल्स' की बदौलत वे दहशत का अपना पूरा कारोबार चलाते हैं, वे भी मुख्यधारा के प्रति आकर्षित होकर, उनके खिलाफ हो सकते हैं। इसलिए उन्होंने घाटी के बजाय जम्मू संभाग में अपनी सक्रियता बढ़ाई है, ताकि लोकतांत्रिक प्रक्रिया को बाधित किया जा सके और सीमा पार के आकाओं से मदद हासिल करने का सिलसिला जारी रहे।

जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 की समाप्ति के बाद हुए पहले लोकसभा चुनाव में रिकॉर्ड मतदान से पाकिस्तान बौखलाया है। इसी का परिणाम है लगातार हो रहे आतंकी हमलें। इन हमलों ने आंतरिक सुरक्षा के लिये नये सिरे से चुनौती पैदा की है। जम्मू में रियासी, कठुआ और डोडा के आतंकी हमले चिन्ता का बड़ा कारण बने है। जम्मू-कश्मीर का माहौल सुधरने के बाद वहां के बाजार, पर्यटक स्थल गुलजार हुए हैं और राज्य की अर्थव्यवस्था सुधर रही है। इसलिए देशद्रोही नहीं चाहते कि कश्मीर में शांति आए और वहां पर निर्वाचित सरकार काम करे। केन्द्र में गठबंधन वाली मोदी सरकार के सामने यह एक बड़ी चुनौती है। क्या इन आतंकी घटनाओं को केन्द्र सरकार ने गंभीरता से नहीं लिया है? जो सरकार पाकिस्तान में घुस कर बदला ले सकती है, वह सरकार अब तक शांत क्यों है? ऐसा क्यों हो रहा है, इसकी तह तक जाने की जरूरत है। आतंकी जिस तरह अपनी रणनीति बदलकर सुरक्षा बलों को कहीं अधिक क्षति पहुंचाने में समर्थ दिखने लगे हैं, वह किसी बड़ी साजिश का संकेत है। एक ओर सीमा पार से होने वाली आर्तकियों की घुसपैठ पर प्रभावी नियंत्रण करना होगा, वहीं दूसरी ओर पाकिस्तान को नए सिरे से सबक भी सिखाना होगा। यह इसलिए अनिवार्य हो गया है, क्योंकि पिछले कुछ समय में आतंकी हमलों में बलिदान होने वाले सैनिकों की संख्या कहीं अधिक बढ़ी है।

पाकिस्तान सत्ता प्रतिष्ठानों की मदद से यह आतंक का खेल फिर शुरू कर रहा है। कहीं न कहीं दिल्ली में बनी गठबंधन सरकार को यह संदेश देने की कोशिश की जा रही है कि पाक पोषित आतंकवादी जम्मू-कश्मीर में शांति एवं अमन को कायम नहीं रहने देंगे। एक आंकड़े के अनुसार पिछले तीन वर्ष में करीब 50 जवानों को अपना बलिदान देना पड़ा है। यह बिल्कुल भी स्वीकार्य नहीं। आतंक को करारा जवाब केवल तभी नहीं दिया जाना चाहिए, जब एक साथ बड़ी संख्या में सुरक्षा बलों के जवानों को बलिदान देना पड़े। वास्तव में हमारे एक भी सैनिक का बलिदान व्यर्थ नहीं जाना चाहिए। डोडा की घटना के बाद यह जो कहा जा रहा है कि सैनिकों के बलिदान का बदला लिया जाएगा, उसे न केवल पूरा करके दिखाया जाना चाहिए, बल्कि आर्तकियों, उनके आकाओं और उन्हें सहयोग-समर्थन देने वालों पर ऐसा करारा प्रहार किया जाना चाहिए, जिससे वे अपनी हरकतों से हमेशा के लिए बाज आएं। पाकिस्तान भले ही आर्थिक संकट और राजनीतिक अस्थिरता से जूझ रहा हो, लेकिन वह जम्मू कश्मीर में पहले की तरह ही आतंकवाद को बढ़ावा देने में लगा हुआ है। उसकी घरेलू व विदेश नीति 'कश्मीर' पर ही आधारित है। चूंकि इसकी भरी-पूरी आशंका है कि चीन उसे उकसाने में लगा हुआ होगा, इसलिए भारत को कहीं अधिक सतर्क रहना होगा।

केन्द्र सरकार ने कश्मीर में विकास कार्यों को तीव्रता से साकार किया है, न केवल विकास की बहुआयामी योजनाएं वहां चल रही है, बल्कि पिछले 10 सालों में कश्मीर में आतंकमुक्त करने में भी बड़ी सफलता मिली है। बीते साढ़े तीन दशक के दौरान कश्मीर का लोकतंत्र कुछ तथाकथित नेताओं का बंधुआ बनकर गया था, जिन्होंने अपने राजनीतिक स्वार्थों के लिये जो कश्मीर देश के माथे का ऐसा मुकुट था, जिसे सभी प्यार करते थे, उसे डर, हिंसा, आतंक एवं दहशत का मैदान बना दिया। लेकिन वहां विकास एवं शांति स्थापना का ही परिणाम रहा कि चुनाव में लोगों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेकर लोकतंत्र में अपना विश्वास व्यक्त किया। बढ़ती आतंकी घटनाओं पर गृहमंत्री अमित शाह और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह नजर बनाए हुए हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि सुरक्षा बल आतंकवादियों को मुंहतोड़ जवाब देगा लेकिन रक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि सुरक्षा बलों को आर्तकियों के प्रति अपनी रणनीति बदलनी होगी और आतंकी जिन बिलों में छिपे होंगे उन्हें वहां से निकालकर ढेर करना होगा। आतंकवाद पर अंतिम प्रहार करने की तैयारी करनी होगी और साथ ही आर्तकियों के मददगारों की भी पहचान करनी होगी, तभी आतंकवाद को नेस्तनाबूद किया जा सकता है।

पुलिस के आला अधिकारी यदि यह कह रहे हैं कि घाटी के नागरिक समाज में पाकिस्तानी 'घुसपैठ' को बढ़ावा देने में कतिपय राजनीतिक दलों का रुख भी जिम्मेदार रहा है, तो क्या यह आधारहीन है? इसका मुकाबला हर स्तर पर हम एक होकर और सजग रहकर ही कर सकते हैं। यह भी तय है कि बिना किसी की गद्दारी के ऐसा संभव नहीं होता है। ताजा आतंकी हमलों के विकराल रूप कई संकेत दे रहे हैं, उसको समझना है। कई सवाल खड़े कर रहा है, जिसका उत्तर देना है। यह पाकिस्तान का बड़ा षड़यंत्र है इसलिए इसका फैलाव भी बड़ा हो सकता है। ये घटनाएं चिल्ला-चिल्ला कर कह रही हैं हमारी खोजी एजेन्सियों से, हमारी सुरक्षा व्यवस्था से कि वक्त आ गया है अब जिम्मेदारी से, सख्ती से और ईमानदारी से जम्मू-कश्मीर को संभालें।

संपादकीय

'भूमिपुत्र' की राजनीति

कर्नाटक की सिद्धारमैया सरकार ने भारी विरोध के बाद बुधवार को उस विवादित विधेयक पर रोक लगा दी है, जिसके तहत निजी क्षेत्र में कन्नड़. लोगों के लिए नौकरियों का प्रावधान किया गया था। इस विधेयक को बृहस्पतिवार को विधानसभा में प्रस्तुत किया जाना था। हैरानी की बात है कि संविधान की मूल भावनाओं को समझे बगैर कर्नाटक की कैबिनेट ने इस विधेयक को मंजूरी दी। कर्नाटक राज्य उद्योगों, कारखानों और अन्य प्रतिष्ठानों में स्थानीय उम्मीदवारों के लिए रोजगार विधेयक-2024 के प्रस्तावों के मुताबिक, निजी क्षेत्र के कंपनियों को प्रबंधन स्तर की 50 प्रतिशत और गैर-प्रबंधन स्तर की 70 प्रतिशत नौकरियां कन्नड़. लोगों को अनिवार्य रूप से देनी होगी। इस विधेयक में यह भी प्रावधान था कि निजी क्षेत्रकी कंपनियों में समूह सी और डी श्रेणी के पदों के लिए स्थानीय निवासियों को 100 फीसद आरक्षण दिया जाएगा। इस तरह की 'भूमिपुत्र' नीति लागू करने वाला कर्नाटक पहला राज्य नहीं है। आंध्र प्रदेश ने 2019 में, हरियाणा ने 2020 में इसी तरह के मिलते-जुलते विधेयक पारित किए थे। वस्तुतः स्थानीय लोगों को निजी प्रतिष्ठानों में आरक्षण देने का प्रावधान शेष भारत के नागरिकों के साथ भेदभाव पैदा करता है जो भारतीय संविधान के अनुच्छेद 14 का उल्लंघन करता है, जिसमें कहा गया है कि राज्य भारत के राज्य क्षेत्र में किसी व्यक्ति को कानून के समक्ष समानता से या कानूनों के समान संरक्षण से वंचित नहीं करेगा। इन्हीं आधारों पर पंजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय में दो सदस्यीय खंड़पीठ ने 17 नवम्बर, 2023 को हरियाणा सरकार के कानून हरियाणा राज्य स्थानीय उम्मीदवारों के रोजगार अधिनियम, 2020 रद्द कर दिया जिसके तहत राज्य के निवासियों के लिए हरियाणा के उद्योगों में 75 फीसद आरक्षण का प्रावधान था। निजी कंपनियों का मानना है कि ऐसे कानून नियोक्ताओं के संवैधानिक अधिकारों पर कुठाराघात करते हैं। निजी क्षेत्र की नौकरियां कर्मचारियों की योग्यता और कौशल पर आधारित हैं। वस्तुतः नई आर्थिक नीतियों के कारण अब सार्वजनिक क्षेत्र में नौकरियां सीमित हो गई हैं। रोजगार के ज्यादातर अवसर अब निजी कंपनियों में ही रह गए हैं। इसलिए सरकारों को चाहिए कि ऐसे कदम न उठाएं जिनसे निजी कंपनियों के हितों पर चोट पहुंचे।

चिंतन-मनन

कर्म के पाप-पुण्य में फंस जाता है जीव

ईश्वर क्षेत्रज्ञ या चेतन है, जैसा कि जीव भी है, लेकिन जीव केवल अपने शरीर के प्रति सचेत रहता है, जबकि भगवान समस्त शरीरों के प्रति सचेत रहते हैं। चूंकि वे प्रत्येक जीव के हृदय में वास करने वाले हैं, अतएव वे जीवविशेष की मानसिक गतिशीलता से परिचित रहते हैं। परमात्मा प्रत्येक जीव के हृदय में ईश्वर या नियंता के रूप में वास कर रहे हैं और जैसा जीव चाहता है वैसा करने के लिए जीव को निर्देशित करते रहते हैं। जीव भूल जाता है कि उसे क्या करना है। पहले तो वह किसी एक विधि से कर्म करने का संकल्प करता है, लेकिन फिर वह अपने ही कर्म के पाप-पुण्य में फंस जाता है। वह एक शरीर को त्याग कर दूसरा शरीर ग्रहण करता है। चूंकि इस प्रकार वह आत्मा देहांतरण कर जाता है, अत उसे अपने विगत (पूर्वकृत) कर्मो का फल भोगना पड़ता है। ये कार्यकलाप तभी बदल सकते हैं जब जीव सतोगुण में स्थित हो और यह समझे कि उसे कौन से कर्म करने चाहिए। यदि वह ऐसा करता है तो उसके विगत कर्मो के सारे फल बदल जाते हैं। इसीलिए हमने यह कहा है कि पांच तत्वों- ईश्वर, जीव, प्रकृति, काल तथा कर्म में से चार शात हैं, कर्म शात नहीं है। परम चेतन ईश्वर जीव से इस मामले में समान हैं- भगवान तथा जीव दोनों की चेतनाएं दिव्य हैं। यह चेतना पदार्थ के संयोग से उत्पन्न नहीं होती है। ऐसा सोचना भ्रांतिमूलक है। किंतु भगवान की चेतना भौतिकता से प्रभावित नहीं होती है। भगवान कहते हैं- जब वे इस भौतिक वि में अवतरित होते हैं तो उनकी चेतना पर भौतिक प्रभाव नहीं पड़ता। यदि वे इस तरह प्रभावित होते तो दिव्य विषयों के संबंध में उस तरह बोलने के अधिकारी न होते जैसा कि वे भगवद्गीता में बोलते हैं। भौतिक कल्मष-ग्रस्त चेतना से मुक्त हुए बिना कोई दिव्य-जगत के विषय में कुछ नहीं कह सकता। अतः भगवान भौतिक दृष्टि से कलुषित (दूषित) नहीं हैं। भगवद्गीता तो शिक्षा देती है कि हमें इस कलुषित चेतना को शुद्ध करना है।

परमहंस योगानन्द - एक प्रेरणादायी महान गुरु

अलकेश त्यागी

सतगुरु सम कोई नहीं, सात द्वीप नौ खंड। तीन लोक ना पाइए, अरु इक्कीस ब्रह्मण्ड। अर्थात, सात द्वीप, नौ खंड, तीन लोक और इक्कीस ब्रह्मांड में भी गुरु के समान हितकारी कोई नहीं। जिस गुरु की महिमा कबीर जी के ये शब्द बता रहे हैं वह सद्गुरु कौन है। वास्तव में वह मनुष्य सद्गुरु है जिसकी चेतना ईश्वर के प्रकाश को पूर्णतः ग्रहण करने और उस प्रकाश को परावर्तित करने के लिए शुद्ध हो चुकी है। कोयले और हीरे को सूर्य के प्रकाश में रखें तो केवल हीरा ही सूर्य के प्रकाश को परिवर्तित करता है। सद्गुरु मनुष्य रूपी वह हीरा है जो ईश्वरीय प्रकाश को पूर्णतः परावर्तित कर सकता है।

सदगुरु शिष्य को, शब्द ज्ञान को ही ज्ञान मान लेने की भूल से बचाकर उसमें निहित अर्थ को जीवन में उतारना सिखाता है। वह अपने शिष्य पर पृथ्वीलोक, सूक्ष्मलोक और कारणलोक में भी दृष्टि रखता है। अर्थात, गुरु शिष्य संबंध शाश्वत है। ऐसे ही एक सद्गुरु परंपरा के वाहक योगदा सत्संग सोसाइटी के संस्थापक तथा विश्व प्रसिद्ध पुस्तक योगी कथामृत के लेखक श्री श्री परमहंस योगानंदजी हुए जिन्होंने केवल ईश्वर की खोज के लिए पूरे विश्व को प्रेरित ही नहीं किया बल्कि दिन प्रतिदिन अभ्यास की जाने वाली एक वैज्ञानिक प्रविधि क्रियायोग भी दी। इसके नियमित अभ्यास से, हर मनुष्य जो मूल रूप से एक आत्मा है और जो माया के पर्दे से ढकी है, इस पर्दे में एक छोटा सा छेद कर लेता है। समय के साथ जैसे-जैसे अपने प्रयासों से वह इस छिद्र को बड़ा करता जाता है वैसे-वैसे उसकी चेतना का विस्तार होता जाता है और आत्मा अधिकाधिक व्यक्त होती जाती है। अंततः एक दिन पर्दा फट जाता है और आत्मा पूर्णता से व्यक्त होकर, शिष्य को स्वयं का व माया का स्वामी बना देती है।

महान गुरुओं की इस परंपरा का जन्म 1861 में द्वारहाट में हुआ, जब अमर गुरु महावतार बाबाजी ने बनारस के एक गृहस्थ श्री श्यामाचरण लाहिड़ी को रहस्यमय ढंग से दूनागिरी बुलाकर वैज्ञानिक प्रविधि क्रियायोग की दीक्षा दी जो बाद में लाहिड़ी महाशय के नाम से प्रसिद्ध हुए। उनके शिष्य श्री युक्तेश्वरगिरीजी को जनवरी 1894 के कुंभ मेले में दर्शन देकर महावतार बाबाजी ने उनसे पूर्व व पश्चिम के धर्म ग्रंथों की समानता पर एक पुस्तक लिखने तथा कुछ समय बाद उनके पास भेजे जाने वाले एक शिष्य को पश्चिम में क्रियायोग के प्रचार एवं प्रसार के लिए प्रशिक्षित करने को कहा। वह शिष्य योगानंद जी ही थे जो उस समय मात्र एक वर्ष के थे। शिक्षित-प्रशिक्षित होकर योगानंद जी 1920 में बोस्टन में होने वाली अंतरराष्ट्रीय धर्म संसद में भारत का प्रतिनिधित्व करने पहुंचे। उनके संबोधन से प्रभावित हो, मिले व्याख्यानों के निमंत्रण ने उन्हें वहाँ अध्यात्म की प्यासी आत्माओं का पता दे दिया। तथा वहां भी उन्होंने सेल्फ - रियलाइजेशन फेलोशिप नामक संस्था की स्थापना कर दी। वे भारत में पहले ही 1917 में योगदा सत्संग सोसाइटी ऑफ इंडिया की नींव डाल चुके थे। यह दोनों संस्थाएं पिछले 100 वर्षों से निरंतर क्रियायोग के प्रचार प्रसार में सक्रिय हैं। विश्व के देशों में योग के प्रति आग्रह तथा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की स्वीकार्यता में योगानंदजी के कार्यों का बड़ा योगदान है। ऐसी महान परंपरा के सभी गुरुओं को गुरु पूर्णिमा के अवसर पर सादर नमन।

सोशल मीडियाः महंगा पड़ता रील्स का दिखावा

रजनीश कपूर

सोशल मीडिया के इस युग में आजकल जिसे देखो वो अपने स्मार्ट फोन पर रील्स बनाते रहते हैं। कभी-कभी तो कुछ लोग इतने जोखिम भरे रील्स बनाते हैं जो जानलेवा हो जाते हैं। कितनों की मौत हो जाती है तो कई लोग आजीवन विकलांग हो जाते हैं, परंतु आज सोशल मीडिया पर रील्स व पोस्टों से होने वाले जिस नुकसान की बात हम करेंगे वह इन सब से अलग है।

दरअसल, सोशल मीडिया पर डाले जाने वाली पोस्ट और रील्स के चलते अब देश की संस्थाओं पर भी सवाल उठने लगे हैं। ऐसा इसलिए हुआ है क्योंकि सरकारी नौकरी पर तैनात लोगों ने या नए-नए भर्ती हुए अभ्यर्थी सोशल मीडिया पर कुछ ऐसा पोस्ट करते हैं जो उन्हें नहीं करना चाहिए। ये शौक उन्हें बहुत महंगा पड़ जाता है। मामला एक महिला प्रशिक्षार्थी आईएएस अधिकारी का है, जिसने नई मिली सत्ता के नशे में कुछ ऐसा कर डाला कि संघ लोक सेवा आयोग की प्रतिष्ठा भी दांव पर लग गई। पुणे जिला मुख्यालय में प्रशिक्षण के लिए नियुक्ति के दौरान अपनी अनुचित मांगों और अभद्र व्यवहार के कारण 2023 बैच की आईएएस पूजा खेडकर आजकल काफी चर्चा में हैं।

इन पर आरोप है कि बतौर प्रोबेशन आईएएस अधिकारी रहते हुए इन्होंने सत्ता का दुरुपयोग किया। हद तो तब हुई जब पूजा की अनुचित मांगों को प्रशासन द्वारा स्वीकारा नहीं गया तो उन्होंने अपनी निजी विदेशी लग्जरी कार का इस्तेमाल किया और उसी पर लाल बत्ती लगवा डाली। उन पर यह भी आरोप है कि एडिशनल कलेक्टर के छुट्टी पर रहने के दौरान खेडकर ने उनके चेंबर पर कब्जा कर लिया और अपनी नेमप्लेट तक लगा दी। इस तरह ताकत का प्रदर्शन करने के शौक ने उन्हें इस हद तक गिरा दिया कि वे नियम और कानून की खुलेआम धज्जियां उड़ाने लग गइ। इतना ही नहीं जैसे ही इनकी अनुचित मांगों के किस्से मीडिया में आने लगे तो इनके चयन को लेकर भी सवाल उठने शुरू हो गए। उल्लेखनीय है कि, सिविल सेवा परीक्षा के दौरान पूजा खेडकर ने यह दावा किया था कि वह मानसिक रूप से दिव्यांग हैं और उन्हें देखने में भी समस्या है। इसी दावे के चलते पूजा को रियायत मिली और कम अंक पाने के बावजूद उन्हें आईएएस में चुन लिया गया। परंतु हैरानी की बात यह है कि बिना मेडिकल जांच के ही उनका प्रशासनिक सेवा में चयन कैसे हुआ? पांच बार मेडिकल जांच को चकमा देने के बाद, कुछ सप्ताह बाद उन्होंने एक निजी क्लिनिक की जांच रिपोर्ट जमा करवाई जिसे संघ लोक सेवा आयोग ने अस्वीकार कर दिया। इस सबके बावजूद न सिर्फ पूजा का चयन आईएएस में हुआ बल्कि नियमों के विरुद्ध उन्हें ट्रेनिंग के लिए उनके गृह राज्य में ही भेज दिया गया, जबकि गृह राज्य में पोस्टिंग सेवाकाल के अंत में विशेष परिस्थितियों में दी जाती है। मामले के तूल पकड़ने पर पूजा को उनकी ट्रेनी पोस्ट से हटा कर वापस मसूरी के लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी भेज दिया गया है जहां पूजा को उन पर लगे आरोपों की जांच होने तक रहना होगा।

यहां सवाल पूजा का नहीं है बल्कि आईएएस बनने या प्रशासनिक सेवा में चुने जाने वाले हर उस उम्मीदवार का है जिसके माता-पिता प्रभावशाली अफसर या बड़े नेता हैं। वरना क्या वजह है कि किसी बड़े नेता के बेटा-बेटी का सामान्य से भी कम बुद्धिमता होने के बावजूद आईएएस जैसी कठिन परीक्षा में एक बार में ही चयन हो जाता है? जबकि मेहनत और ईमानदारी से यूपीएससी की तैयारी करने वाले लाखों साधारण युवाओं का कई-कई प्रयासों के बाद भी चयन नहीं हो पाता? इन सब परतों से पर्दा तब उठता है जब प्रभावशाली अभिभावकों के ऐसे ह्यहोनहार' बालक सोशल मीडिया पर कुछ ऐसा पोस्ट कर देते हैं जो उनके मानसिक स्तर को दशार्ता है।

आपको याद होगा कि उत्तर प्रदेश के एक आईएएस अधिकारी अभिषेक सिंह द्वारा गुजरात चुनाव में ड्यूटी के दौरान सरकारी कार के आगे खड़े होकर खिंचवाई गई फोटो सोशल मीडिया पर काफी वायरल हुई थी। इसका संज्ञान लेते हुए केंद्रीय निर्वाचन आयोग ने उनके आचरण को अनुचित माना और उन्हें चुनाव की ड्यूटी से हटा दिया था, परंतु अभिषेक जैसे आपको कई अधिकारी मिल जाएंगे जो कि चर्चा में बने रहने के लिए अपने पद की गरिमा का ध्यान न करके सोशल मीडिया पर ना जाने क्या-क्या डालते हैं। मामला पूजा खेडकर का हो या किसी प्रभावशाली मां-बाप के बेटे-बेटी का हो, ऐसी क्या मजबूरी है कि इन 'होनहारों' को यूपीएससी के चयन में एक के बाद एक छूट दे दी जाती है? जबकि किसी भी साधारण उम्मीदवार के साथ किसी भी तरह की रियायत नहीं दिखाई जाती। पूजा के मामले के बाद ऐसे कई और उदाहरण भी सामने आए हैं जहां फर्जी दस्तावेजों के आधार पर कई उम्मीदवारों ने सिविल सेवा में बड़ी आसानी से भर्ती पाई। इस सबसे संघ लोक सेवा आयोग की निष्पक्षता पर भी सवाल उठने लगे हैं। देखना यह होगा कि ऐसी अनियमितताओं के लिए किस-किस को दोषी पाया जाता है?

एक नजर

देवेंद्रनाथ महतो समेत दर्जनों आंदोलनकारी अस्पताल रेफर

रांची : राज्य के सहायक पुलिस कर्मी स्थाईकरण, वेतन बढ़ोतरी एवं अपने अन्य मांगों को लेकर पिछले 18 दोनों से आंदोलन जारी। झारखंडी भाषा खतियान संघर्ष समिति ने सहायक पुलिस कर्मियों को अपना समर्थन दे रहे हैं। कल बुधवार को जेविकेएसएस उपाध्यक्ष देवेंद्रनाथ महतो द्वारा घोषणानुसार आज शुक्रवार को सीएम आवास घेराव किया गया। सहायक पुलिसकर्मी मोराबादी मैदान से चरणबद्ध पैदल मार्च करते हुए सीएम आवास तक पहुंचे। और अपने मांगों को लेकर सीएम आवास का घेराव करते हुए नारेबाजी किया गया। बताते चलें कि आज पैदल मार्च के दौरान आंदोलनरत सहायक कर्मी और प्रशासनिक पुलिस बल में जबरदस्त नोक झोंक भी हुआ। एवं जमकर लाठी चार्ज भी हुआ। सहायक पुलिस कर्मियों को आगे जाने से रोकने की कोशिश की गई। लेकिन कई बेरीकेटिंग को तोड़ते हुए सीएम आवास तक पहुंच गए। देवेंद्रनाथ महतो समेत आंदोलनरत दर्जनों पुलिसकर्मी पर जमकर लाठीचार्ज हुई। आंदोलन स्थल में देवेंद्रनाथ महतो बेहोश हो गए। आनंन फानन देवेंद्रनाथ महतो को विशेष स्वास्थ्य टीम के निगरानी में रिम्स अस्पताल रेफर किया गया। जहां फिलहाल इलाजरत है। देखते ही देखते रिम्स परिसर में भी शुभचिंतकों की काफी भीड़ लग गई। आज की इस घेराव में इंतेशाम अली, रविंद्र कुमार, संतोष महतो, मार्शल आदि हजारों संगठन के कार्यकर्ता भी शामिल रहे।

दुष्कर्म के आरोपी को 10 वर्ष की कारावास

गुमला : गुमला व्यवहार न्यायालय गुमला के एडीजे वन प्रेम शंकर की अदालत ने शुक्रवार को दुष्कर्म के आरोपित पालकोट प्रखंड का तुंडरटोली निवासी विरेंद्र गोप को धारा 376(2)(एन) दस वर्ष का कारावास और दस हजार रुपये अर्थदंड की सजा सुनाई है। अर्थदंड की राशि नहीं देने पर छह माह का अतिरिक्त कारावास भुगतना होगा। घटना दो अगस्त 2020 की है। आरोपित विरेंद्र ने पालकोट की एक युवती के साथ दुष्कर्म किया था। इसके बाद उसे डरा धमका दिया था। लगातार कई बार दुष्कर्म की घटना को अंजाम देने के बाद पीड़िता ने इसकी शिकायत अपने परिजनों से की। इसके बाद मामला दर्ज कराया गया था।

अलग-अलग सड़क दुर्घटना में तीन लोग घायल

गुमला : गुमला जिला अंतर्गत स्थित पालकोट थाना क्षेत्र में दो अलग अलग सड़क दुर्घटना में तीन लोग हुए घायल। पालकोट थाना क्षेत्र के सोलगा गांव के समीप सुबह आठ बजे के आसपास एक सिफ्ट डीजार्यस कार पलट गयी। जिसमें सवार पिता पुत्र घायल हो गये। जिसे गांव के आस पास के लोगो के द्वारा पालकोट सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पालकोट ईलाज के लिए 108 एंबुलेंस से भेजा गया। जानकारी सूत्रो के अनुसार पिता सत्यनारायण सिंह व पुत्र अंरबिद सिंह औरंगाबाद से राउरकेला जा रहे थे। जैसे ही सोलगा गांव पहुंचे तो सामने से एक तेज रफ्तार से पीकअप वैन आ गयी। चुंकी वाहन तेज रफ्तार में थी व उस जगह तीखा मोड़ भी है। उसे बचाने के दौरान कार सड़क के नीचे उतर गया और सड़क के किनारे एक बिजली का खंभा को टक्कर मारते हुए कार पलट गयी। सुचना पालकोट पुलिस को दिया गया पालकोट पुलिस मौके पर पहुंचकर कार में रखे सभी समानो को कब्जे में कर लिया। सत्यनारायण सिंह टांसपोर्ट का काम है उसु सिलसिले में राउरकेला जा रहे थे दोनों खतरे से बाहर हैं।

उपायुक्त ने सीएसआर मामलों को लेकर कंपनी तथा प्रशासनिक अधिकारियों के साथ की समीक्षा बैठक

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

गुमला : गुमला जिला मुख्यालय में शुक्रवार को उपायुक्त कर्ण सत्यार्थी की अध्यक्षता में उद्योग विभाग एवं सीएसआर मामलों को लेकर कंपनी तथा प्रशासनिक अधिकारियों के साथ समीक्षात्मक बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में उपायुक्त ने पदाधिकारियों द्वारा प्राप्त प्रतिवेदन के आधार पर सीएसआर कार्यों की समीक्षा की गई। बैठक में मुख्य रूप से सीएसआर हिंडालको कंपनी अंतर्गत आने वाले क्षेत्रों के विकास करने हेतु आवश्यक निर्देश दिए गए। प्रबंधक (सीएसआर) हिंडाल्को कंपनी द्वारा शिक्षा, स्वास्थ्य, विभिन्न संरचनाओं के निर्माण आदि के कार्य किए जा रहे हैं। उक्त सभी कार्यों की उपयुक्त ने बिंदुवार समीक्षा की। इस दौरान सीएसआर मद से आवासीय विद्यालयों की मरम्मती, विद्यालयों एवं अन्य स्थानों पर लगाए जा रहे सोलर लाइट की सुविधा, उच्च /मध्य विद्यालयों एवं आंगनवाड़ी केंद्रों की मरम्मती, बाउंड्री वॉल निर्माण आदि की समीक्षा की। उपायुक्त ने कुछ कार्यों में धीमी कार्य प्रगति को देखते हुए नाराजगी व्यक्त की। इसके साथ ही हिंडालको कंपनी द्वारा पिछले वित्तीय वर्ष 2023-24 में किए गए कार्यों एवं इस वित्तीय में हिंडालको द्वारा किए जाने वाले कार्य योजनाओं की रिपोर्ट की मांग की। उपायुक्त ने इसके साथ ही पीएचडी विभाग के सहायक कार्यपालक अभियंता को सीएसआर के क्षेत्रों में सभी प्राकृतिक जल स्त्रोतों को चिन्हित करते हुए, उससे आस पास के गांव तक पेय जल आपूर्ति के कनेक्शन करने हेतु निर्देश दिए गए एवं योजना तैयार करने की बात कही। इसके अलावा अन्य कई मुख्य बिंदुओं पर चर्चा करते हुए उपायुक्त द्वारा आवश्यक दिशा निर्देश दिया गया । बैठक में उपस्थित बैठक में मुख्य रूप से जीएम डीआईसी, सिविल सर्जन, जिला खनन पदाधिकारी, अंचल अधिकारी विशुनपुर , अंचल अधिकारी घाघरा, हिंडालको लोहरदगा प्रबंधकों के अलावा अन्य संबंधित पदाधिकारी एवं कर्मी उपस्थित थे।

पूर्व मंत्री, नामधारी एवं आलोक चौरसिया ने सिर्फ अपनी संपत्ति बढ़ायी : रूचिर तिवारी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

पलामू : भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के जिला सचिव सह डाल्टनगंज भंडरिया के भावी विधायक उम्मीदवार रूचिर कुमार तिवारी ने डाल्टनगंज विधानसभा क्षेत्र में विकास का एक भी काम नहीं होने पर चिंता व्यक्त किया है उन्होंने कहा कि इस विधानसभा क्षेत्र में जितने भी जनप्रतिनिधि रहे उन्होंने रोजगार के सवाल पर एक भी काम नहीं किया चाहे पांच बार के विधायक एवं स्पीकर रहे श्री इंद्र सिंह नामधारी जी, पूर्व मंत्री कें एन त्रिपाठी जी एवं अभी वर्तमान भाजपा विधायक आलोक चौरसिया इन सभी ने अपने कार्यकाल से लेकर अभी तक सिर्फ अपनी संपत्ति बढ़ाने का काम किया छात्रों एवं नौजवानों के रोजगार के लिए पलामू जिला में एक भी नया

रोजगार सृजन नहीं होने से राज्य से बढ़ा पलायन : भाकपा

उद्योग एवं फैक्ट्री नहीं लगवाया न ,हीं नौजवानों के बीच रोजगार कैसे सृजित हो इस पर कोई ध्यान दिया सभी पूर्व जनप्रतिनिधि एवं वर्तमान अपने एवं अपने रिश्तेदारों के नाम से बीएड कॉलेज, स्कूल ,मॉल आदि खोलकर केवल पैसा का उगाही करने का काम किया है। और आज जब विधानसभा चुनाव होने की भनक लग गई है तो यह लोग फिर से डाल्टनगंज के भोली भाली जनता को ठगने के लिए एवं वोट लेने के लिए तैयार है ऐसे जनप्रतिनिधि को जनता इस बार नकारेगी। वही झारखंड सरकार के द्वारा लगाया जोरदार में गया मेघा डेरी प्लांट से भी पलामू वासियो को कोई फायदा नहीं मिला यहां किसानों एवं पशुपालकों से डायरेक्ट दूध नहीं लिया जाता है जिससे मेघा प्लांट में लगा करोड़ों रुपया बर्बाद हो गया या किसी काम का नहीं रहा। आज भी यहां के नौजवान 10 हजार की नौकरी करने के लिए पंजाब और हरियाणा जाने को विवश है एवं हादसा का शिकार हो रहे हैं।

खतियानी झारखंडी पार्टी सिल्ली की प्रखंड कमेटी का हुआ गठन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

सिल्ली : सिल्ली खतियानी झारखंडी पार्टी का सिल्ली प्रखंड कमेटी का गठन 18 जुलाई को सिल्ली प्रधान कार्यालय में संपन्न हुआ जिसमे सिल्ली प्रखंड के 20पंचायत के कार्यकर्ता शामिल हुए। जिसमें खतियानी झारखंडी पार्टी के केंद्रीय अध्यक्ष सा सिल्ली के पूर्व विधायक अमित कुमार महतो उपस्थित हुए सिल्ली प्रखंड अध्यक्ष के लिए मुरी पश्चिम बड़ा मुरी निवासी संतोष महली का नाम पर प्रस्ताव रखा गया। जिसमें सर्व सम्मति से उनका नाम चयन किया गया। प्रखंड सचिव के लिए अनिल कुमार महतो और उपाध्यक्ष के लिए जीतू महतो का नाम पर सहमति बना साथ ही साथ सिल्ली प्रखंड बुद्धिजीवी मोर्चा और युवा मोर्चा का भी गठन किया गया। सिल्ली प्रखंड बुद्धिजीवी मोर्चा का अध्यक्ष इमाम अंसारी का नाम का प्रस्ताव आया जिसे सर्व सहमति से उनका नाम चयन किया गया। सचिव के लिए नरसिंग महतो और उपाध्यक्ष के लिए जोहार यादव का नाम सहमति से किया गया। युवा मोर्चा सिल्ली प्रखंड अध्यक्ष के लिए बुधु महतो (इन्द्रनाथ) का नाम का प्रस्ताव आया जिसे सर्व सहमति से पारित किया गया।

आरक्षण बचाओ संघर्ष समिति ने मुख्यमंत्री को सौंपा ज्ञापन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

पलामू : पलामू में चौकीदार बहाली के विज्ञापन संख्या 1/2024 दिनांक 02/07/24 जिसमें अनुसूचित जाति के लोगों का आरक्षण शून्य दिखाया गया है इसके विरोध में चौकीदार बहाली में आरक्षण बचाओ संघर्ष समिति पलामू का एक शिष्टमंडल रांची में हेमंत सोरेन मुख्यमंत्री मंत्री झारखंड सरकार को एक ज्ञापन सौंपकर वर्तमान विज्ञापन को निरस्त कर नए सिरे से विज्ञापन जारी कर अनुसूचित जाति का पलामू जिला में जो 27% आरक्षण है उसके तहत बहाली करने का मांग किया। इस पर मुख्यमंत्री जी ने आशवासन दिया कि हम देख लेते हैं पता कर अगर गलत हुआ है तो मैं इसे निरस्त करा कर नए सिरे से बहाली की प्रक्रिया करवाएंगे। इस शिष्टमंडल में चौकीदार बहाली में आरक्षण बचाओ संघर्ष समिति पलामू सह वीर बाबा चौहरमल कल्याण समिति पलामू जिला अध्यक्ष संदीप पासवान, संघर्ष समिति पलामू के संरक्षक सह वीर बाबा चौहरमल कल्याण समिति पलामू जिला उपाध्यक्ष बिनय पासवान सहित अन्य लोग शामिल थे।

बजरंग दल के सदस्यों को नियमित प्रशिक्षण के द्वारा पारंगत बनाया जायेगा : दीपक ठाकुर

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

पलामू : पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार पांच प्रखंडों की प्रशिक्षण शिविर का आयोजन छतरपुर के परी मैरिज हॉल में आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण शिविर में छतरपुर, नवा बाजार, नौडीहा बाजार, पिपरा और हरिहरगंज के बजरंगियों ने हिस्सा लिया। प्रशिक्षण तीन सत्र में चला। संगठन की बारीकियां और तौर तरीके से सभी बजरंगियों को परिचित कराया गया। प्रशिक्षण शिविर में बजरंग दल के प्रांत संयोजक दीपक ठाकुर ने सभी बजरंगियों का हौसला बढ़ाते हुए उन्हें शस्त्र और शास्त्र के ज्ञान में पारंगत होने के लिए प्रेरित किया। संगठन ने हर महीने जिला में दो-तीन जगह पर सामूहिक रूप से सभी प्रखंड के बजरंगियों के प्रशिक्षण शिविर प्रारंभ करने का निर्णय लिया है। बजरंग दल के प्रांत संयोजक दीपक ठाकुर ने बताया की इस तरह का प्रशिक्षण वर्ग अब हर महीने लगाए जाएंगे, ताकि बजरंग दल के सदस्यों को और भी कुशल और पारंगत बनाया जा सके।प्रखंड समिती विस्तार के अंतर्गत राजेश कुमार को हरिहर गंज प्रखंड के विहिप अध्यक्ष और दीपक कुमार सोनी को बजरंग दल के प्रखंड संयोजक के रूप में नामित किया गया। वहीं, विकाश मिश्र उर्फ आशु को पिपरा विहिप प्रखंड अध्यक्ष और गौतम राणा को बजरंग दल के प्रखंड संयोजक के रूप में मनोनीत किया गया। प्रशिक्षण शिविर में बजरंग दल के प्रांत संयोजक दीपक ठाकुर, जिला संयोजक संदीप प्रसाद गुप्ता, जिला बलो पासना प्रमुख विकास कश्यप, जिला सह मंत्री पप्पू सिंह, धर्म प्रसार प्रमुख विनय कुमार, जिला बजरंग दल सह संयोजक सोनू सिंह और हिमांशु पांडेय, संतोष गुप्ता, राजबली जी, गणेश प्रसाद, पवन गुप्ता, उपेंद्र यादव, आकाश सिंह सहित सैंकड़ों कार्यकर्ताओं ने हिस्सा लिया।

रुआर कार्यक्रम को लेकर बीस सूत्री सदस्यों ने किया स्कूलों का भ्रमण

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

छतरपुर : छत्तरपुर प्रखंड में शिक्षा विभाग द्वारा संचालित रुआर 2024 कार्यक्रम को सही तरीके से संचालन को लेकर बीस सूत्री अध्यक्ष गोपाल प्रसाद सिंह एवं उपाध्यक्ष चन्दन प्रकाश सिन्हा ने विभिन्न विद्यालयों का भ्रमण किया। इस दौरान उत्क्रमित मध्य विद्यालय कउवल में एक भी शिक्षक उपस्थित नहीं पाए गए साथ ही छात्र-छात्राएं खेलते कूदते नजर आए। जिस पर अध्यक्ष व उपाध्यक्ष ने चिंता जाहिर करते हुए प्रखंड कार्यक्रम प्राधिकारी शशि कुमार को इस पर तत्काल कार्रवाई करने का आदेश दिया। बीपीओ शशि कुमार ने बताया कि उक्त विद्यालय में एक शिक्षिका है जो आज छुट्टी पर हैं। अध्यक्ष गोपाल प्रसाद सिंह ने कहा कि यह बहुत ही चिंतनीय विषय है। जिन विद्यालयों में बच्चे नहीं हैं वहां शिक्षकों की भरमार हैं और उत्क्रमित मध्य विद्यालय कउवल में 181 बच्चों उपस्थित थे जबकि यहां एक भी शिक्षक नहीं है इसे कतई बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। जिस विद्यालय में अधिक शिक्षक हैं वहां के शिक्षकों का तबादला करते हुए उत्क्रमित मध्य विद्यालय कउवल में भेजने का आदेश निर्गत किया जाएगा। झारखंड मुक्ति मोर्चा के केंद्रीय समिति सदस्य सह बीस सूत्री उपाध्यक्ष चंदन प्रकाश सिन्हा ने बच्चों को मैदान में खेलते देख कर चिंता जताते हुए कहा कि पदाधिकारी के कमी से छतरपुर का भविष्य बर्बाद हो रहा है जिसे बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। एक तरफ सरकार बच्चों को विद्यालय लाने के लिए करोड़ों रुपए खर्च कर रही है और दूसरी तरफ पदाधिकारी की कमी से विद्यालय में शिक्षक उपस्थित नहीं हो रहे हैं। बच्चे इधर-उधर भटक रहे हैं ऐसे में रुआर कार्यक्रम का औचित्य समझ से परे है। बच्चों के जांच के क्रम में पाया गया कि यहां के बच्चों को विषय की जानकारी किसी भी प्राइवेट विद्यालय के बच्चों से कम नहीं है लेकिन दुर्भाग्य की बात है कि शिक्षकों एवं विभाग के कमी के कारण इनका भविष्य बर्बाद हो रहा है। बच्चों ने भी कहा कि हम सभी लोग गरीब घर से होने के कारण प्राइवेट विद्यालय में नहीं जा सकते हैं। यदि उन्हें बेहतर तरीके से शिक्षा दी जाती है तो वे लोग भी किसी भी प्राइवेट विद्यालय के बच्चों से कम नहीं है और उन्हें कंपटीशन देने के लिए तैयार हैं। मौके पर चंदन प्रकाश सिन्हा ने बच्चों को लगातार 2 घंटे तक पढ़ाते हुए सफलता के गुण सिखाए एवं अंग्रेजी विषय पढ़ाया। उनके पढ़ाई से बच्चे बहुत खुश हुए तथा फिर आने का निवेदन किया। चन्दन प्रकाश सिन्हा ने हर हाल में दूसरे विद्यालयों से शिक्षकों की तबादला की बात कही और कहा कि यदि आवश्यकता पड़ी तो इसके लिए शिक्षा सचिव के साथ झारखंड के शिक्षा मंत्री एवं मुख्यमंत्री महोदय को भी इस स्थिति से अवगत कराते हुए शिक्षकों को अनुपातिक पदस्थापना की मांग की जाएगी।

संक्षिप्त खबरें

भाजयुमो के जिला अध्यक्ष ने डालटनगंज भंडारिया के युवाओं के साथ की बैठक

पलामू : भारतीय जनता युवा मोर्चा के जिला अध्यक्ष ज्योति पांडे ने डालटनगंज भंडारिया विधानसभा के बंदूआ और बूढ़ीवीर गांव में युवाओं के साथ बैठक की और समस्याओं से अवगत हुए बैठक के दौरान युवाओं ने कई समस्याओं पर भाजपा नेता का ध्यान आकृष्ट कराया और वर्तमान में सबसे बड़े जो समस्या है। रोजगार की समस्या की तरफ ध्यान आकृष्ट कराया लोगों ने बताया कि राज्य सरकार युवाओं को रोजगार देने मे असफल साबित हुई है बालू के अभाव में लोग अपना घर नहीं बना पा रहे हैं। तमाम विकास योजनाएं स्थिर पड़ी हुई है अफसर शाही चरम पर है ब्लॉक पैसे की उगाही का माध्यम बन गया है लोगों को संबोधित करते हुए भाजपा नेता ने कहां की काठ की हांडी बार-बार नहीं चढ़ती यह सरकार अपने अंतिम कार्यकाल की ओर बढ़ रही है इस सरकार में अपराधिक घटनाएं चरम पर हैं। चैनपुर क्षेत्र में विगत दो-तीन माह में कई हत्या की घटनाएं घटी है यह प्रशासनिक लापरवाही का नतीजा है इस सरकार में नशे का कारोबार करने वाले लोग खुलकर युवा पीढ़ी को नशे की ओर धकेल रहे हैं नशे की लत के चलते आज का युवा पीढ़ी बर्बाद हो रहा है। मैं प्रशासन से मांग करता हू की नसे के कारोबार करने वाले लोगों को चिन्हित कर जेल में डालने का काम किया जाए अफसर शाही चरम पर है। अफसर जनता का आर्थिक दोहन करने में लगे हुए हैं इस सरकार से जनता का मोह भंग हो गया है। बैठक में मुखिया दीनानाथ मांझी, उप मुखिया ओमप्रकाश चंद्रवंशी, मनोज सिंह, रविंद्र रजक, वीरेंद्र वर्मा, राणा प्रताप चंद्रवंशी, मुरारी सिंह, सूरज तिवारी, अभय वर्मा, रितिक पांडे आदि उपस्थित थे।

मनीपाल हेल्थ मैप के मैनेजर और डॉक्टर ने पौधरोपण कर हरियाली का दिया संदेश

मेदिनीनगर : मेदिनीराय मेडिकल कॉलेज अस्पताल मनीपाल हेल्थ मैप के मैनेजर सैलेंद्र कुमार सिंह और डॉक्टर आशीष कुमार सिंह ने पौधारोपण करने के प्रति लोगों को जागरुक किया। उन्होंने अस्पताल से डिस्चार्ज होने वाले मरीज और अपने कर्मचारियों के बीच पौधा का वितरण किया। इसके बाद उन्होंने अस्पताल कैंपस में पौधारोपण कर लोगो को हरियाली का संदेश दिया। मौके पर उपस्थित शैलेंद्र कुमार सिंह ने कहा कि मानव जीवन पूर्ण रूप से तभी स्वस्थ होगा जब हम कदम-कदम पर पौधे लगायेंगे। पौधरोपण जीवन के लिए बेहद जरूरी है। ऑक्सीजन देने वाले पौधों की महत्ता को दरकिनार नहीं किया जा सकता. हमें मुफ्त में आक्सीजन पेड़-पौधे ही देते हैं। बढ़ती जनसंख्या और घटते पेड़-पौधे मानव जीवन के अस्तित्व के लिए खतरा साबित हो रहा है। पर्यावरण संतुलन से ही मानव सुरक्षित व खुशहाल रहेगा। उन्होंने कहा की पर्यावरण को बचाने के लिए पौधा लगाना जरूरी है। वृक्ष ही पृथ्वी पर समस्त जीवों को प्राणवायु देकर उनको जीवन देता है। ऐसे में हमारा भी फर्ज बनता है कि अधिक से अधिक पौधा लगाएं। खासकर वर्तमान में पीपल, बरगद, बेल, जामुन सहित अन्य छायादार व लाभदायक पौधे की इन दिनों कमी होती जा रही है। इन पौधों को लगाकर हम छाया के साथ-साथ फल की भी प्राप्ति कर सकते हैं। वही मौके पर उपस्थित डॉक्टर आशीष कुमार ने कहा की पेड़-पौधे, पृथ्वी पर ईश्वर का दूसरा रूप है, जो हमें जीवन प्रदान करता है। साँस लेने के लिए ऑक्सीजन भी पेड़ से ही प्राप्त होता है, जिससे जीवन संभव हो पाता है। इसलिए हम सभी को अपने घर के आस पास पेड़ जरूर लगाना चाहिए।

देलबेड़ा मंदिर परिसर में होगा भव्य विवाह मंडप का निर्माण

सिल्ली : सिल्ली माड़दु के देलबेडा स्थित पवित्र शिव मंदिर के परिसर में भव्य विवाह मंडप का निर्माण किया जाएगा। निर्माण पर लगभग 50 लाख की लागत आएगी। इसको लेकर सिल्ली विधायक सुदेश कुमार महतो ने कार्य योजना तैयार की है। यह विवाह मंडप का भवन इलाके का सबसे बड़ा और हाईटेक सुविधाओं से लैस होगा। बहुत जल्द इसकी आधारशिला रखकर निर्माण कार्य शुरू कर दिया जाएगा। विधायक प्रतिनिधि जयपाल सिंह ने इसकी जानकारी देते हुए बताया कि मंदिर में शादी को लेकर जुट रही भारी भीड़ व जन आकांक्षाओं को देखते हुए विवाह मंडप की योजना बनायी गयी है। जो इस क्षेत्र का सबसे बड़ा भव्य व आकर्षक होगा। भवन में भव्य व आकर्षक जयमाला स्टेज का निर्माण भी किया जाएगा। शादी समारोह का सबसे आकर्षक केंद्र भवन का सेन्टर प्वाईट होगा, जहां यादगार फोटो खिंचवाना और सेल्फी लेना कोई नहीं भूलेगा। विधायक के पहल पर मंदिर परिसर में गेस्ट हाउस निर्माण कार्य अंतिम चरण पर है। वहीं जयपाल सिंह ने कहा कि शादियां एक ओर जहां काफी खचीर्ली तरीके से होती है। वहीं शिव मंदिर परिसर में कम समय और कम बजट में शादी सम्पन्न होता है । यही वजह है कि लगन के दिनों में शिव मंदिर काफी गुलजार हो जाता है। तिलक, हल्दी व सिन्दूरदान समेत सभी शादी की रस्म यहां घंटों में सम्पन्न हो जाती है। यहां शादी के लिए आसपास के इलाके के अलावा दूर-दूर के लोग भी पहुंचते है। लगन के दिनों में यहां लोगों की भीड़ से गहमा-गहमी बनी रहती है।

खिजरी विधायक राजेश कच्छप ने विधानसभा क्षेत्र में तीन पुलों को दिलवाई स्वीकृति

रांची : खिजरी विधायक राजेश कच्छप जी के अनुशंसा पर खिजरी विधान सभा क्षेत्र में तीन पुलों की स्वीकृति मिली है। जिसमें नामकुम प्रखण्ड के सिलवे पंचायत के ग्राम गढ़ा टोली में गुंगा नाला पर पुल का निर्माण। रामपुर पंचायत के ग्राम बुदरी में पुल का निर्माण। (308.0800 लाख रु) लाली पंचायत के ग्राम गरुड़पिड़ी से बारेडण्डा के बीच टुंडी नदी पर पुल का निर्माण। (304.76100 लाख रु) खिजरी विधायक राजेश कच्छप ने कहा कि हमारा प्रयास है कि प्रत्येक गांवों को मुख्य पथों से जोड़ कर आम जनता का सुविधा पहुंचाना। स्वीकृत पुल ग्रामीणों के वर्षों पुरानी मांग थी। खिजरी विधायक राजेश कच्छप ने अपनी चुनावी वादों को पूरा करते हुए तीनों पुल की स्वीकृति दिलाया तथा विभाग मंत्री डॉ इरफान अंसारी तथा प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के प्रति आभार प्रकट किया एवं खिजरी के जनता को बधाई दी। तीनों पुल की शिलान्यास बहुत जल्दी किया जायेगा। ग्रामीणों ने कहा कि आजादी के बाद पहली बार विकास की किरण पहुंची है जो खिजरी विधानसभा के लोकप्रिय विधायक राजेश कच्छप ने आज पुरा करके तीनों पुल का स्वीकृति दिलाया।

एक नजर

शादी का प्रलोभन देकर रांगा निवासी युवक ने किया यौन शोषण

साहिबगंज : रांगा थाना क्षेत्र की एक दुष्कर्म पीड़िता युवती आरोपी व्यक्ति के खिलाफ रांगा थाना में केस दर्ज कराने को लेकर पिछले तीन महीने से इंसाफ पाने के लिए दर दर भटक रही है। जहां बीते 10 जुलाई 2024 को पुलिस अधीक्षक कुमार गौरव को आवेदन देने के बावजूद अबतक पुलिस ने कोई भी कार्रवाई नहीं की है। लिहाजा पीड़िता रोजाना रांगा थाना व पुलिस अधीक्षक कार्यालय का चक्कर काट रही है। वही रांगा थाना क्षेत्र की रहने वाली पीड़िता युवती ने रांगा थाना में आवेदन देकर रांगा थाना क्षेत्र के मोमिन टोला लखीपुर निवासी युवक खलील अंसारी पर आरोप लगाया है कि उसे शादी का झांसा देकर पिछले 8 वर्षों से शारीरिक संबंध बना रहा है। इस दरम्यान वह पांच बार गर्भवती भी हो गई इसपर उसने शादी करने की बात कही तो खलील ने कहा कि कुछ दिन रूक जाओ और उसका हर बार गर्भपात करवा दिया। इस बीच उसे हिमाचल प्रदेश भी ले जाकर रखा जहां बाद में खलील का भाई उसकी शादी दूसरे जगह करने का प्रयास कर रहे हैं। इस बीच उसने बीते 24 अप्रैल में रांगा थाना में आवेदन भी दिया जहां कानूनी कार्रवाई से बचने के लिए आरोपी युवक खलील उसे राजमहल कोर्ट ले गया और उसे हिन्दू धर्म से मुस्लिम धर्म में परिवर्तन करने का दवाब बनाने लगा।

ई रिक्शा पलटने से 6 माह की बच्ची की हुई मौके पर मौत

बरहेट : थाना क्षेत्र के पहाड़पुर चुटिया मुख्य सड़क अंतर्गत चुटिया गांव समीप ई रिक्शा अनियंत्रित होकर पलट जाने से 6 माह की बच्ची की मौत हो गई।वही ई रिक्शा में सवार कुल चार लोग घायल हो गए। जानकारी के अनुसार बोरियों थाना क्षेत्र के सजनी गांव तालामय सोरेन 19 वर्ष, बेटी सुमित हेंब्रम 6 माह घटना स्थल पर ही मौत हो गई। इसके अलावा बरहेट थाना क्षेत्र के सुनीता मुर्मू 50 वर्षीय, मनिका सोरेन 30 वर्षीय, लॉरेंस हंसदा 60 वर्ष, ई रिक्शा पलटने से गंभीर रूप से घायल हो गए। सभी घायलों को स्थानीय ग्रामीणों की मदद से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बरहेट लाया गया। जहां डॉक्टर तापेश मुर्मू ने सभी घायलों को बारी-बारी से प्राथमिक उपचार किया। घटना में 6 माह की बच्ची का दाहिना पैर ई-रिक्शा से दबकर कट गया। इस दौरान घटना स्थल पर ही बच्ची की मौत हो गई। वही ई-रिक्शा चालक घायलों को छोड़कर फरार हो गए।

इनरव्हील क्लब ऑफ बाबाधाम ने मीडिया अभिनन्दन समारोह का किया आयोजन

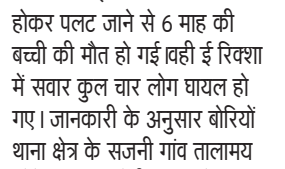

देवघर : इनरव्हील क्लब ऑफ बाबाधाम द्वारा मीडिया अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया गया। इस दौरान इनरव्हील क्लब ऑफ देवघर की सीजीआर सारिका साह भी उपस्थित थीं। अभिनन्दन समारोह के दौरान क्लब की अध्यक्षा निधि राज ने उपस्थित मीडिया प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए कहा कि मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ माना जाता है, जो समाज में हो रहे अच्छे- बुरे सूचनाओं का प्रसार कर समाज को जागरूक करने में अपना योगदान देते हैं। वहीं सचिव रीमा केशरी और एडिटर नेहा केशरी ने संयुक्त रूप से बताया कि इनरव्हील क्लब ऑफ बाबाधाम के सत्र 2024-25 की नयी कार्यकारिणी का गठन आज वीओरे मॉल के बैंक्विट हॉल में होना सुनिश्चित है,इस मौके पर समाचार संकलन हेतु के लिए सभी मीडिया प्रतिनिधी आमंत्रित हैं।

निजी स्कूलों में अभिवंचित वर्ग के बच्चों के साथ किया जा रहा भेदभाव : अभिभावक संघ

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

जमशेदपुर : शहर के निजी स्कूलों में अभिवंचित वर्ग के बच्चों के साथ भेदभाव किया जा रहा है। उक्त आरोप जमशेदपुर अभिभावक संघ ने लगाया। संघ का कहना है कि निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के लागू होने के बाद निजी स्कूलों में प्रवेश कक्षा से लेकर 8वीं तक की पढ़ाई निःशुल्क हो रही है। 8वीं कक्षा के बाद अभिवंचित वर्ग के बच्चों को भारी-भरकम फीस देने का दबाव बनाया जाता है। यहां तक की भरी क्लास में बच्चों का उपहास उड़ाया जाता है। जिससे बच्चों की मानसिकता पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। ऐसे में नई शिक्षा नीति के तहत 12वीं कक्षा तक ऐसी श्रेणी के बच्चों को निःशुल्क शिक्षा प्रदान की जाय। केंद्र सरकार ने नई शिक्षा नीति में इसका प्रावधान भी लागू किया है। लेकिन निजी स्कूल उसे मानने को तैयार नहीं ह। निजी स्कूलों की मनमानी पर लगे रोक अभिभावक संघ के अध्यक्ष डॉ. उमेश कुमार ने कहा कि केंद्र सरकार ने नई शिक्षा नीति लागू की है। इससे जुड़ा कानून भी बना है। ऐसे में नई नीति की जानकारी स्कूलों को दी जाय। साथ ही उसका कड़ाई से पालन कराया जाय। उन्होंने कहा कि अभिवंचित वर्ग के अभिभावक सरकार के भरोसे बच्चों का दाखिला कराया। लेकिन सरकार 8वीं कक्षा तक ही निजी स्कूलों को मदद कर रही है। ऐसे में ऊपरी कक्षा में पढ़ाई करने के इच्छुक छात्रों की प्रतिभा मार खा रही है। उन्होंने कहा कि इस तरह का वाकया मोतीलाल नेहरू पब्लिक स्कूल में सामने आया है। इसलिए उपायुक्त, जिला शिक्षा अधीक्षक एवं जिला शिक्षा पदाधिकारी उक्त स्कूल के अलावे जिले के सभी निजी स्कूलों में नई शिक्षा नीति-2020 को लागू करवाने तथा 12 वीं तक निःशुल्क शिक्षा देने की मांग की गई। इससे पहले दर्जनों की संख्या में आए अभिभावकों ने उपायुक्त कार्यालय पर प्रदर्शन किया तथा सरकार से निजी स्कूलों की मनमानी पर रोक लगाने की मांग की।

युवती ने एसपी को दिया आवेदन, लगाई न्याय की गुहार

साहिबगंज : जिरवाबाड़ी थाना क्षेत्र के नया टोला अंबाडीहा की रहने वाली विवाहिता युवती राखी देवी पति राहुल कुमार जयसवाल ने अपने साथ पड़ोस की रहने वाली महिला प्रियंका देवी पति निर्मल शर्मा के द्वारा मारपीट करने व उसके पति को जान से मारने की धमकी मोबाईल फोन पर देने के मामले में शुक्रवार को पुलिस अधीक्षक कुमार गौरव को लिखित आवेदन देते हुए कानूनी कार्यवाही करने की गुहार लगाई है। जहां दिए गए आवेदन पत्र में विवाहिता युवती ने जिक्र किया है कि बीते रविवार को वो हाट बाजार करने के लिए गोड़ाबाड़ी साप्ताहिक हाट आई हुई थी जहां उसके ही पड़ोस में रहने वाली प्रियंका देवी के बेटे सचिन कुमार ने उसे देखकर भद्दा भद्दा कमेंट्स करने लगी। वही भद्दा भद्दा कमेंट्स करने के बाद विवाहिता युवती ने उक्त लड़के को एक तमाचा लगा दी उधर जब विवाहिता युवती अपने घर पहुंची तो सारी बातें अपने पति को बताई जिसके बाद उसके पति उसे अपने साथ लेकर उक्त लड़के के घर गई।

संक्षिप्त खबरें

माता - पिता हमारे प्रथम गुरु, उनका सम्मान जरूरी : चंद्रशेखर

पटमदा : एसएस प्लस टू हाई स्कूल पटमदा और प्लस टू उच्च विद्यालय बांगुडदा में शिक्षक अभिभावक संगोष्ठी कार्यक्रम शुक्रवार को आयोजित किया गया । कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विधायक प्रतिनिधि चंद्र शेखर टुडू ने स्कूली बच्चों के संबोधन में कहा की माता पिता और अभिभावक हमारे प्रथम गुरु हैं। जीवन में शिक्षा हमारे लिए जरूरी है। राज्य सरकार शिक्षा के प्रति गंभीर है।सरकार की कई लाभकारी योजनाएं छात्र छात्राओं के लिए संचालित किया जा रहा हैं।बेहतर नागरिक बनने के लिए शिक्षा जरूरी। जिसके माध्यम अभिभावक जिम्मेवार बनकर बच्चो को बेहतर शिक्षा प्रदान करने में सहयोग करें।कार्यक्रम के दौरान इंटर वार्षिक परीक्षा में विज्ञान,कला और वाणिज्य संकाय में बेहतर अंक लाने वाले को अतिथियों के हाथो मेडल और प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।इस दौरान एसएस प्लस टू में विधायक प्रतिनिधि चंद्र शेखर टुडू,प्राचार्य डॉ मिथिलेश कुमार,बीआरपी अबनी महंती,सहित कई लोग उपस्थित थे।वही प्लस टू हाई स्कूल बांगुडदा में मुख्य अतिथि विधायक प्रतिनिधि चंद्र शेखर टुडू,मुखिया कल्याणी सिंह, एसएमसी अध्यक्ष विश्वनाथ माझी,अश्वनी सिंह सहित सभी शिक्षक शिक्षिकाएं,छात्र छात्राएं उपस्थित थी।

उपायुक्त ने जनता दरबार लगा कर आम जनों से मिले

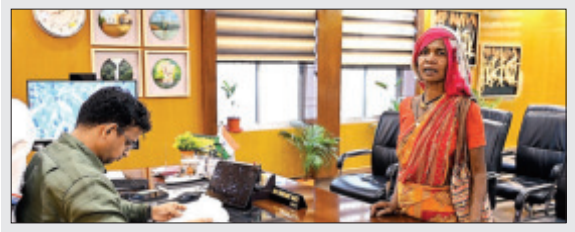

साहिबगंज : समाहरणालय स्थित अपने कार्यालय प्रकोष्ठ में उपायुक्त हेमंत सती ने जनता दरबार के माध्यम से आमजनों की समस्याएं सुनी। जनता दरबार में जिला के शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों ने अपनी समस्याओं से उपायुक्त को अवगत कराया। लोगों से एक-एक कर उनकी समस्याएं सुनी। साथ ही उनके सामाधान को लेकर उन्हें आश्वस्त कराया। उन्होनें संज्ञान में आए हुए शिकायतों की जांच कराते हुए जल्द से जल्द समाधान करने की बात कही। जनता दरबार में शिकायतकर्ता की समस्याएं को सुनने के पश्चात उपायुक्त ने संबंधित विभाग के पदाधिकारियों को उनका समाधान करने को लेकर निर्देशित किया कि शिकायतों पर त्वरित कार्रवाई करते हुए प्रतिपुष्टि उपायुक्त कार्यालय को समर्पित करें।

श्रावणी मेले का उद्घाटन करेंगे मुख्यमंत्री डीडीसी ने तैयारी का लिया जायजा

बरहेट : मुख्यमंत्री के आगमन को लेकर साहिबगंज डीडीसी सतीश चंद्र शुक्रवार को बरहेट पहुंचे, पहुंचने के तत्पश्चात बरहेट हाई स्कूल मैदान नवगछिया सिंगा मैदान का बारी-बारी से निरीक्षण किया। इस दौरान डीडीसी ने बरहेट थाना समीप सिंगा मैदान कार्यक्रम स्थल के रूप में चयनित किया गया। डीडीसी ने जानकारी देते हुए बताया कि मुख्यमंत्री का सभा स्थल एवं हेलीपैड सिंगा मैदान में बनाया जाएगा। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन अपने विधानसभा वासियों को करोड़ों रुपए की योजना एवं परिसंपत्ति का वितरण करेंगे, इस दौरान नियुक्ति पत्र भी वितरण करेंगे। वही 22 जुलाई को बरहेट शिवगादी श्रावणी मेला एवं भोगनाडीह स्थित किताझोर का उदघाटन करेंगे। इसको लेकर जिला प्रशासन की तैयारी जोर शोर से चल रही है। वहीं मौके पर जनसंपर्क पदाधिकारी जयवर्धन कुमार, बरहरवा एसडीपीओ मंगल सिंह जमुदा, झामुमो मंडली के संयोजक सुनीराम हांसदा, सह संयोजक बर्नार्ड मरांडी, प्रोङ्ग नजरुल इस्लाम, राजाराम मरांडी, मुजीबुर रहमान, समीम अंसारी, कौसर अंसारी, के अलावा अन्य मोजूद थे।

झारखंड राज्य पंचायत सचिव संघ ने किया धरना प्रदर्शन

बोरियो : प्रखंड मुख्यालय बोरियो में शुक्रवार के दिन झारखंड राज्य पंचायत सचिव संघ के बैनर तले दो सूत्री मांगों को लेकर विभिन्न पंचायतों के सचिवों ने धरना प्रदर्शन आयोजित किया। यह एक दिवसीय धरना प्रदर्शन राज्यव्यापी आयोजित किया गया। पंचायत सचिवों की पहली मांग है कि मूल ग्रेड पे 2400/- रुपया किया जाए, वहीं दूसरी मांग बीपीआरओ पद पर 25 प्रतिशत प्रोन्नति वरीयता के आधार पर तथा आरक्षित 25 प्रतिशत पद सीमित प्रतियोगिता परीक्षा, तीन बार अवसर प्रदान कर भरा जाए। पंचायत सचिवों का कहना है कि दुर्गम इलाकों और जंगलों में कार्य करने के बावजूद उनके वाजिब मांगे पूरी नहीं की जा रही है। अपनी मांगों को लेकर एक ज्ञापन राज्य के मुख्यमंत्री के नाम पर प्रखंड विकास पदाधिकारी नागेश्वर साव को पंचायत सचिवों ने सौंपा। वहीं मौके पर पंचायत सचिव मोतीलाल मुर्मू, राजेंद्र प्रसाद साह, परमानंद मण्डल, स्नेहा कुमारी, बेला, आशा कुमारी, प्रियंका टिबड़ेवाल मौजूद थी।

प्लस टू हाई स्कूल बड़ी कोदर्जनना से चोरी हुआ उपकरण स्कूल कैंपस से बरामद

साहिबगंज : सदर प्रखंड क्षेत्र के मुफस्सिल थाना क्षेत्र अंतर्गत हाजीपुर पूरब पंचायत में स्थित +2 हाई स्कूल बड़ी कोदरजन्ना में बीते दिनों नौ जुलाई को केंद्र सरकार के द्वारा दिया गया के यान उपकरण की चोरी हो जाने की शिकायत संबंधित विभाग एवं मुफस्सिल थाना क्षेत्र की पुलिस से की गई थी। उधर इस मामले को लेकर जब स्कूल परिसर के अंदर कमरे से के यान चोरी हो जाने की खबर को अखबार में प्रमुखता से प्रकाशित किया तो मुफस्सिल थाना क्षेत्र की पुलिस ने इसकी जांच करना प्रारंभ कर दिया।

विधायक ने डाकबंगला निवासी का टीएमएच से कराया 87 हजार का बिल माफ

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

चांडिल : चांडिल के बुरुडूंगरी डाकबंगला निवासी शांति वाला तंतुवाई का पैर में इंफेक्शन की समस्या होने पर परिजनों ने बेहतर इलाज के लिए टीएमएच में भर्ती कराया था। इस दौरान वे स्वास्थ्य हुए और इलाज के दौरान उनका अस्पताल में बकाया बिल काफी हो गया। परिजनों ने कुछ बिल चुकाने के बाद बाकी बचे शेष बील चुकाने में असमर्थता जताते हुए बेटे बनमाली तंतुवाई ने इसकी जानकारी झामुमो नेता मंत्री महतो व सीताराम महतो को दिए। उन्होंने मामले कि जानकारी विधायक सविता महतो को दिया। विधायक ने मामले को गंभीरता से लेते हुए अस्पताल प्रबंधन से वार्ता कर करीब 87 हाजार रुपये का बील माफ करते हुए शांति वाला तंतुवाई को अस्पताल से छुट्टी दिलाई। विधायक के इस नेक कार्य के लिए परिजनों ने विधायक सविता महतो का आभार व्यक्त किया। उक्त बात की जानकारी झामुमो केंद्रीय सदस्य सह आप्त सचिव काबलु महतो ने दिया।

पंचायत सचिव संघ और मनरेगा कर्मियों ने किया प्रदर्शन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

पटमदा : झारखंड राज्य पंचायत सचिव संघ झारखंड रांची के निर्देश पर कार्यालय अवधि तक दो सूत्री मुख्य मांगों के साथ एक दिवसीय राज्यव्यापी प्रखंड स्तरीय धरना दिया गया। जिसमें सचिवों के द्वारा अपनी वेदना को प्रकट करते हुए कहा कि सरकार द्वारा संचालित तमाम विकास योजनाओं को धरातल में उतारने का दायित्व पंचायत सचिवों के कंधों पर हैं, दुर्गम से दुर्गम स्थान से निकलकर जिला तक पहुंचाना, 24 घंटे दावित्वों के बोझ से समर्पित होकर काम करना जीवन शैली बन गया है, इसके बावजूद संघ की वर्षों से लंबित जायज मांग पर विभाग की ओर से अब तक कोई ठोस और सकारात्मक कार्रवाई नहीं की गई है। जिस कारण से विवश होकर हम आंदोलन की ओर अपना कदम बढ़ाने को मजबूर हैं।मुख्य मांगों में मूल ग्रेड पे स्केल 2000 से बढ़ाकर 2400 किया जाए प्रखंड पंचायती राज पदाधिकारी के पद पर 25 प्रतिशत में शेष प्रोन्नति वरीयता के आधार पर दिया जाए आरक्षित 25 प्रतिशत पद पर सीमित प्रतियोगिता परीक्षा तीन बार अवसर देते हुए रिक्त स्थान भरे जाए।इन दो मुख्य मांगों को लेकर के राज्य के 24 जिलों के 264 प्रखंडों में पंचायत सचिवों के द्वारा धरना प्रदर्शन किया गया, जिसमें पटमदा प्रखंड पूर्वी सिंहभूम के सभी सचिवों ने मुख्यमंत्री श्री हेमन्त सोरेन से संघ की मांगों पर सहानुभूति पूर्वक विचार करते हुए मांग को पूरा करने की कृपा मांग की हैं। इस दौरान पंचायत सचिव धनश्याम महतो,भीम महतो, जितेंद्र भगत, सुकुमार मदीना, सहित कई पंचायत सचिव उपस्थित थे।

हरेलाल महतो के प्रयास से एमआर एलॉय प्लांट के मृतक परिजनों को मिला 16.50 लाख रुपये मुआवजा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

ईचागढ़ : चांडिल प्रखंड के टुईडूंगरी - चौका स्थित एमआर एलॉय प्लांट के कर्मचारी उत्तम लायेक की दुर्घटना में मौत हो गया। इसके बाद तत्काल मृतक उत्तम लायेक के परिवार के सदस्यों ने घटना की जानकारी आजसू पार्टी के केंद्रीय महासचिव हरेलाल महतो को फोन के माध्यम से दिया था। परंतु, आजसू पार्टी के केंद्रीय महासचिव हरेलाल महतो अपने किसी निजी कार्य के कारण क्षेत्र से बाहर हैं। हरेलाल महतो ने तत्काल घटना की जानकारी देते हुए आजसू कार्यकताओं को पीड़ित परिवार को सहयोग करने का निर्देश दिया। इसके बाद हरेलाल महतो के अनुज देवराज महतो के नेतृत्व में आजसू कार्यकताओं ने एमआर एलॉय कंपनी के प्रबंधन से बात की, जिसके बाद चांडिल के चिलगु स्थित आजसू पार्टी प्रधान कार्यालय में कंपनी प्रबंधन और मृतक उत्तम लायेक के परिवार के सदस्यों की मौजूदगी में वार्ता हुई। वार्ता में उपस्थित सभी लोगों की संतुष्टि से निर्णय लिया गया कि एमआर एलॉय प्रबंधन की ओर से मृतक उत्तम लायेक के तीन बेटियों के नाम पांच - पांच लाख कुल 15 लाख रुपये मुआवजा राशि दिया जाएगा। मृतक उत्तम लायेक की बड़ी बेटी अंजली लायेक को उसके योग्यता अनुसार कंपनी में ही नौकरी दी जाएगी। इसके अलावा स्वर्गीय उत्तम लायेक के श्राद्धकर्म के लिए तत्काल ढेढ़ लाख रुपये भुगतान किया गया और श्राद्धकर्म में डेढ़ साल के अलावे अतिरिक्त खर्च को भी कंपनी द्वारा भुगतान किया जाएगा। हरेलाल महतो ने कहा है कि मृतक उत्तम लायेक की मौत अत्यंत दुखद है। पीड़ित परिवार के साथ हमेशा आजसू परिवार खड़ा है। पीड़ित परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त करते हैं। इस मौके पर रामप्रसाद महतो, अश्विनी महतो, मनोज महतो, प्रकाश महतो, दिलीप महतो, सुखराम महतो ,जबा लायक, तिलका देवी आदि मौजूद थे।

दो गुट में बंटे राजमहल अंचल के राजस्व कर्मचारी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

राजमहल : अंचल क्षेत्र के जमीन सम्बंधित मामलों के निपटारा करने वाले कर्मचारी दो गुट में बंट चूके हैं। ऐसा आरोप जमीन सम्बंधित कार्यों के लिए लगातार दौड़ भाग कर रहे लोगों का कहना है। एक गुट में जहां हल्का 11 के राजस्व कर्मचारी तपेश सेन और हल्का 12 के राजस्व कर्मचारी हैदर अली हैं,वहीं दूसरे गुट में अंचल के बाकि सभी राजस्व कर्मचारी हैं। लैंड म्यूटेशन कराने के लिए आम लोगों को काफी दौड़ना पड़ रहा है, क्योंकि ज़िम्मेदार कर्मचारी अपने दायित्व को निभाने में आनाकानी कर रहे हैं। सूत्रों ने दावा किया है कि एक गुट के दोनों कर्मचारियों ने बीते 9 महीने में बमुश्किल 25-30 जमीन का म्यूटेशन कराया होगा। जबकि दूसरे गुट के राजस्व कर्मचारियों द्वारा एक महीने में ही लगभग 50 से 100 जमीन म्यूटेशन करवा दिए जाते हैं। जमीन के अन्य कामों में भी इन दोनों कर्मचारियों द्वारा काफी ढिलाई बरती जा रही है। इन दोनों हल्के के जमीन मालिक या खरीदार काफी परेशान दिख रहें हैं, क्योंकि बार बार कागजी कार्यवाही के लिए इन्हें इन दोनों राजस्व कर्मचारीयो के द्वारा दौड़ाया जा रहा है। बता दें कि दो गुटों में बंट कर काम करने के पीछे प्रभारी अंचल निरीक्षक (सीआई) की कुर्सी पर काबिज करने का कारण बताया जाता है, दोनों ही गुट के कर्मचारी अंचल निरीक्षक की कुर्सी पर अपना हक जमाना चाहते थे। लेकिन तपेश सेन व हैदर अली गुट को इसमें सफलता हाथ नहीं लगी थी। फिलहाल राजमहल अंचल में स्थाई अंचल निरीक्षक नियुक्त हैं। जिस वजह से आम लोगों का काम भी इन दोनों कर्मचारियों के द्वारा ठीक तरीके से नहीं किया जा रहा है।

ग्रामीणों की केवाईसी समस्या को लेकर भाजपा ने बैंक ऑफ इंडिया के समक्ष किया प्रदर्शन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

ईचागढ़ : नीमडीह रघुनाथपुर में बैंक ऑफ इंडिया की शाखा के सामने हजारों ग्रामीणों की शिकायतों और परेशानियों के कारण भारतीय जनता पार्टी के नीमडीह पूर्वी और पश्चिमी मंडल ने संयुक्त रूप से 22 जुलाई से अनिश्चितकालीन आमरण अनशन में रहने का निर्णय लिया है।

ग्रामीणों का कहना है कि केवाईसी अपडेट नहीं होने के कारण वे अपनी पेंशन, फंड, सरकारी योजनाओं के लाभ और अन्य बैंकिंग सुविधाओं से वंचित हो रहे हैं। इस संबंध में आज निमाड़ीह रघुनाथपुर के डाक बंगला में एक तैयारी बैठक का आयोजन किया गया, जिसमें कई प्रमुख पदाधिकारियों ने भाग लिया।

धरना में भाग लेने वाले प्रमुख पदाधिकारी: नीमड़ीह पश्चिमी मंडल अध्यक्ष निवास महतो, नीमड़ी पूर्वी मंडल अध्यक्ष वासुदेव सिंह सरदार, जिला कार्यसमिति सदस्य चंद्रमोहन दास, दिलीप चंद्र महतो, भीम महतो, पांडव प्रमाणिक, बीरबल पांडेय, अन्नपूर्णा महतो, सरला महतो, समीर मंडल, विवेक मक्छुआ। ग्रामीणों की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए, बीजेपी नीमडीह पूर्वी और पश्चिमी मंडल ने यह फैसला लिया है कि जब तक उनकी मांगे पूरी नहीं होती, तब तक अनिश्चितकालीन धरना जारी रहेगा।

मुख्य मांगें

- केवाईसी अपडेट : तीन दिनों के अंदर जमा किए गए केवाईसी फॉर्म को अपडेट किया जाए। कई ग्रामीणों के फॉर्म जमा होने के बावजूद महीनों तक अपडेट नहीं हो पाते।
- कैंप का आयोजनः पंचायत स्तर पर कैंप लगाकर ग्रामीणों की समस्याओं को समझते हुए केवाईसी अपडेट कराया जाए।
- बैंक काउंटरों की उपलब्धता : बैंक में सभी काउंटरों को चालू रखा जाए और अतिरिक्त कार्यों के लिए भी समुचित व्यवस्था की जाए।

जदयू के एमएलसी कैंडिडेट के खिलाफ नारेबाजी रुपौली दुहराने की धमकी

हाजीपुर। देवेश चंद्र ठाकुर के सांसद बनने के बाद खाली हुई तिरहुत स्नातक क्षेत्र में उपचुनाव होना है। इस सीट पर होने वाले उपचुनाव की तैयारी और घोषित प्रत्याशी के साथ पहली बैठक में ही जदयू नेताओं-कार्यकर्ताओं ने भारी बवाल कर दिया। प्रत्याशी बदलने की मांग को लेकर बैठक में ही नेताओं और प्रत्याशी के सामने हंगामा शुरू कर दिया। दरअसल चुनावी जीत को लेकर जदयू पार्टी की बैठक हाजीपुर में चल रही थी। जदयू के प्रदेश प्रवक्ता अभिषेक झा को इस चुनाव में पार्टी की तरफ से उम्मीदवार बनाया गया है। गुरुवार रात को हाजीपुर में हुई बैठक में जैसे ही पार्टी के बड़े नेता अपने प्रत्याशी को लेकर पहुंचे, वैसे ही नेता और समर्थक हंगामा करने लगे। मंच पर मौजूद सांसद देवेश चंद ठाकुर और पार्टी के बड़े नेता अचंभित दिखे। पार्टी के नेताओं से शांति की अपील करते रहे, लेकिन लगातार बवाल होता रहा। दरअसल, जदयू के स्थानीय नेता-कार्यकर्ता स्थानीय प्रत्याशी की मांग को लेकर विरोध कर रहे थे। ऐसा नहीं होने पर अपने पार्टी नेताओं के सामने ही खुलेआम रुपौली दोहराने की धमकी देते दिखे। इस कार्यक्रम में पहुंचे जदयू के बड़े नेता पूरे बवाल और हंगामे से हतप्रभ दिखे। अपने पार्टी नेताओं को समझाने के लिए मिन्नतें करते दिखे। बैठक के लिए पहुंचे जदयू प्रवक्ता नीरज कुमार ने बीच-बचाव के लिए मोर्चा जरूर संभाला, लेकिन उनकी मिन्नतों के बाद भी बवाल जारी रहा। नीरज कुमार ने कहा कि पार्टी मां होती है। जो पार्टी में राष्ट्रीय अध्यक्ष, प्रदेश अध्यक्ष निर्णय लेंगे, उन्हें हम सभी को मानना है। अजीबोगरीब हालत होने पर प्रत्याशी बने जदयू नेता और प्रवक्ता अभिषेक झा ने हाथ जोड़ लिए। कहा कि हमलोग मूल मुद्दे से भटक रहे हैं। बैठक चुनाव की तैयारी को लेकर की गई है। हम कैंडिडेट घोषित करने के लिए नहीं आए हैं। हंगामा के बाद देवेश चंद्र ठाकुर ने बताया कि जब भी कोई नए उम्मीदवार आते हैं तो पहले थोड़ा बहुत विरोधाभास होता है। लेकिन जनता दल, यूनाइटेड पार्टी है। पार्टी के सर्वमान्य नेता नीतीश कुमार हैं। उनके द्वारा जो निर्णय लिया जाएगा, उसपर पार्टी के सभी लोगों को काम करना होगा। बल्कि मांग है कि तिरहुत स्नातक के क्षेत्र में चार ज़िला आता है।

बेगूसराय में हाइवा ने दो छात्राओं को रौंदा एक की मौत

बेगूसराय। में तेज रफ्तार हाइवा ने बिहार पुलिस की तैयारी कर रही दो छात्राओं को कुचल दिया, जिसमें से एक की मौत हो गई। वहीं दूसरी छात्रा गंभीर रूप से घायल हो गई, जिसका निजी अस्पताल में इलाज चल रहा है। घटना एसएच-55 पर लोहिया नगर थाना क्षेत्र के पनहांस चौक के समीप की है। मृतका की पहचान मुफस्सिल थाना क्षेत्र के सिकंदरपुर निवासी राजकुमार राय की बेटी कोमल कुमारी (22) के रूप में हुई है। घायल छात्रा जिनेदपुर निवासी रामबाबू पोद्दार की बेटी पूजा कुमारी (22) है। घटना के बाद गांव में कोहराम मचा हुआ है, पुलिस पोस्टमॉर्टम करवाने सहित आगे की प्रक्रिया में जुटी हुई है। कोमल जीडी कॉलेज में पीजी की छात्रा थी। उसने पिछले साल बिहार पारा मेडिकल में राज्य में 11वां स्थान लाया था। उसका चयन सीवान नर्सिंग इंस्टिट्यूट में GNM प्रशिक्षण के लिए हो चुका था, लेकिन उसकी इच्छा वर्दी पहन कर देश सेवा करने की थी। कुछ दिन पहले वह बिहार रउ की जीडी लिखित परीक्षा और शारीरिक परीक्षा पास कर चुकी थी। उसका चयन D.El.Ed के लिए भी हो चुका था और बुधवार को नेवी की परीक्षा देने पटना भी गई थी। घटना के संबंध में बताया जा रहा है कि कोमल और पूजा रोज सुबह में करीब चार बजे घर से निकलती थी और साइकिल से पनहांस चौक के पास ITI परिसर में आकर दौड़ लगाती थीं।और दोनों को उठाकर ई-रिक्शा से सदर अस्पताल लाया, जहां कोमल को आईसीयू में भर्ती कराया गया, जबकि पूजा को लेकर परिजन दूसरे जगह चले गए। सदर अस्पताल के आईसीयू में इलाज के दौरान कोमल की मौत हो गई।

जहरीली गैस से मकान मालिक समेत 2 की मौत

गोपालगंज। में शौचालय की नवनिर्मित सेंटरिंग टैंक में गिरने से दो लोगों की मौत हो गई। वहीं, एक युवक को गंभीर हालत में अस्पताल में भर्ती कराया गया है। घटना मांझागढ़ थाना क्षेत्र के फुलवरिया गांव की है। घायल का इलाज सदर अस्पताल में चल रहा। मृतकों की पहचान मांझागढ़ थाना क्षेत्र के फुलवरिया गांव निवासी 37 वर्षीय सुधीर दुबे और बरौली थाना क्षेत्र के कोटवा गांव निवासी शमशाद मियां के रूप में की गई। बताया जा रहा है कि सुधीर दुबे अपने नवनिर्मित शौचालय की टंकी का सेंटरिंग खोलने के लिए मजदूर शमशाद मियां को बुलाया था। शमशाद ने जैसे ही टंकी का स्लैब खोला, तेज गैस के कारण वह बेहोश होकर टंकी में गिर गया। फिर मकान मालिक सुधीर उसे बचाने के लिए पहुंचे, लेकिन जैसे ही सुधीर ने टंकी में झांक कर देखा वह भी गैस लगने के कारण उसमें गिर पड़ा। दम घुटने से दोनों की मौके पर ही मौत हो गई। आसपास मौजूद कुछ बच्चों ने शोर मचाया जिसके बाद फुलवरिया गांव निवासी दिनेश प्रसाद का बेटा पुनदीप भी सीढ़ी लगाकर टंकी में घुसा और दोनों को बचाने की कोशिश की, लेकिन दम घुटने से वह भी बेहोश हो गया। घटना की सूचना मिलने के बाद मौके पर स्थानीय लोगों की भीड़ इकट्ठा हो गई।

पटना में टेक्सटाइल इंवेस्टर्स मीट का आयोजन

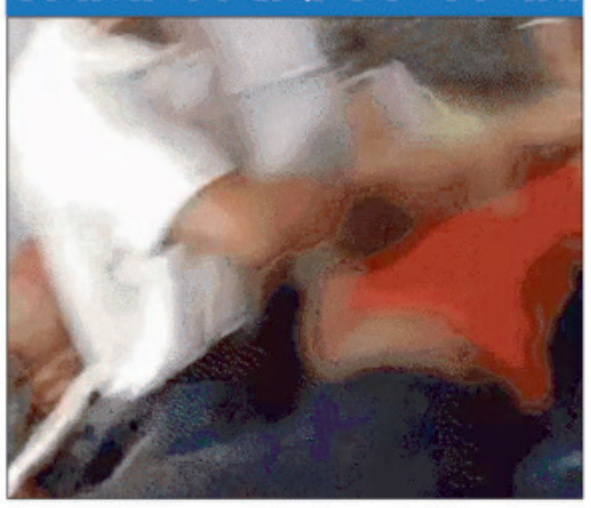

पटना। के ताज होटल में टेक्सटाइल इंवेस्टर्स मीट का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन केंद्रीय टेक्सटाइल मंत्री गिरिराज सिंह, डिप्टी सीएम विजय सिन्हा और बिहार सरकार में उद्योग मंत्री नीतीश मिश्रा ने किया। इंवेस्टर्स मीट 70 निवेशक राष्ट्रीय स्तर के बड़े टेक्सटाइल ब्रांड से जुड़े थे। वहीं, 20 निवेशक सीएम उद्यमी योजना एवं जीविका से संबंधित थे। ये मीट दिसंबर में प्रस्तावित बिहार बिजनेस कनेक्ट 2024 (ग्लोबल इन्वेस्टर्स मीट) के संदर्भ में आयोजित की गई है। केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव पर तंज कसते हुए कहा कि डपोरसंखी, माल महाराज का और मिर्जा खेले होली। उन्होंने कहा कि जब तेजस्वी डिप्टी सीएम थे, तो उनके जिम्मे पांच विभाग थे। इन पांचों विभाग में उन्होंने कितना रोजगार दिया है। सारे रोजगार नीतीश कुमार ने दिए और तेजस्वी मैंने ही दिया है कि रट लगा रखी है। इसलिए तेजस्वी एक झूठ को 100 बार बोलकर गोएबल्स की थ्योरी ना लाएं। विपक्ष बिहार को बदनाम ना करें, इंवेस्टर्स यहां आ रहे हैं। माहौल बन गया है। गिरिराज सिंह ने आगे कहा कि बिहार को कई सारी सौगातें मिलने वाली है। अक्टूबर में राष्ट्रीय स्तर का हैंडलूम एक्सपो लगेगा। गया में दो और भागलपुर में एक हैंडलूम और हैंडीक्राफ्ट का सेंटर लगेगा। इसके साथ ही भागलपुर, नालंदा, नवादा और पटना में हैंडलूम और सिल्क का इंफ्रास्ट्रक्चर स्पेशल प्रोजेक्ट होगा। निफ्ट का एक और सेंटर खुलेगा। मैन्यूफैक्चरिंग यूनिट में हमारे कारीगर टेक्सटाइल उद्योग को बढ़ावा देने के लिए अपना योगदान दे रहे हैं। दक्षिण भारत, मुंबई, दिल्ली से लोग आए हैं। बहुत लोग पहली बार बिहार आए हैं।

कलाई से टपक रहा था खून पीटती रही महिला दरोगा

भागलपुर। में प्रेमी के घर धरने पर बैठी प्रेमिका ने जमकर ड्रामा किया। उसे समझाने पुलिस पहुंची थी, लेकिन वो मान नहीं रही थी। इस बीच उसने अपने कलाई काट ली। उसके बाद भी लड़की वहां से हटने को तैयार नहीं थी। जिसके बाद मौके पर पहुंची महिला दरोगा किरण सोनी ने उसकी पिटाई कर दी। उसके हाथ से खून टपक रहा था। महिला दरोगा ने उसे एक के बाद एक कई थप्पड़ लगाए। फिर बाल पकड़कर जबरदस्ती घसीटते हुए गाड़ी में बैठाया और अस्पताल ले गईं। मामला गुरुवार की देर रात सुलतानगंज थाने का है। जहां प्रेमी मनीष कुमार (28) के घर प्रेमिका साक्षी कुमारी (24) धरने पर बैठी थी। साक्षी को भनक लगी थी कि मनीष की शादी कहीं और हो रही है। इसकी सूचना पर महिला थाने की थानेदार किरण सोनी पहुंची थीं। पूरा मामला शादी का झांसा देकर यौन शोषण से जुड़ा है। साक्षी का कहना है कि 2023 में सुल्तानगंज थाने के प्राइवेट ड्राइवर मनीष कुमार और अब्जूगंज निवासी साक्षी कुमारी के बीच थाने में ही संपर्क हुआ। बातचीत दोस्ती में बदली और फिर दोस्ती प्यार में। इस बीच दोनों ने शादी करने का फैसला किया। एक होटल में मनीष ने साक्षी की मांग में सिंदूर भरी और साथ जीने-मरने की कसमें खाई। मनीष ने कई बार शारीरिक संबंध भी बनाए। इसके बाद मनीष के परिजनों ने साक्षी को रखने से इनकार कर दिया। साक्षी को जानकारी मिली कि मनीष की कहीं और शादी होने वाली है, तो गुरुवार की देर रात साक्षी मनीष के घर पहुंच गई।

बगहा के रामनगर में पलटी पुलिस की गाड़ी

बगहा। के रामनगर-नरकटियागंज मुख्य मार्ग पर किशोरी वाटिका के समीप शुक्रवार को एक बड़ा हादसा होते-होते टल गया। रामनगर थाना की गश्ती गाड़ी का अचानक बैलेंस बिगड़ गया और गाड़ी पलट गई। वाहन में सवार तीन महिला सिपाही, एक सब-इंस्पेक्टर, और एक ड्राइवर को हल्की चोट आई है। घटना के समय पुलिसकर्मी नियमित गश्ती पर थे। दुर्घटना की सूचना मिलते ही दूसरी पुलिस गाड़ी मौके पर पहुंची और घायल पुलिसकर्मियों को अस्पताल पहुंचाया। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, ब्रेक फेल होने के कारण गाड़ी का नियंत्रण खो गया और यह हादसा हुआ। नगर परिषद की टीम ने तुरंत कार्रवाई करते हुए जेसीबी की सहायता से पलटी हुई गाड़ी को बाहर निकाला। इस घटना से इलाके में हड़कंप मचा गया। लेकिन, स्थानीय लोगों ने पुलिसकर्मियों के सुरक्षित होने पर राहत की सांस ली। इसी दौरान यह हादसा हुआ है। बता दें कि संयोग अच्छा था कि जब हादसा हुआ, उस दौरान आगे कोई वाहन या फिर कोई व्यक्ति नहीं था। इससे बड़ा हादसा होने से बच गया।

संक्षिप्त डायरी

भागलपुर में आमरण अनशन पर बैठी छात्रा बेहोश

भागलपुर। नवगछिया में मदन अहिल्या महिला कॉलेज में बना छात्रावास धूल फांक रही है। इसको लेकर कॉलेज की छात्राएं शुक्रवार से आमरण अनशन पर बैठी है। उनकी मांग है कि कॉलेज में सालों से बनकर तैयार छात्रावास को चालू किया जाए। वहीं, आमरण अनशन के दौरान एक छात्रा भी बेहोश हो गई। इसके बाद आमरण अनशन पर बैठी छात्राओं ने कॉलेज के मुख्य द्वार पर ताला लगा दिया। मालूम हो की नवगछिया पुलिस के एकमात्र महिला कॉलेज होने के साथ-साथ नवगछिया से सटे जिला कटिहार, खगड़िया, पूर्णिया, मधेपुरा , बांका, भागलपुर के छात्रा भी लाभान्वित होते हैं। दूर से आने के कारण वैसे छात्रा रोज कॉलेज नहीं आ पाते हैं। इससे उनका 75 प्रतिशत हाजरी पूरी नहीं हो पाती है। वैसे छात्राओं को रह कर पढ़ाई करने के लिए कॉलेज कैंपस में दो छात्रावास का निर्माण भी करवाया गया है। लेकिन वह तक चालू नहीं हो सका है। एक छात्रावास साल 2004 में ही बनाया गया था। जिसे हैंडओवर तो कर दिया गया, लेकिन वो तक चालू नहीं हो सका। वहीं, साल 2008 में एक और छात्रावास का निर्माण करवा गया वो अब तक हैंड ओवर नहीं किया गया है। दोनों छात्रावास का आलम यह है कि वह खंडहर में तब्दील हो चुका है। दीवारें झड़ने लगी है। कभी भी बड़ा हादसा हो सकता है। बिना छात्रावास चालू हुए ही मरम्मती का काम करवाना अति आवश्यक है। इसके बावजूद अब तक छात्रावास को चालू नहीं करवाया गया है। इससे छात्रों को पैसा खर्च कर दूर दराज से कॉलेज आना पड़ता है। छात्रावास को चालू कराने को लेकर छात्राओं ने लगातार महाविद्यालय में मांग पत्र, विश्वविद्यालय में कुलपति को मांग पत्र, धरना प्रदर्शन भी किया। यहां तक की छात्रा भूख हड़ताल पर भी बैठी, फिर भी विश्वविद्यालय प्रशासन की आंखें नहीं खुली। बहुत बार समय अधिक आने में लगने के कारण कक्षा या फिर परीक्षा भी छुट जाता है। कोई आवश्यक कार्य के लिए अगर दूसे जिला से छात्रा आती है तो उन्हें रात्रि विश्राम का बंदोबस्त करना पड़ता है। यही अगर महाविद्यालय में छात्रावास रहता तो फिर ये सभी परेशानी नहीं होती। छात्रा दीक्षा कुमारी ने कहा कि हमारे कॉलेज में बहुत सारी समस्या है। हमलोग पिछले 8 सालों से कोशिश कर रहे हैं, लेकिन अभी तक हमलोगों का नहीं सुना गया है। हर बार कुलपति हमें आश्वासन देते हैं कि 45 दिन के अंदर किया जाएगा। हर बार तारीख देते हैं, लेकिन हमलोगों का काम नहीं सुनते हैं। हमलोगों का मुद्दा है कि कॉलेज में हॉस्टल बनकर तैयार है लेकिन उसे चालू नहीं किया जा रहा है। पानी की व्यवस्था नहीं है। ढऋ की पढ़ाई की व्यवस्था नहीं है। दिव्या भारती ने कहा कि मांगें तो बहुत हैं। हम स्पोर्ट्स में हैं। जब गेम की तैयारी होती है तो यहां पूरा जंगल भरा हुआ है। हमलोगों को खेलने के लिए जगह नहीं मिलती है। जंगल में गेम खेलने की वजह से किसी को सांप काट लेता है, तो कभी कुछ हो जाता है। अभी थोड़ी देर पहले एक छात्रा बेहोश हो गई। लेकिन प्रिंसिपल देखने तक नहीं आए। यहां तक उनको एसी से निकलने में दिक्कत है। मैं पूर्णिया जिला की रहने वाली हूं और मैं भागलपुर जिला में आकर पढ़ाई करती हूं।

गया में दबंगों ने शख्स का पैर काटकर किया अलग

गया। जिले के अतरी थाना क्षेत्र के रंगपुर के रहने वाले युवक रंजीत यादव (32) का पैर काट दिया गया है।। रंजीत का फिलहाल मगध मेडिकल कालेज अस्पताल में इलाज चल रहा है। उसकी एक पैर घुटने के नीचे से अलग कर दिया गया है। वहीं हाथ भी काटने की कोशिश की गई थी। घटना की वजह आपसी रंजिश बताई जा रही है। अतरी थानाध्यक्ष डॉ. नरेंद्र प्रसाद ने बताया कि घटना की सूचना पुलिस को मिली है। फिलहाल पीड़ित पक्ष घायल का इलाज करवा रहा है। उनसे आवेदन की मांग की गई है, लेकिन अब तक आवेदन नहीं मिली है। रंजीत के साले पप्पू कुमार ने बताया कि रंजीत के परिवार के सदस्य राजगीर गए थे। इस बीच रंजीत किसी काम से बाइक से बाजार रहा था। रास्ते में पहले से घात लगा कर बैठे लोगों ने रंजीत को घेर कर अपने कब्जे में लिया और उसके साथ मारपीट कर उसका पैर धारदार हथियार से काट दिए। पैर घुटने के नीचे से अलग कर दिया गया है।

जीतन सहनी मर्डर केस उलझा, शक के दायरे में परिजन

पटना। विकासशील इंसान पार्टी (वीआईपी) सुप्रीमो मुकेश सहनी के पिता जीतन सहनी(70) का मर्डर केस उलझता जा रहा है। दो दिन पहले पुलिस इस मामले में कासिम अंसारी को गिरफ्तार की है। इसे मुख्य आरोपी बताया गया है। अब पुलिस को शक है कि इस हत्याकांड में मुकेश सहनी के रिश्तेदार का भी हाथ है। पुलिस उनके रिश्तेदारों से पूछताछ कर रही है। इसमें एक-दो परिजन शक के दायरे में हैं। हालांकि दरभंगा के एसएसपी जगरनाथ रेड्डी फिलहाल इस मामले में कुछ भी बोलने से बच रहे हैं। पुलिस ने इस मर्डर केस को लगभग सॉल्व करने का दावा किया था। थ्योरी थी कासिम सूद का पैसा देने में असमर्थ था। इसलिए अपने साथियों के साथ मिलकर हत्या कर दी। लेकिन मुकेश सहनी का कहना है कि उनके पिता लोगों की मदद करते थे। सूद की बात को उन्होंने नकार दिया है। मुकेश सहनी ने पुलिसिया जांच पर सवाल उठाए हैं। उन्होंने जल्दबाजी में फैसला लेने के बजाय डिटेल्ड तहकीकात करने का आग्रह किया है। उन्होंने कहा कि दिवंगत जीतन सहनी ब्याज का धंधा करते थे, इस विषय पर स्थानीय लोगों से जब पूछा जाएगा, तो लोग खुद कहेंगे, नहीं करते थे। वे स्थानीय लोगों की मदद जरूर करते थे। अगर कोई किसी की मदद करे और वही फिर मार दे तो यह सोचनीय है, कोई किसी को क्यों मदद करेगा? एसएसपी जगरनाथ रेड्डी ने बताया कि हत्या में इस्तेमाल हथियार अब तक बरामद नहीं किया गया है। पुलिस हथियार बरामद करने में जुटी है। वहीं, गिरफ्तार आरोपी को रिमांड पर लेकर पूछताछ की जाएगी। इसको लेकर प्रक्रिया शुरू की गई है। उन्होंने आगे कहा कि अगल-बगल लगे सभी सीसीटीवी की जांच की है। अब तक कोई अलग से सबूत नहीं मिले है। कुछ लोग संदिग्ध के घेरे में हैं, उन लोगों की भी जांच की जा रही है। इसके साथ ही कई लोग शक के घेरे में है। अभी किसी को क्लीन चिट नहीं दे सकते हैं। मुकेश सहनी के चचेरे भाई पवन सहनी ने DGP को दिए पत्र में बताया है कि आरोपी ने अपना जुर्म कबूल कर लिया है, लेकिन आरोपी के इकबालिया बयान के बाद भी अभी तक पुलिस घटना में इस्तेमाल हथियार को नहीं ढूंढ पाई है। घटना में इस्तेमाल किया हथियार कहां है। इसके लिए पुलिस की ओर से पूरे तालाब की उड़ाही की जा चुकी है। इस मामले पर एसएसपी ने कहा कि हथियार की तलाश जारी है। पुलिस के मुताबिक पकड़े गए अंसारी ने जीतन सहनी से 2022 में एक लाख और 2023 में 50 हजार रुपए सूद पर लिया था। इस पैसे को लेकर ही जीतन की हत्या की गई है। आरोपी काजिम अंसारी कपड़े की दुकान चलाता था। पैसे के अभाव में दुकान बंद हो गई थी। फिलहाल बेरोजगार था। जीतन सहनी से डेढ़ लाख रुपए 4% मासिक ब्याज पर अपनी जमीन गिरवी रख कर लिया था। और जमीन वापस करने की बात कर रहे थे।

खरपतवारों की विशेषताएं स्वभाव और हानियां

खरपतवार धरती पर बिन बुलाए देशी और विदेशी मेहमान हैं। दुखद पहलू यह है कि इसमें विदेशी खरपतवार ज्यादा सिर उठाये हुए हैं। पचास के दशक में अमेरिका से पी.एल. 480 योजना के तहत आयातित गेहूं के साथ पारथेनियम भारत आया। असल में इस दौरान विदेशी वनस्पति के देश में प्रवेश के संगरोधन नियम ज्यादा प्रभावी नहीं थे। यही नहीं उस समय भूखी जनता के पेट की आग को बुझाने का मुख्य मुद्दा हमारे सामने था। इसके अलावा गेहूँसा/मंडूसी (फैलेरिस माइनर) नामक घास के बीच मिश्रित रूप से हरित क्रांति से पूर्व मैक्सिको से आयातित गेहूं के साथ आये। यही घास जिसको हमारे किसान गेहूं का मामा या गुल्ली डंडा कहते हैं, आज गेहूं की फसल की खुराक खा जाने वाला मुख्य खरपतवार है (डॉ. राजवीर शर्मा 2005)

यह निर्विवाद सत्य है कि खरपतवारों की उपस्थिति फसल की उपज को कम करने में सहायक है। किसान जो अपनी पूर्ण शक्ति व साधन फसल की अधिकतम उपज प्राप्त करने के लिये लगाता है, ये अनैच्छिक पौधे इस उद्देश्य को पूरा नहीं होने देते। खरपतवार फसल के पोषक तत्व, नमी, प्रकाश, स्थान आदि के लिए प्रतिस्पर्धा करके फसल की वृद्धि, उपज और गुणों में कमी कर देते हैं, (डॉ. अनिल दीक्षित, डॉ.एन.टी. यदुराजू और डॉ.जे.एस. मिश्रा, 2004)।

खरपतवारों की विशेषताएं तथा स्वभाव

खरपतवार विशेष प्रकार की वृद्धि करने के स्वभाव तथा बीजोत्पादन के ढंग रखते हैं। मुख्य विशेषताओं का संक्षिप्त विवरण निम्न लिखित है:–

- अनेक खरपतवार विषम परिस्थितियों में अच्छी प्रकार वृद्धि करते हैं।
- अनेक खपतवार वानस्पतिक ढंग से उत्पन्न होते रहते हैं और अपनी संतान वृद्धि/प्रसार करते हैं। यदि उनको बीजोत्पादन से रोक दिया जाये तब भी वे नये पौधों को जन्म देते रहेंगे और उनका प्रसार होता रहेगा। जैसे मोथा की भौमिक गांठें, हिरनखुरी की भूमिगत जड़ें तथा तने।
- बहुत से खरपतवार चिपकने वाले गोंद जैसे पदार्थों से ढके रहते हैं। इनमें कड़े रोयें, तथा इनमें कांटे पाये जाते हैं। इन उपायों से वे पशुओं तथा मनुष्यों द्वारा नष्ट होने से अपनी रक्षा करते हैं।
- अनेक खरपतवार फसलों से सफलतापूर्वक प्रतियोगिता करते हैं, क्योंकि वे विषम परिस्थितियों में अपने रूपान्तरित विधि से जीवन यापन की क्षमता रखते हैं
- असंख्य बीज प्रतिवर्ष खरपतवार द्वारा उत्पन्न होते हैं।
- खरपतवार के बीज बहुत वर्षों तक जमीन के अंदर दबे रहते हैं और उनकी अंकुरण शक्ति नष्ट नहीं होती है। यह शक्ति दस, बीस और तीस वर्षों तक भी बनी रहती है बथुआ में देखा गया है कि इसके बीज बीस से चालीस वर्षों तक भूमि में दबे रहने पर जमने की शक्ति रखते हैं।
- कुछ खरपतवार के बीज उसी समय पकते हैं जबकि फसल पक कर तैयार होती हैं। अथवा फसल पक कर तैयार होने के पहले ही खरपतवार के बीज भूमि पर गिर जाते हैं या फसल के साथ ही काट लिए जाते हैं।
- कुछ बीज फसलों के बीज से इतनी समानता रखते हैं कि उनको करना बहुत ही कठिन कार्य है।
- खरपतवार की जड़ें बहुत ही विकसित होती हैं और मिट्टी में गहराई तक पहुंचकर अपना खाद्य पदार्थ प्राप्त करने की क्षमता रखती है। जड़ों की वृद्धि खरपतवारों में फसलों की अपेक्षा अधिक होती है। यह देखा गया है कि हिरनखुरी की जड़ें 6 मीटर की गहराई तक भूमि में जाती है। जवासा की जड़ें 3 से 4 मीटर और वायसुरी तथा कांस की जड़ें 6 मीटर की गहराई तक भूमि के नीचे पहुंचती हैं।
- खरपतवारों में रोगों और कीटों के आक्रमण को रोकने की क्षमता होती है।

द्य खरपतवार हर प्रकार की कमजोर भूमियों में उग सकते हैं, जैसे ऊसर, बंजर, कंकरीली तथा दलदली भूमियों में भी खरपतवार अच्छी प्रकार अपना प्रसार करते हैं।

- घास पात के पौधे भूमि से पोषक पदार्थों का उपयोग करते हैं जिसकी मात्रा उपयोगी फसलों के पौधों द्वारा प्रयोग होने वाले पोषक पदार्थों की तुलना में अधिक होती है। जंगली सरसों (ब्रेसिका साइनेन्सिस) की जई के पौधे की अपेक्षा दुगने पोटाश की आवश्यकता होती है।
- घासपात कृषि कार्य में अवरोध उत्पन्न करते हैं, श्रम एवं उपकरणों के खर्च में वृद्धि करते हैं तथा फसलों के गुण एवं उत्पादन में कमी करते हैं।
- घासपातों से आक्रांत फसलों की कटाई चाहे श्रमिकों से कराई जाए या मशीनों से, किंतु श्रम खर्च में निश्चित वृद्धि होती है। घासपातों के कारण कटाई के यंत्रों में अधिक टूट–फूट, गत्यवरोध तथा अधिक मूल्य द्वारा ह्रास होता है।
- अनाज में मिले घासपातों के बीजों के कारण उपज की गुणवत्ता कम होती है तथा इसका बाजार मूल्य कम मिलता है। गेहूं में लेथिरस एफाफा (खेसरी, मटरी) आदि सामान्य घासपातों के बीज मिले होने पर बाजार में उसकी कीमत ही कम नहीं मिलती अपितु खाद्यमान भी कम हो जाता है। इसी प्रकार दुधारू पशु के चारे में बन लहसुन (वाइल्ड गार्लिक) मिल जाने पर दूध में अप्रिय गंध आने लगती है। पशुओं के बालों में कोलकबर चिपका होने से उनकी कीमत कम हो जाती हैं।
- घासपात के कारण चारागाहों की घास उत्पादकता

कम हो जाती है तथा भूमि मूल्य में ह्रास होता है। इस प्रकार की क्षति विशेषकर बहुवार्षिक घासपातों के कारण होती है।

- घासपात कीटों और पीड़क रोगों को आश्रय प्रदान करते है तथा इनके वैकल्पिक परपोषियों का कार्य करते हैं जो उपयोगी फसलों की क्षति पहुंचाते हैं। उदाहरणार्थ जंगलीगाजर पर रस्ट फ्लाई तथा गाजर का घुन होते हैं जो गाजर की फसल पर आक्रमण करते हैं। इसी प्रकार घासपातों पर फफूंदी और अन्य रोगाणु बहुगुणित होते रहते हैं तथा फसलों को हानि पहुंचाते हैं।
- घासपात सिंचाई और जल निकास व्यवस्था में बाधा उत्पन्न करते हैं। नालियां रुक जाती हैं तथा घासपात के बीज जल के साथ ऐसे खेतों में चले जाते हैं जहां सिंचाई जल जाता है। इसके अतिरिक्त जलीय घासपात झीलों व तालाबों इत्यादि को क्षति पहुंचाते हैं।
- कृषि और उद्यानों को हानि पहुंचाने के अलावा घासपात वनों को भी हानि पहुंचाते हैं। वनों की पुनर्जनन अवधि कभी–कभी 15–30 वर्ष तक होती है तथा अनुपयोगी पौधों की काष्ठीय भूमिगत वृद्धि को यदि ठीक से नियंत्रित न किया जाय तो यह उपयोगी पौधों के साथ तीव्र स्पर्धा करती है। लेन्टाना दक्षिण भारत तथा हिमाचल प्रदेश के चंदर (सेन्टेलम) वनों के लिए पहले ही घातक सिद्ध हो रहा है। देवदिकर एवं सहयोगियों के अनुसार यूफोर्बिया जेनिकुलाटा आदि कुछ घासपाती से रस लेने के कारण मधुमक्खियों को बहुधा विषाक्तता हो जाती है। घासपात के खिले पुष्प मधुमक्खियों को आकर्षित करने में उपयोगी फसलों से स्पर्धा करते हैं जिससे इनमें परागण कम हो जाता है और अन्ततः उपज कम हो जाती है। (देवदिनकर 1961)।

खरपतवार प्रबंधन

प्रतिबंधात्मक/निवारण विधियां

इस विधि में वे क्रियाएं शामिल हैं जिनके द्वारा फसलों के खेतों में खरपतवारों के प्रवाह को रोका जा सकता है जैसे–

- खरपतवार रहित शुद्ध प्रमाणित बीज बोना।
- कृषि में प्रयोग आने वाली मशीन व यंत्र साफ हो।
- सिंचाई की नालियां व नहरों के किनारे उगे हुए खरपतवारों को समय से नष्ट कर दिया जाए।
- अच्छी तरह से सड़ी पकी गोबर और कम्पोस्ट खाद का खेतों में इस्तेमाल करें।
- ज्यादातर बहुवर्षीय खरपतवार जैसे कांस, पैराग्रास, दूब घास, मोथा, भोण्ड घास, कांदी इत्यादि खेतों की मेड़ के माध्यम से चुपके–चुपके खेत में प्रवाह करते हैं और बाद में बड़े पैमाने पर पूरे खेत में फैल जाते हैं इसलिए खेत के चारों तरफ की मेड़ की साफ–सफाई रखना बहुत आवश्यक है।

नियंत्रण विधि

इस विधि के तहत ऐसी क्रियायें आती हैं जिनके द्वारा बोआई के पहले और उनके बाद अथवा जब खरपतवार खेत में खड़ी फसल के साथ–साथ उग आते हैं तब निम्नलिखित विधियों द्वारा खरपतवारों को नष्ट किया जा सकता है।

यांत्रिक विधि

खरपतवार नियंत्रण की यह एक सरल और प्रभावी विधि है। विभिन्न फसलों की प्रारंभिक अवस्था में बोआई के 25 से 45 दिन के बीच का समय खरपतवारों से प्रतियोगिता की दृष्टि क्रांतिक समय है। अतः प्रारंभिक अवस्था में ही फसलों को निराई–गुड़ाई, खुरपी, फावड़ा, व्हील हो, हैण्ड हो की सहायता से करने से खरपतवारों का नियंत्रण प्रभावी ढंग से होता है और फसल की पैदावार में वृद्धि होती है।

शस्य विधि – ग्रीष्मकालीन जुताई और मेड़ों की सफाई– मई–जून में जब तापमान 45 सेंटीग्रेड के आस–पास रहता है तब यदि खेतों की जुताई की जाये तो कीड़े बीमारियों के साथ–साथ खरपतवारों के बीज भी भूमि के अंदर से सतह पर आ जाते हैं।

समय पर बोनी

कहा जाता है कि स्वस्थ फसल की सबसे प्रबल खरपतवारनाशी है। बचाव से सुरक्षा बेहतर के सिद्धांत के अनुसार फसलों की अनुशंसित समय पर बोनी करें जिससे अनुकूल जलवायु और भूमिगत परिस्थिति पाकर अंकुरण शीघ्र हो तथा फसल के पौधे पुष्ट होकर खरपतवारों से सफल प्रतिस्पर्धा कर सके।

कतार बोनी

छिटक कर खाद, उर्वरक तथा उसके ऊपर बीज छिटक कर बोने से खाद, उर्वरक का काफी हिस्सा खरपतवार चट कर जाते हैं। परिणामस्वरुप फसल, खरपतवार प्रतिस्पर्धा में फसल कमजोर हो जाते हैं। कतारों में बोनी करने से नीचे उर्वरक और उसके ऊपर बीज गिरने से पोषक तत्व सिर्फ फसलों के पौधों को ही मिल पाते हैं, कतार बोनी के साथ रसायनिक नींदानाशक प्रयोग यंत्र से अथवा हाथ से बचे खरपतवार की निदांई करने से एक चौथाई खर्च आता है।

सही फसल चक्र अपनाकर

एक ही तरह की फसलों को अलग–अलग मौसम में लगातार कई वर्षों तक खेतों में उगाने से खरपतवारों की समस्या जटिल हो जाती है। इसलिए जरुरी है कि खेत में पूरे साल रबी, खरीफ में एक ही तरह की फसलें न लेकर अलग–अलग मौसम में अलग–अलग तरह की फसलें जैसे खरीफ में उड़द, मूंग के बाद रबी में गेहूं, चना, मटर, मसूर, सरसों, अलसी इत्यादि फसलें बदल–बदलकर बोना चाहिए। जिससे खरपतवारों को काफी हद तक रोका जा सकता है।

जीरो टिलेज

इस पद्धति से खरीफ की फसल की कटाई के तुरंत बाद आवश्यक नमी की अवस्था में बिना किसी प्रकार का भूपरिकरण किये ही सीधे जीरो टिल फर्टी सीड ड्रिल नामक यंत्र से रबी फसलों की बोनी कर दी जाती है। इस विधि में चूंकि जुताई नहीं की जाती है तथा बोनी कतार में ही की जाती है जिससे खरपतवारों को पोषक तत्व नहीं मिल पाते तथा खेत में उपस्थित खरपतवार पूर्व में ही अंकुरित हो चुके होते है और फसल के पुट एवं स्वस्थ्य पौधे होने के कारण खरपतवार ज्यादा नुकसान नहीं पहुंचा पाते हैं।

हाथ से निंदाई

विभिन्न फसलों में अनुशंसित क्रांतिक अवधि में ही प्रारंभिक 20 से 40–45 दिन की अवस्था में ही हाथ से निदांई करना चाहिए जिससे निंदाई के साथ–साथ गुड़ाई भी हो जाती है जो पौधों के जड़ों के श्वसन आदि क्रियाओं में भी लाभकारी होती है।

जैविक नियंत्रण

ऐसी पद्धति जिसमें खरपतवार नियंत्रण के लिए इनके प्राकृतिक शत्रुओं (कीट, रोगजनक, कवक, जीवाणु, निमाटोड आदि) का उपयोग इस प्रकार किया जाता है ताकि खरपतवार की उपस्थिति से फसलोत्पादन में न्यूनतम आर्थिक हानि हो जैविक नियंत्रण कहलाती है। वे नींदानाशक जो सूक्ष्म जीवाणुओं जैसे कवक, जीवाणु, वायरस, निमाटोड आदि में तैयार किया जाता है। जैव नींदानाशक कहलाते हैं। भारत में जैविक नियंत्रण गाजर, घास, जलकुंभी जैसे खरपतवारों पर ही व्यावसायिक स्तर पर ही कुछ क्षेत्रों में अपनाया जा रहा है। निओचेटिन बीटल गाजर घास का प्रभावी नियंत्रण करता है।

समन्वित विधि

खरपतवार प्रबंधन अर्थात इससे होने वाली क्षति से फसल को सुरक्षित रखकर अधिकाधिक उत्पादन एवं आय प्राप्त करने के लिए खरपतवार प्रबंधन की सस्य यांत्रिकी एवं रसायनिक विधियों का समन्वित प्रयोग सर्वोत्तम विधि है। इन तीनों विधियों को एक साथ किसी भी फसल में उपयोग करने पर फसल, खरपतवारों के साथ प्रतियोगिता से बचती है। अन्यथा केवल एक विधि के प्रयोग से किसी न किसी अवस्था में खरपतवार प्रतियोगिता करते ही है। उक्त तीनों विधियों के समन्वय से समय पर सभी आवश्यक कार्य संपादित होने के साथ ही श्रमिकों की कम आवश्यकता तथा व्यय में भी कमी होती है। अतः कृषकों को खरपतवार प्रबंधन में विशेष सलाह है कि सस्य विधियों को अपनायें साथ ही यांत्रिकी विधि से नियंत्रण के उपाय करें तथा रसायनिक विधि द्वारा भी नींदा नियंत्रण के उपाय को अपनी खेती की तरक्की के साथ जोड़े तभी इस विषम समस्या से अपनी फसल की सुरक्षा कर सकेंगे एवं अन्न उत्पादन में आये ठहराव को गति प्रदान कर देश ही अर्थव्यवस्था में पूर्व की भांति अपने योगदान को सुनिश्चित करेंगे।

प्रमाणित/ नींदारहित बीज का प्रयोग

अक्सर नींदा के बीज फसल की कटाई मिसाई के समय फसल के बीजों के साथ मिल जाते हैं। फसल की बोनी के साथ–साथ उनकी भी बोनी हो जाती है और ये फसल से पहले उगकर कड़ी प्रतिस्पर्धा करते हैं। अतः सर्वदा उन्नत किस्म एवं गुणवत्ता का प्रमाणित बीज ही उपयोग में लायें।

मृदा सौर उष्मीकरण (सोलेराइजेशन)

यह मिट्टी से पनपने वाले एवं मिट्टी जनित कवक, जीवाणु, कीट एवं खरपतवारों के नियंत्रण की आधुनिक एवं अत्यंत प्रभावी तकनीक है। यह एक जल उष्मीय (हाइड्रोथर्मल) तकनीक है। जिसमें नम मिट्टी को ज्यादा गर्मी के समय पारदर्शक पॉलीथिन शीट से 4–8 सप्ताह तक ढंक दिया जाता है जिससे मिट्टी या तापमान 8 से 12 अंश सेंटीग्रेड तक बढ़ जाता है और ज्यादातर खरपतवारों के बीज एवं उनकी अंकुरण क्षमता समाप्त हो जाती है। इस विधि में मिट्टी में पर्याप्त नमी का होना आवश्यक है। पॉलीथिन शीट पतली (25–30 माइक्रोमीटर) क्योंकि यह सस्ती होती है तथा ताप वृद्धि में ज्यादा प्रभावी होती है। इस विधि से 90 प्रतिशत से ज्यादा नींदा नियंत्रण हो जाता है।

श्रीलंका दौरे पर टीम चयन को लेकर विवादों में आये गंभीर

जडेजा, रुतुराज और अभिषेक को टीम में शामिल नहीं करने पर उठे सवाल

मुम्बई (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम के मुख्य कोच गौतम गंभीर ने श्रीलंका दौरे के लिए जिस प्रकार टीम में कई अच्छे खिलाड़ियों को जगह नहीं देते हुए नये खिलाड़ियों को शामिल किया है। उसे उनपर सवाल उठने लगे है। श्रीलंका दौरे की लिए चयनित टीम में ऑलराउंडर रविन्द्र जडेजा, के अलावा रुतुराज गायकवाड़ और अभिषेक शर्मा को भी जगह नहीं मिली है जबकि रियान पराग ओर शिवम दुबे को कमजोर प्रदर्शन के बाद भी शामिल कर लिया गया है।

रोहित शर्मा के टी-20 प्रारुप से संन्यास लेने के बाद सभी को उम्मीद थी कि उपकप्तान हार्दिक पंड्या को कप्तानी मिलेगी पर सूर्यकुमार यादव को कप्तान बनाया गया। सोशल मीडिया पर प्रशंसकों ने गंभीर के फैसलों पर सवाल उठाये हैं। वहीं ये भी कहा जा रहा है कि पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धोनी के करीबी खिलाड़ियों का बाहर किया जा रहा है। इसका कारण ये है कि जडेजा, रुतुराज और पंड्या के धोनी से काफी अच्छे संबंध रहे हैं।

पहले बात करते हैं रुतुराज की। रुतुराज को धोनी का बेहद करीबी माना जाता है। आईपीएल में धोनी ने गायकवाड़ को चेन्नई सुपरकिंग्स टीम में अपनी कप्तानी में ही आगे बढ़ाया था। अब गायकवाड़ चेन्नई सुपरकिंग्स के नए कप्तान हैं। विश्व कप के ठीक बाद जिम्बाब्वे दौरे पर इस क्रिकेटर ने दो अर्धशतक लगाये थे। इसी तरह जिम्बाब्वे दौरे पर 46 गेंद में में शतक लगाने वाले अभिषेक शर्मा को भी टीम में नहीं रखा गया है। वहीं जडेजा भी धोनी के करीब रहे हैं। वह आईपीएल में चेन्नई सुपरकिंग्स की ओर से खेलते थे। जडेजा से टी20 से संन्यास ले लिया है और माना जा रहा है कि वह भविष्य की योजनाओं के लिए शामिल नहीं है। इसलिए उन्हें बाहर किया गया है।

इसके अलावा पंड्या भी धोनी के पसंदीदा खिलाड़ियों में शामिल रहे हैं पर गंभीर के कोच बनते ही उनमी जगह सूर्यकुमार को कप्तान बना दिया गया। इसके लिए तर्क ये दिया गया कि पंड्या बार-बार चोटिल होने के कारण लगातार टीम के लिए उपलब्ध नहीं होते। वहीं गंभीर के करीब श्रेयस अय्यर की टीम में वापसी हुई है।

'वह कप्तानी के हकदार थे', टी20आई की कप्तानी न मिलने पर हार्दिक पांड्या को मिला कैफ का समर्थन

नई दिल्ली (एजेंसी)। श्रीलंका दौरे के लिए सूर्यकुमार यादव को टी20आई कप्तान नियुक्त किए जाने के बाद भारत के पूर्व क्रिकेटर मोहम्मद कैफ ने ऑलराउंडर हार्दिक पांड्या को टी20आई कप्तानी संभालने के लिए अपना समर्थन व्यक्त किया है। विशेष रूप से युवा बल्लेबाज शुभमन गिल को हार्दिक की जगह नया टी20आई उप-कप्तान नियुक्त किया गया है जिन्होंने 2024 टी20 विश्व कप जीत के दौरान उस भूमिका में काम किया था।

कैफ ने कहा कि अजीत अगरकर की अगुवाई वाली चयन समिति को टीम का नेतृत्व करने के अपने पिछले अनुभव को देखते हुए टी20आई कप्तानी के लिए पांड्या का समर्थन करना चाहिए था। कैफ ने कहा, 'मुझे लगता है कि हार्दिक पांड्या को 'शायद कप्तान बनना चाहिए' (श्रीलंका दौरे के लिए)। हार्दिक ने दो साल तक गुजरात टाइटन्स की कप्तानी की है और अपने पहले साल में ही उन्होंने फाइनल में जगह बनाई...हार्दिक को टी20आई टीम की कप्तानी करने का अनुभव है। वह टी20 विश्व कप में उप-कप्तान भी थे। अब एक नया कोच आ गया है, नई योजना होगी।'

उन्होंने कहा, 'सूर्या भी एक अच्छा खिलाड़ी है, वह सालों से खेल रहा है। वह नंबर 1 टी20 खिलाड़ी है, मुझे उम्मीद है कि वह कप्तान की जिम्मेदारी अच्छी तरह से निभाएगा। लेकिन मुझे लगता है कि उन्हें हार्दिक का समर्थन करना चाहिए था। गंभीर एक अनुभवी कप्तान और कोच हैं...वह क्रिकेट को बहुत अच्छी तरह समझते हैं। मुझे लगता है कि 'हार्दिक ने ऐसा कोई गलत काम नहीं किया कि उन्हें कप्तानी न मिले'। उनके पास अनुभव है, उन्होंने आईपीएल में कप्तानी की है और एक नई टीम (गुजरात टाइटन्स) को ट्रॉफी तक पहुंचाया है जिसमें नए और युवा चेहरे हैं, जो एक बड़ी बात है। उन्होंने आईपीएल में ग्राउंड जीरो से काम करके टाइटन्स को जीत दिलाई है...मुझे लगता है कि वह कप्तानी के हकदार थे। तो चलिए बस इंतजार करते हैं और देखते हैं।

महिला एशिया कप : नेपाल ने यूएई को छह विकेट से हराया

दांबुला (एजेंसी)। सलामी बल्लेबाज समझाना खड़का के नाबाद अर्धशतक और तेज गेंदबाज इंदु बर्मा के तीन विकेट की मदद से नेपाल ने शुक्रवार को यहां महिला टी20 एशिया कप क्रिकेट टूर्नामेंट के पहले मैच में संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) को 23 गेंद शेष रहते हुए छह विकेट से हराकर अपने अभियान की शानदार शुरुआत की।

खड़का ने 45 गेंद पर नाबाद 71 रन बनाए, जिसमें 11 चौके शामिल हैं। उनकी इस पारी की मदद से नेपाल ने 116 रन का लक्ष्य 16.1 ओवर में हासिल कर दिया। नेपाल ने 4 विकेट पर 118 रन बनाए। अमीरात की टीम इससे पहले 8 विकेट पर 115 रन ही बना पाई थी। उसकी तरफ से खुशी शर्मा ने 36 और कविशा एगोडेज ने 22 रन का योगदान दिया।

बर्मा नेपाल की सबसे सफल गेंदबाज रही। उन्होंने 19 देकर तीन विकेट लिए। नेपाल को भी कुछ मुश्किल पलों से गुजरना पड़ा। ऑफ स्पिनर एगोडेज (12 रन देकर 3 विकेट) ने अमीरात को वापसी दिलाने का अच्छा प्रयास किया लेकिन खड़का ने एक छोर संभाले रखा और टीम को आसानी से लक्ष्य तक पहुंचाया।

ओलंपिक में अमन , विनेश सहित सभी पहलवानों पर जीत के लिए रहेगा दबाव

नई दिल्ली (एजेंसी)। पेरिस ओलंपिक खेलों में इस बार भारत की ओर से पुरुष वर्ग में अमन सहरावत ही प्रवेश हासिल कर पाये हैं। वहीं महिला वर्ग में विनेश फोगाट सहित पांच खिलाड़ियों ने प्रवेश हासिल किया है। ऐसे में इन पहलवानों पर पदक जीतने का दबाव रहेगा। इसका कारण ये है कि भारतीय पहलवानों का प्रदर्शन ओलंपिक खेलों में हमेशा अच्छा रहा है। ऐसे में इस बार भी पहलवानों पर बेहतर प्रदर्शन का दबाव रहेगा।

अमन सहरावत (पुरुष फ्रीस्टाइल 50 किग्रा) : अमन ने 57 किग्रा भार वर्ग में रवि दहिया की जगह ओलंपिक टिकट हासिल किया है। उनका दमखम और धैर्य बनाए रखना मजबूर पक्ष है। अगर मुकाबला 6 मिनट तक चलता है तो उन्हें हराना आसान नहीं होगा। उनके खेल में रणनीति की कमी है और उनके पास दूसरी योजना भी नहीं रहती है। ऐसे में उनके लिए पेरिस में विरोधी मुश्किलें पैदा कर सकते हैं।

विनेश फोगाट (महिला 50 किग्रा) : विनेश फोगाट भारत की सबसे अनुभवी महिला पहलवानों में से एक हैं। मजबूत रक्षण और उतना ही प्रभावशाली आक्रमण उनकी ताकत है पर पिछले एक साल में उन्हें शीर्ष खिलाड़ियों के खिलाफ खेलने का अवसर मौका मिला है। इसके अलावा वह कम वजन वर्ग में भाग ले रही है। इसके लिए उन्हें अपना वजन कम करना होगा।

अंतिम पंघाल (महिला 53 किग्रा) : अंतिम पंघाल पेरिस ओलंपिक कोटा हासिल करने वाली पहली पहलवान रही हैं। अंतिम का मजबूत पक्ष उनका लचीलापन है जिससे वह विरोधी की पकड़ से जल्दी बाहर निकल जाती है। उन्होंने हालांकि एशियाई खेलों में भाग नहीं लिया और पीठ की चोट के कारण उन्हें इस साल एशियाई चैम्पियनशिप से बाहर होना पड़ा। ऐसे पिछले कुछ समय में कम प्रतियोगिताओं में भाग लेने से अभ्यास की कमी उनके लिए नुकसानदेह हो सकती है

रीतिका हुड्डा (महिला 76 किग्रा) : रीतिका अपनी ताकत के बल पर मजबूत खिलाड़ियों को भी हैरान कर देती हैं। इससे अनुभवी पहलवानों के लिए भी उन्हें हराना कठिन रहा है। रीतिका के पास ताकत और तकनीक है पर वह मुकाबले के आखिरी 30 सेकंड में अंक खो देती हैं। अगर वह बढ़त भी बना लेती है, तो भी वह उन अंकों को खो सकती है।

अंशु मलिक (महिला 57 किग्रा) : जूनियर स्तर पर अच्छा प्रदर्शन करने के बाद सीनियर स्तर में जगह बनाने वाली अंशु पदक के दावेदारों में शामिल है। मैट पर तेज़ी से मूवमेंट करना और आक्रामक खेल शैली अंशु की सबसे बड़ी ताकत है। हालांकि उनकी फिटनेस कमजोर कड़ी है। वह कंधे की चोट से परेशान रही हैं। उनका दावा है कि यह सिर्फ गर्दन की ऐंठन है, लेकिन उसका परीक्षण नहीं किया गया है।

निशा दहिया (महिला 68 किग्रा): निशा ने शुरू में काफी उम्मीद जगाई लेकिन चोटिल होने के कारण उनकी प्रगति पर प्रभाव पड़ा। वह अपनी आक्रामक शैली से मजबूत प्रतिद्वंदी को भी हैरान कर देती है। वह निडर होकर खेलती है जो उनका मजबूत पक्ष है। उन्हें हालांकि बड़ी प्रतियोगिताओं में खेलने का कम अनुभव है जो उनकी कमजोरी है। इसके अलावा मुकाबला लंबा चलने पर वह शिथिल पड़ जाती है।

एकदिवसीय टीम में जगह मिलने से उत्साहित राणा बोले, गंभीर ने बदला मेरा नजरिया

नई दिल्ली । दिल्ली के तेज गेंदबाज हर्षित राणा श्रीलंका दौरे के लिए भारतीय क्रिकेट टीम में शामिल किये जाने से उत्साहित हैं। राणा ने घरेलू क्रिकेट में अच्छे प्रदर्शन के साथ ही आईपीएल 2024 में कोलकाता नाइटराइडर्स (केकेआर) के लिए इस सत्र में 19 विकेट लिए थे। इस शानदार प्रदर्शन के कारण ही उन्हें जिम्बाब्वे दौरे पर टीम इंडिया में जगह मिली थी पर वह अंतिम ग्यारह में जगह नहीं बना पाये थे। लेकिन तब उन्हें प्लेइंग इलेवन में जगह नहीं मिली थी. हर्षित ने कहा, 'मैं कड़ी मेहनत करने में भरोसा करता हूं पर जब भी मेरी अनदेखी होती तो मैं निराश होता था पर मेरे पिता ने कभी उम्मीद नहीं छोड़ी।' हर्षित ने कहा, 'अगर खेल के प्रति मेरा नजरिया बदला है तो इसका श्रेय काफी कुछ केकेआरी के मेंटोर रहे गौतम गंभीर को जाता है। उन्होंने मेरी मानसिकता को बदल दिया। शीर्ष स्तर पर सफल होने आपको कौशल चाहिए होता है पर कौशल से ज्यादा आपको दबाव से निपटने के लिए दिल की जरुरत होती है।' गंभीर हमेशा मुझसे कहते कि मुझे तुझ पर भरोसा है जिससे भी मुझे प्रेरणा मिली।

भारतीय महिला टीम जल्द ही आईसीसी ट्रॉफी जीतेगी : स्नेह राणा

मुंबई । स्पिन आल राउंडर स्नेह राणा का कहना है कि रोहित शर्मा एंड कंपनी के हाल में टी20 विश्व कप ट्राफी जीतने से भारतीय महिला टीम को भरोसा मिला है कि वे अपनी पहली आईसीसी ट्राफी जीतने की मुहिम जारी रखेंगे। भारतीय टीम शुक्रवार से श्रीलंका में शुरू हो रहे महिला एशिया कप में फिर खिताब बरकरार रखने की दावेदार है और टीम की असली परीक्षा अक्टूबर में टी20 विश्व कप और अगले साल होने वाले वनडे विश्व कप में होगी। स्नेह राणा ने कहा, 'अगर आप पिछले दो-तीन साल में भारतीय महिला क्रिकेट टीम का प्रदर्शन देखो तो टीम अपना सर्वश्रेष्ठ कर रही है। आईसीसी ट्राफी जीतने की बात करें तो पुरुष टीम का उदाहरण देखिए, उन्हें ट्राफी जीतने में लगभग 10 साल लगे। वे लंबे समय से मेहनत और तैयारी कर रहे थे।' उन्होंने कहा, 'कुछ बड़ा हासिल करना है तो यह रातोंरात नहीं होगा। इसमें समय लगेगा। इसके लिए काफी संघर्ष और बलिदान लगेगा। लेकिन अंत में हम ऐसा करेंगे।' क्षेत्ररक्षण टीम के लिए चिंता का विषय रहा है लेकिन उनका कहना है कि इसमें सुधार करने के लिए जज्बे में कोई कमी नहीं हुई है। 2014 में पदार्पण करने वाली स्नेह राणा ने कहा, 'जब हम इतने मैच खेलते हैं तो गलतियों का काफी अधिक मौका होता है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि कोई खिलाड़ी इसमें खराब है। निश्चित रूप से जब आप मैदान पर होते हो तो आप अपने देश के लिए सर्वश्रेष्ठ करना चाहते हो।'

गुजरात टाइटन्स खरीदने की तैयारी में अडानी और टोरेंट ग्रुप, जानें कितनी है फ्रेंचाइजी की कीमत

नई दिल्ली (एजेंसी)। अडानी समूह और टोरेंट समूह इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) की फ्रेंचाइजी गुजरात टाइटन्स में नियंत्रक हिस्सेदारी की बिक्री के लिए निजी इक्विटी फर्म सीवीसी कैपिटल पार्टनर्स के साथ बातचीत कर रहे हैं। सीवीसी आईपीएल फ्रेंचाइजी में बहुमत हिस्सेदारी बेचने को तैयार है जबकि कुछ हिस्सेदारी बरकरार रखेगी। यह तब हुआ है जब भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) की लॉक-इन अवधि, जो नई टीमों को हिस्सेदारी बेचने से रोकती है, फरवरी 2025 में समाप्त हो जाएगी।

गुजरात टाइटन्स तीन साल पुरानी फ्रेंचाइजी है जिसकी कीमत 1 बिलियन डॉलर से 1.5 बिलियन डॉलर के बीच हो सकती है। सीवीसी ने 2021 में 5,625 करोड़ में फ्रेंचाइी खरीदी थी। इस मामले से जुड़े एक अधिकारी के हवाले से रिपोर्ट में कहा गया, '2021 में आईपीएल की अहमदाबाद फ्रेंचाइजी के मालिक बनने का मौका चूकने के बाद अडानी और टोरेंट दोनों गुजरात टाइटन्स में बहुमत हिस्सेदारी खरीदने के लिए आक्रामक रूप से होड़ कर रहे हैं। सीवीसी के लिए यह फ्रेंचाइजी में अपनी हिस्सेदारी का मुद्रीकरण करने का एक शानदार अवसर है।'

अन्य अधिकारी ने कहा, 'आईपीएल फ्रेंचाइजी निवेशकों का बहुत ध्यान आकर्षित कर रही हैं, क्योंकि लीग ने खुद को ठोस नकदी प्रवाह के साथ एक आकर्षक संपत्ति के रूप में स्थापित किया है।' गौतम अडानी ने पहले ही महिला प्रीमियर लीग (WPL) और UAE-brd इंटरनेशनल लीग टी20 में टीमों का अधिग्रहण करके क्रिकेट में निवेश किया है।

2023 में अडानी ने 1,289 करोड़ रुपए की शीर्ष बोली के साथ महिला प्रीमियर लीग की अहमदाबाद फ्रैंचाइज़ी हासिल की। इससे पहले गुजरात टाइटन्स के सीओओ अरविंदर सिंह ने कहा कि फ्रैंचाइजी अगले मीडिया अधिकार चक्र में लाभ प्राप्त करेगी। यहां तक कि मूल 10 फ्रेंचाइजी को भी लाभ में आने में चार से पांच साल लग गए। हमें विश्वास है कि न केवल हम लाभ में आएंगे, बल्कि हमारी ब्रांड वैल्यू भी तेजी से बढ़ेगी।'

पेरिस ओलंपिक लिए भारतीय दल में सबसे ज्यादा एथलेटिक्स खिलाड़ी

नई दिल्ली । पेरिस ओलिंपिक में भाग ले रहे 117 सदस्यीय भारतीय दल में सबसे ज्यादा एथलेटिक्स और निशानेबाज शामिल हैं। वही पिछली बार भारतीय दल में 119 खिलाड़ी थे। इसके अलावा सहयोगी स्टाफ के 140 सदस्यों को भी भेजा जाएगा। पूर्व निशानेबाज गगन नारंग दल प्रमुख बनाये गये हैं। 117 खिलाड़ियों में सबसे अधिक 29 एथलीट हैं। इनमें (11 महिला और 18 पुरुष) हैं। उनके बाद निशानेबाजी के 21 और हॉकी के 19 खिलाड़ी हैं। टेबल टेनिस में आठ जबकि बैडमिंटन में सात खिलाड़ी भाग लेंगे। भारोत्तोन में केवल एक खिलाड़ी, इसके अलावा कुश्ती, तीरंदाजी और मुक्केबाजी में 6-6 खिलाड़ी भाग लेंगे। गोल्फ में 4, टेनिस में 3, तैराकी में 2, नौकायन में 2 खिलाड़ी हैं जबकि घुड़सवारी, जूडो, रोइंग और वेटलिफ्टिंग में एक-एक खिलाड़ी भाग लेंगे। निशानेबाजी टीम में 11 महिला और 10 पुरुष खिलाड़ी शामिल हैं। टेबल टेनिस में पुरुष और महिला दोनों ही वर्ग में चार-चार खिलाड़ी शामिल हैं। वहीं सहयोगी स्टाफ की बात करें तो निशानेबाजों के साथ सबसे बड़ा दल जा रहा है। इसमें सहयोगी स्टाफ के सर्वाधिक 18 सदस्य शामिल हैं जिनमें से एक हाई परफॉर्मेंस डायरेक्टर और छह कोच हैं। इसमें चार कोच, चार फिजियो, दो मनोवैज्ञानिक और एक कंडिशनिंग एक्सपर्ट शामिल हैं। वहीं ऐथलेटिक्स में सहयोगी स्टाफ के 17 सदस्य शामिल हैं जबकि कुश्ती में 12, मुक्केबाजी में 11, हॉकी 10, टेबल टेनिस 9, बैडमिंटन 9, गोल्फ 7, घुड़सवारी 5, तीरंदाजी 4, रोइंग 4, वेटलिफ्टिंग 4 टेनिस 3, स्विमिंग 2 और जूडो 1 है।

बाबर, शाहीन, रिजवान को झटका, ग्लोबल टी20 कनाडा के लिए नहीं मिलेगी मंजूरी !

लाहौर । पाकिस्तान के स्टार तिकड़ी बाबर आजम, मोहम्मद रिजवान और शाहीन अफरीदी को आगामी ग्लोबल टी20 कनाडा में खेलने के लिए अनापत्ति प्रमाण पत्र (एनओसी) मिलने की संभावना नहीं है। सूत्रों ने जियो न्यूज को बताया कि लीग शेड्यूल के बावजूद खिलाड़ियों को एनओसी नहीं मिलेगी ताकि पाकिस्तान के अंतरराष्ट्रीय मैचों से किसी तरह का टकराव न हो। पाकिस्तान बांग्लादेश के खिलाफ दो मैचों की टेस्ट सीरीज खेलेगा जिसकी शुरुआत 21 अगस्त से होगी। कनाडाई लीग 25 जुलाई से 11 अगस्त तक खेली जाएगी। यह भी बताया गया कि एनओसी न मिलने का कारण यह है कि सभी प्रारूपों में खेलने वाले खिलाड़ियों को नीति के अनुसार प्रमाण पत्र जारी नहीं किया जाएगा। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) खिलाड़ियों को एनओसी जारी करने के पक्ष में नहीं है, क्योंकि उनके आगे बहुत व्यस्त कार्यक्रम है। स्टार पेसर नसीम शाह को भी पिछले सप्ताह द हंड्रेड में खेलने के लिए एनओसी नहीं दी गई थी। सूत्रों के हवाले से जियो न्यूज ने कहा, पाकिस्तान के क्रिकेटर द्वारा प्रस्तुत आवेदन की समीक्षा करने के बाद, एनओसी देने से इनकार करने का निर्णय एक निवारक उपाय के रूप में लिया गया है। नसीम के आवेदन को चोटों से बचाने के लिए खारिज कर दिया गया है क्योंकि युवा खिलाड़ी पाकिस्तान के लिए तीनों प्रारूपों में खेलता है और पिछले साल चोटों और फिटनेस चुनौतियों का सामना किया है। स्टार तिकड़ी के अलावा मोहम्मद आमिर, मोहम्मद नवाज, आसिफ अली और इफ्तिखार अहमद के पास भी ग्लोबल टी 20 कनाडा अनुबंध हैं। इस सप्ताह की शुरुआत में पीसीबी के अध्यक्ष नकवी ने कहा कि खिलाड़ियों को कुछ मानदंडों के आधार पर एनओसी मिलेगी। जो खिलाड़ी मानदंडों को पूरा करते हैं, उन्हें एनओसी मिलेगी। पीसीबी प्रमुख मोहसिन नकवी ने कहा, 'खिलाड़ियों को उनकी फिटनेस और प्रदर्शन के आधार पर पदोन्नत किया जाएगा। उन खिलाड़ियों के लिए कोई जगह नहीं है जो मानदंडों को पूरा नहीं करते हैं। अनुशासन पर भी कोई समझौता नहीं किया जाएगा।'

टेनिस बॉल क्रिकेट और आईपीएल, अक्षर पटेल ने टी20 विश्व कप में सफलता का राज खोला

मुम्बई (एजेंसी)। ऑलराउंडर अक्षर पटेल टी20 विश्व कप 2024 में भारत के लिए सबसे शानदार खिलाड़ियों में से एक थे। अक्षर ने टूर्नामेंट में खेल के तीनों विभागों में योगदान दिया और जब भी टीम मुश्किल में फंसी, उन्होंने भारत को बचाया। बल्ले से अक्षर ने टूर्नामेंट के फाइनल में भारत को जीत दिलाई। गेंद से अक्षर ने सेमीफाइनल में गत चैंपियन इंग्लैंड को हराने में मदद की और मैदान में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सुपर 8 में मिशेल मार्श के खिलाफ अक्षर के कैच ने खेल का रुख बदल दिया।

रवींद्र जडेजा के टी20 प्रारूप में संन्यास लेने के बाद अक्षर को लंबे समय तक ऑलराउंडर के विकल्प के रूप में देखा जा रहा है। टी20 विश्व कप में अपने सफल अभियान के बाद अक्षर ने एक साक्षात्कार में बताया कि कैसे टेनिस बॉल क्रिकेट और इंडियन प्रीमियर लीग खेलने से उन्हें आईसीसी टूर्नामेंट में दबाव को संभालने में मदद मिली। क्रिकबज से बात करते हुए अक्षर ने बताया कि टेनिस बॉल क्रिकेट में उनकी पृष्ठभूमि ने उन्हें हर तरह की गेंद पर शॉट लगाने के लिए तैयार किया। बल्लेबाज ने कहा कि उन्होंने अनुभवी गेंद से बेहतर तकनीक सीखी, लेकिन टेनिस बॉल क्रिकेट ने ही बल्लेबाजी के लिए उनकी मानसिकता को आकार दिया।

अक्षर ने कहा, 'टेनिस बॉल क्रिकेट खेलने से मेरी हिटिंग क्षमता पर असर पड़ा, क्योंकि उस प्रारूप में आप लगभग हर गेंद पर छक्का या चौका लगा सकते हैं, खासकर 10-12 ओवर के छोटे मैचों में। इसने मेरे शॉट चयन को भी प्रभावित किया। शुरुआत में मैं मुख्य रूप से लेग साइड में गेंद मारता था। हालांकि जब मैंने सीजन बॉल क्रिकेट में बदलाव किया, तो मुझे हर गेंद पर सिर्फ स्लॉग करने के बजाय स्विंग के साथ खेलने के महत्व का एहसास हुआ। मैंने अपने हिटिंग क्षेत्रों का विस्तार करने पर काम किया, सीधे खेलने पर ध्यान केंद्रित किया और क्रॉस-बैटेड शॉट्स से परहेज किया।'

उन्होंने आगे कहा, 'टेनिस बॉल क्रिकेट ने मुझे दबाव से निपटना भी सिखाया। बड़े होते हुए मैं अक्सर खुद को दबाव की स्थितियों में पाता था, जिससे मैं मानसिक रूप से अधिक स्थिर और मजबूत हुआ। मैंने शांत रहना और सकारात्मक सोचना सीखा, जो मेरे करियर में अमूल्य रहा है।'

मैं पाकिस्तान के खिलाफ नर्वस था

अक्षर को खेल के ग्रुप चरणों में न्यूयॉर्क पिच पर पाकिस्तान के खिलाफ बल्लेबाजी क्रम में ऊपर भेजा गया था। हालांकि, उस खेल में अक्षर ने कोई बड़ी पारी नहीं खेली, लेकिन बल्लेबाज ने कहा कि अचानक हुए बदलाव ने उन्हें टूर्नामेंट में किसी भी चीज का सामना करने के लिए तैयार कर दिया। उन्होंने कहा, 'पाकिस्तान के खिलाफ मुझे बल्लेबाजी क्रम में ऊपर भेजा गया। मैच से पहले, मुझे बताया गया कि अगर शुरुआती विकेट मिलते हैं तो मुझे जल्दी बल्लेबाजी करनी पड़ सकती है। उस समय मैं नर्वस था। नेट्स में, मैंने नई गेंद से अभ्यास नहीं किया और अचानक मुझे पावरप्ले में खेलना पड़ा। मेरा आईपीएल अनुभव काम आया और इसने मुझे सकारात्मक महसूस कराया। दिल्ली कैपिटल्स के लिए, मैंने पावरप्ले ओवरों में कुछ बार बल्लेबाजी की और कुछ महत्वपूर्ण पारियां भी खेलीं।'

उन्होंने कहा, 'इससे मुझे यह समझने में मदद मिली कि ऐसी परिस्थितियों में क्या करना है। मुझे सकारात्मक रहना था और इस बात की चिंता नहीं करनी थी कि मुझे कौन गेंदबाजी करेगा। मैं ज्यादा सोचने की कोशिश नहीं कर रहा था। और मुझे पता था कि मुझे स्थिति के अनुसार खेलना है। मैं बस वर्तमान में रहना चाहता था। पाकिस्तान के खिलाफ यह मेरे लिए कारगर रहा।'

खेलगांव में पहली बार बच्चों के लिए नर्सरी, दूध पिलाने के लिए अलग कमरे

खेल डेस्क - पेरिस ओलिम्पिक कई मायनों में खास होने जा रहा है। यह ऐसा पहला ओलिम्पिक होगा जिसमें पूर्णतः लैंगिक-समानता देखने को मिलेगी। इसके अलावा कार्बन उत्सर्जन में भारी कमी करना और स्टेडियम के बाहर उद्घाटन समारोह करके यह पहले ही चर्चा में है। अब इसमें एक और उपलब्धि जुड़ गई है। प्रबंधन ने पहली बार खेलगांव में मांओं के लिए नर्सरी की शुरूआत की है जिसमें एथलीट कठिन प्रतिस्पर्धा और प्रशिक्षण कार्यक्रम के बीच अपने बच्चों या शिशुओं के साथ आसानी से समय बिता सकेंगे। फ्रांसीसी राष्ट्रीय ओलिम्पिक और खेल समिति ने खेलों के भीतर पेरेंटिंग की जगह बने रहे, इसलिए स्तनपान कराने वाले एथलीटों के लिए होटल के कमरे उपलब्ध कराने का वादा किया है। इससे उन मांओं को सुविधा होगी जोकि बच्चों के कारण प्रैक्टिस या प्रतिस्पर्धा में संतुलन नहीं बिठा पाती थी। अमेरिकी ट्रैक और फील्ड एथलीट एलिसन फेलिक्स जोकि 2022 में खेल से संन्यास लेने से पहले 11 ओलिम्पिक पदक जीत चुकी हैं, ने इस आइडिया को आगे बढ़ाया है। अंतर्राष्ट्रीय ओलिम्पिक समिति के एथलीट आयोग में शामिल फेलिक्स ने कहा कि मुझे लगता है कि यह वास्तव में महिलाओं को बताता है कि आप मातृत्व चुन सकती हैं और अपने खेल में शीर्ष पर भी रह सकती हैं।

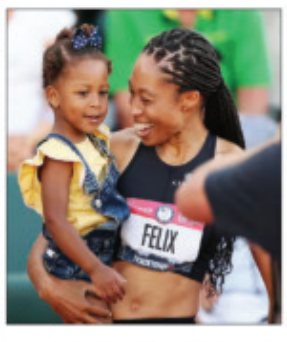

विचाराधीन कैदियों के लिए नजीर बनेगा सुप्रीम कोर्ट का यह फैसला

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने लंबे समय से जेल में बंद आरोपियों की जमानत को लेकर बड़ा फैसला सुनाया है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि अपनी जमानत अर्जी पर शीघ्र सुनवाई हो, ये अभियुक्त का मौलिक अधिकार है। इस अधिकार को जघन्य अपराधों के मामलों में भी छीना या कम नहीं किया जा सकता है। उन विचाराधीन कैदी को जमानत देने से नहीं रोक सकते जो लंबे समय से जेल में बंद है, और ट्रायल का कोई अंत नजर नहीं आ रहा है। जस्टिस जेबी पारदीवाला और जस्टिस उज्जल भुइयां की पीठ ने कहा कि लंबे समय से जेल में बंद कैदी के मामले में निकट भविष्य में ट्रायल पूरा होने की संभावना नहीं है, इसकारण यह जमानत देने का अच्छा आधार है। सुप्रीम कोर्ट ने गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) यानी यूएपीए अधिनियम के तहत आतंकवादी गतिविधियों में संलिप्तता और उच्च गुणवत्ता वाले नकली भारतीय नोटों की तस्करी के आरोप में ट्रायल का सामना कर रहे एक आरोपी को जमानत दे दी। आरोपी पिछले 9 वर्षों से जेल में बंद था। अपने फैसले में सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि इस न्यायालय ने बार-बार इस पर जोर दिया है कि संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत जीने और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकार सर्वोपरि और पवित्र है। जजों का कहना था कि यदि किसी संवैधानिक न्यायालय को लगता है कि अनुच्छेद 21 के तहत विचाराधीन अभियुक्त के अधिकार का उल्लंघन हुआ है, तब उस दंड विधान में प्रतिबंधात्मक वैधानिक प्रावधानों के आधार पर जमानत देने से नहीं रोका जा सकता।

साइबर ठगों ने व्यापारी से ठगे करीब पांच लाख, जयपुर में इस तरह की घटना हुई आम

जयपुर। साइबर ठग आए दिन नए नए तरीकों से लोगों को अपना शिकार बना रहे हैं और लाखों रुपए ऐंठ रहे हैं। ठग कभी ईडी, कभी सीबीआई तो कभी आयकर अधिकारी बनकर लोगों पर गबन और मनी लॉन्ड्रिंग का आरोप लगाकर गिरफ्तार करने की धमकी देते हैं। गिरफ्तारी से बचने का झांसा देते हुए लाखों रुपए वसूलते हैं। पिछले एक महीने में जयपुर में इस तरह की तीन घटनाएं हुई हैं। पहली घटना एक महिला बैंक मैनेजर से 17 लाख रुपये ठग लिए। दूसरी वारदात रिटायर्ड जज से पांच लाख रुपए ठग लिए। तीसरी घटना में एक कारोबारी से 4.90 लाख रुपए ठग लिए। एक बार 4.90 लाख रुपए ऐंठने के बाद साइबर ठगों ने फिर से रुपए वसूलने का प्लान बनाया। दो दिन पहले फिर से उसी व्यक्ति का कॉल आया और फिर से पांच लाख मांगने लगा। दोबारा रुपए मांगे से प्रदीप लोईवाल ने रुपए देने से इनकार कर दिया। प्रदीप ने अपने परिचितों से बताया तो उनकी सलाह पर मुकदमा दर्ज कराया गया। मामले की जांच की जा रही हैं।

जीतन सहनी हत्याकांड में मुकेश सहनी के करीबी का आया नाम

पटना। बिहार के बहुचर्चित जीतन सहनी हत्याकांड का मुख्य आरोपित भले ही पुलिस की गिरफ्त में हो लेकिन बिहार पुलिस अभी भी एक ऐसे व्यक्ति की तलाश कर रही, जिसका इस हत्याकांड से संबंध है और विकासशील इंसान पार्टी के संस्थापक मुकेश सहनी का नजदीकी है। जीतन सहनी की हत्या मामले में दरभंगा के एसएसपी ने अब तक की सभी जानकारी मीडिया को दी है। लेकिन एक सवाल के जवाब में एसएसपी जगुनाथ रेड्डी ने माना है कि पूरे मामले में मुकेश सहनी के परिवार के एक बेहद करीबी व्यक्ति भी इस मामले में शक के दायरे में है। पुलिस ने मुकेश सहनी के परिवार के उस करीबी से भी लगातार पूछताछ की है। फिलहाल पुलिस हिरासत में लिए गए मुकेश सहनी के परिवार के करीबी के अलावा बाकी सभी हिरासत में लिए गए लोगों को पुलिस ने क्लीन चीट नहीं दिया है। हालांकि एसएसपी ने फिलहाल शक के दायरे में आए मुकेश सहनी के परिवार के सदस्य का नाम नहीं बताया है और ना बाकी लोगों का भी नाम बताया है, जो अन्य लोग हिरासत में हैं। एसएसपी ने बताया कि गिरफ्तार काजिम अंसारी से पूछताछ के बाद उसे न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया है। काजिम अंसारी को दरभंगा पुलिस जल्द ही रिमांड पर लेगी और जरूरी पूछताछ करेगी। गौरतलब है कि पुलिस ने जानकारी देते हुए बताया था कि काजिम अंसारी ने जीतन सहनी से करीब डेढ़ लाख रुपए सूद पर लिए थे और इसके बदले जमीन के कागजात दिए थे। काजिम अंसारी जमीन का कागजात जीतन सहनी से लेना चाहता था जबकि उन्होंने मना कर दिया। इसके बाद उसने गुस्से में आकर अपने साथियों के साथ मिलकर जीतन सहनी की हत्या कर दी। वहीं जिस अलमारी में उसके जमीन के कागजात रखे हुए थे, उसकी चाबी नहीं मिलने पर उसने अलमारी पानी में फेंक दिया था. जीतन सहनी की शव क्षत-विक्षत पड़ी हुई थी।

फेमस होने के लिए सीएम योगी को बम से उड़ाने की दी धमकी!

प्रयागराज। एलएलबी कर रहे एक छात्र ने सीएम योगी आदित्यनाथ को जान से मारने की धमकी सिर्फ इसलिए दे दी कि उसे फेमस होना था। नतीजा ये हुआ ये छात्र हवालात पहुंच गया। प्रयागराज के युवक की पहचान अनिरुद्ध पांडेय ने सोशल मीडिया पर बम से उड़ाने की धमकी दी। उसने अपने अकाउंट पर लिखा कि योगी को वह पांच दिन के भीतर बम से उड़ा देगा। जैसे ही यह पोस्?ट वायरल हुआ, प्रयागराज पुलिस की साइबर सेल एक्टिव हो गई। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर उसे गिरफ्तार कर लिया है। सीएम योगी को इससे पहले कई मौकों पर जान से मारने की धमकी दी जा चुकी है। आरोपी अनिरुद्ध पांडेय के रूप में हुई है। वह सराय इनायत के मलावा बुजुर्ग गांव का रहने वाला है। अनिरुद्ध झूंसी में स्थित एक निजी कॉलेज से एलएलबी सेकेंड इयर का छात्र है। पुलिस अफसरों का कहना है कि पूछताछ में युवक ने बताया कि उसने फेमस होने के लिए योगी को धमकी देने संबंधी पोस्?ट किया था। आरोपी की गिरफ्तारी के लिए सर्विलांस और एसओजी की संयुक्?त टीम लगाई गई थी। उसके लोकेशन सराय इनायत इलाके में मिली।

केरल में भारी बारिश के चलते लैंडस्लाइड, सैकड़ों घर तबाह, स्कूल-कालेजों की छुट्टी

नई दिल्ली। केरल में उत्तरी मालाबार जिलों के पहाड़ी इलाकों में भारी बारिश हो रही है। भयंकर बारिश से यहां सामान्य जनजीवन पूरी तरह अस्त-व्यस्त हो गया है। वायनाड, कन्नूर और कासरगोड जिलों के कई हिस्सों से बाढ़, पेड़ों के उखड़ने, संपत्ति को नुकसान और मामूली लैंडस्लाइड की घटनाएं सामने आई। यहां आईएमडी ने एक दिन के लिए रेड अलर्ट जारी किया है। इसके साथ ही तीनों जिलों में जिला प्रशासन ने शुक्रवार को स्कूल-कॉलेज में छुट्टी घोषित कर दी है। केरल में जगह-जगह हो रही बारिश से भारी तबाही देखने को मिल रही है। पलक्कड़ में एक स्कूल बस नहर में पलट गई, हालांकि कोई घायल नहीं हुआ और बच्चों को बचा लिया गया। कोझिकोड में जगह-जगह जलजमाव के चलते सड़कें डूबी हुई हैं। कन्नूर में भारी बारिश के चलते 80 लोगों को शिविरों में स्थानांतरित करना पड़ा और लगभग 71 परिवारों को कन्नूर में उनके रिश्तेदारों के घरों में ले जाया गया। यहां 13 घर पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गए हैं और 242 घर आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त हो गए हैं। उत्तरी केरल के कुछ हिस्सों से बारिश के कारण दीवारें गिरने और आसपास खड़े वाहनों को नुकसान पहुंचने की भी खबरें हैं। त्रिशूर और एर्नाकुलम जिलों से भी बारिश के कारण संपत्ति के नुकसान की खबरें आई हैं। पिछले कुछ दिनों में राज्य में भारी बारिश के चलते लैंडस्लाइड, संपत्ति को नुकसान, सड़कों पर जलभराव और कई एकड़ खेत में बाढ़ आ गई है। इस बीच, भारतीय राष्ट्रीय महासागर सूचना सेवा केंद्र (आईएनसीओआईएस) ने चेतावनी दी है कि केरल तट, खासकर कन्नूर और कासरगोड में 2.5 से 3.4 मीटर ऊंची लहरें और तूफान आने की संभावना है। इन क्षेत्रों में मछुआरों और तटीय निवासियों को विशेष सावधानी बरतने, मछली पकड़ने वाले जहाजों को बंदरगाह में सुरक्षित रूप से बांधने और समुद्र तट की यात्रा से पूरी तरह से बचने की सलाह दी है। इनके अलावा, एर्नाकुलम जिले में एक हाथी नदी पार करने के कोशिश करते हुए कथित तौर पर बह गया और उसकी मौत हो गई। वायनाड जिले के पहाड़ी इलाकों में भी बड़े पैमाने पर भारी बारिश हुई, 29 से अधिक घर आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त हो गए, 1,000 से अधिक लोगों को 22 शिविरों में स्थानांतरित कर दिया गया और क्षेत्र से बहने वाली नदियों के जलस्तर बढ़ गया है।

'2051 तक एक मुस्लिम बहुल राज्य बन जाएगा असम, इसे कोई नहीं रोक सकता', हिमंत बिस्वा सरमा का बड़ा दावा

दिसपुर (एजेंसी)। असम के मुख्यमंत्री डॉ हिमंत बिस्वा सरमा ने एक बार फिर कुछ ऐसा बयान दिया है जिससे सियासी बवाल छिड़ सकता है। उन्होंने दावा किया कि असम में मुस्लिम आबादी हर 10 साल में लगभग 30 प्रतिशत बढ़ रही है, और वे 2041 तक बहुसंख्यक हो जाएंगे। गुरुवार को गुवाहाटी में एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि सांख्यिकीय नमूने के अनुसार मुसलमान अब असम की आबादी का 40 प्रतिशत हो गए हैं। उन्होंने साफ तौर पर दावा किया कि 2041 तक असम मुस्लिम बहुल राज्य बन जाएगा। यह एक वास्तविकता है और इसे कोई नहीं रोक सकता।

इसके साथ ही हिमंता ने कांग्रेस पर भी बड़ा आरोप लगाया है। उन्होंने कहा कि मुसलमानों की जनसंख्या वृद्धि को रोकने में कांग्रेस की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका है। यदि राहुल गांधी जनसंख्या नियंत्रण के ब्रांड एंबेसडर बन जाते हैं, तो यह नियंत्रित हो जाएगा क्योंकि समुदाय केवल उनकी बात सुनता है। उन्होंने जोर देते हुए कहा कि तथ्यों के सांख्यिकीय प्रक्षेपण के आधार पर, वर्ष 2051 तक असम एक मुस्लिम बहुल राज्य बन जाएगा। उन्होंने कहा कि असम में बढ़ती मुस्लिम आबादी का बयान तथ्यों पर आधारित है, राजनीति पर नहीं।

इससे पहले असम सरकार ने गुरुवार को एक कैबिनेट बैठक में असम मुस्लिम विवाह और तलाक पंजीकरण अधिनियम और नियम 1935 को रद्द करने का फैसला किया। मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने जानकारी दी है। उन्होंने कहा कि आज हमने मुस्लिम विवाह अधिनियम को निरस्त किया और मुस्लिम विवाह पंजीकरण के लिए एक नया कानून लागू करेंगे। बाल विवाह 80प्र. अल्पसंख्यक समुदाय में होता है, और 20प्र. अन्य समुदायों में। लेकिन हमारे लिए यह समस्या धार्मिक नहीं, बल्कि सामाजिक है। जल्द ही राज्य में बाल विवाह को खत्म करने का प्रयास किया जाएगा।

वहीं, सीएम हिमंत बिस्वा सरमा ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा कि हमने बाल विवाह के खिलाफ अतिरिक्त सुरक्षा उपाय करके अपनी बेटियों और बहनों के लिए न्याय सुनिश्चित करने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। भाजपा नेता ने आगे बताया कि आज असम कैबिनेट की बैठक में हमने असम निरसन विधेयक 2024 के माध्यम से असम मुस्लिम विवाह और तलाक पंजीकरण अधिनियम और नियम 1935 को निरस्त करने का निर्णय लिया है। सरकार ने बताया कि विवाह और तलाक के पंजीकरण में समानता लाने के लिए, राज्य मंत्रिमंडल ने असम निरसन विधेयक, 2024 को मंजूरी दे दी है, जिसका उद्देश्य असम मुस्लिम विवाह और तलाक पंजीकरण अधिनियम, 1935 और असम मुस्लिम विवाह और तलाक पंजीकरण नियम, 1935 को निरस्त करना है।

गोंडा में रेल हादसे के बाद राहत-बचाव कार्य जारी, जल्द शुरु हो सकता है परिचालन

गोंडा। यूपी के गोंडा में जहां चंडीगढ़-डिब्रूगढ़ एक्सप्रेस पटरी से उतर गई थी। इस दुर्घटना में तीन की मौत हो गई और 30 लोग घायल हुए थे। वहां एक-एक करके कोच को वापस पटरी पर या धकेलकर दूसरी तरफ कर रहे हैं। इसे जल्द से जल्द ठीक करने की कोशिश की जा रही है। गोंडा में ट्रैक पर रेलवे ऑपरेशंस जल्द शुरू करने की कवायद जारी है। बता दें पूर्वोत्तर रेलवे के गोंडा-गोरखपुर रेल खंड पर मोतीगंज और झिलाही रेलवे स्टेशनों के बीच गुरुवार की दोपहर चंडीगढ़-डिब्रूगढ़ वीकली एक्सप्रेस ट्रेन के आठ डिब्बे पटरी से उतर गए। जिलाधिकारी डॉ. नेहा शर्मा ने इस घटना में चार लोगों की मौत की पुष्टि की थी। हादसे में कई यात्री जख्मी हुए थे। घटना के समय ट्रेन के कुछ यात्री दोपहर के भोजन के बाद आराम कर रहे थे, वहीं अन्य लोग आने वाले स्टेशन पर उतरने की तैयारी में थे। तभी यह हादसा हो गया। हादस के बाद पटरियों से कुछ दूरी पर लोगों की अटैचियां और सामान बिखरे पड़े थे। बोगियों से बचकर बाहर निकले कुछ लोग बदहवास से पटरियों के पास ही बैठे दिखे। कई लोग अपनों को ढूंढते नजर आए। बच गए लोगों को बस एक ही फिक्र थी कि उसके अपने सुरक्षित हैं या नहीं। चंडीगढ़ से डिब्रूगढ़ जा रही डिब्रूगढ़ एक्सप्रेस ट्रेन की आठ बोगियों के गुरुवार को पटरी से उतर जाने की घटना के बाद मौके पर ऐसा ही दृश्य था।

'कांग्रेस बैसाखियों पर चलने वाली पार्टी', ओडिशा में नड्डा बोले- राज्य को आगे ले जाने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे

पुरी (एजेंसी)। ओडिशा भाजपा प्रमुख मनमोहन सामल की अध्यक्षता में भारतीय जनता पार्टी की दो दिवसीय राज्य कार्यकारी समिति की बैठक आज पुरी में शुरू हो गई है। आज बैठक में बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा शामिल हुए। जानकारी के मुताबिक बैठक में राज्य के मौजूदा राजनीतिक और विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर चर्चा हुई। राज्य कार्यकारिणी की बैठक में पार्टी नेताओं को नड्डा ने संबोधित भी किया। अपने संबोधन के शुरूआत में उन्होंने कहा कि मैं ओडिशा भाजपा के एक-एक कार्यकर्ताओं को बधाई देता हूं, साधुवाद देता हूं। क्योंकि आप सभी ने पूरी ताकत लगाकर ओडिशा में कमल खिलाया है।

नड्डा ने कहा कि हम अपने लोगों का कल्याण सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। आज मैं विश्वास दिलाता हूं कि हम अनुसूचित जाति समुदाय और हमारे आदिवासी भाइयों को मुख्यधारा में लाने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। उन्होंने कहा कि ओडिशा के हमारे आदिवासी भाइयों-बहनों ने भी भाजपा को भरपूर आशीर्वाद दिया है। आज हमारे 18 विधायक ट्राइबल समाज से हैं। इसलिए मैं आदिवासी भाइयों-बहनों का धन्यवाद करता हूं और विश्वास दिलाता हूं कि भाजपा आपकी सेवा में कोई कसर नहीं छोड़ेगी।

केंद्रीय मंत्री ने दावा किया कि भाजपा अकेली ऐसी पार्टी है जिसमें आंतरिक प्रजातंत्र है, भाई-भतीजावाद नहीं है, अपना-पराया नहीं है। बल्कि सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास के मंत्र को लेकर चलने वाली पार्टी है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस एक राजनीतिक 'परजीवी' बन गई है, जो अपना पेट भरने के लिए दूसरों की ताकत का सहारा लेती है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस खोखले वादों के अलावा किसी और चीज़ पर भरोसा नहीं करती है, और 'बैसाखी' के अलावा किसी और चीज़ पर नहीं चलती है।

अपना हमला जारी रखते हुए उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी खुद के बल पर खड़ी नहीं हो सकती है, ये बैसाखियों पर चलने वाली पार्टी है। कांग्रेस पार्टी को संविधान से कोई लेना-देना नहीं है। ये संविधान के रक्षक नहीं, बल्कि भक्षक हैं। इन्होंने संविधान को एक बार नहीं, बल्कि अनेकों बार आघात पहुंचाया है। उन्होंने कहा कि 25 जून 1975 को याद कीजिए, इन्होंने रातों-रात हमें जेलखानों में डाल दिया था। 1 लाख 25 हजार लोगों को जेल में डाल दिया था। ये राहुल क्या जानें अपनी दादी के कारनामें। कांग्रेस पार्टी ने 90 बार चुनी हुई सरकार को गिराने का काम किया।

नड्डा ने कहा कि डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने कहा था कि एक देश में दो वि?धान, दो प्रधान और दो निशान नहीं चल सकता। जिसे मोदी जी की इच्छाशक्ति और अमित शाह जी की रणनीति ने धारा 370 को धाराशायी कर जम्मू-कश्मीर को भारत का अभिन्न अंग बनाने का काम किया। उन्होंने कहा कि 2014 से पहले भारत अनिर्णय, भ्रष्टाचार और भाई-भतीजावाद से त्रस्त था। हालाँकि, प्रधान मंत्री मोदी जी के दूरदर्शी नेतृत्व में, हमारे देश ने 'सुधार, प्रदर्शन और परिवर्तन' के मार्गदर्शक सिद्धांतों को अपनाते हुए एक परिवर्तनकारी यात्रा की है। आज, भारत नए उद्देश्य और प्रगति की भावना के साथ चमक रहा है।

भगवान जगन्नाथ मंदिर के खजाने की जानकारी रहेगी गोपनीय

-रत्न भंडार की मरम्मत का काम होगा

भुवनेश्वर (एजेंसी)। ओडिशा में भगवान जगन्नाथ मंदिर का खजाना खोलने को लेकर काफी समय से मांग हो रही थी। यह खजाना अब से पहले 1985 में खोला गया था। 46 साल बाद बीते 14 जुलाई को जगन्नाथ मंदिर का रत्न भंडार खुला। इसके लिए ओडिशा की भाजपा सरकार की एसओपी के मुताबिक खास तैयारियां की गई थीं।

रत्न भंडार के तहखाने की चाबियां खो गई थीं, इसलिए ताले तोड़कर नए ताले डाल दिए गए थे। इसके बाद 18 जुलाई को फिर रत्न भंडार खोला गया। रत्न भंडार में 11 सदस्यों की टीम करीब 7 घंटे तक रही। सरकार द्वारा गठित समिति के अध्यक्ष जस्टिस विश्वनाथ रथ ने कहा कि पहले रत्न भंडार की मरम्मत का काम होगा। भगवान से प्रार्थना करे कि ये काम जल्द से जल्द हो जाए।

पिछली बार साल 1985 में तहखाने को खोला गया था। राजाओं के मुकुट से लेकर खजानों से भरी तिजोरियां देखने को मिली थीं। दरअसल, रत्न भंडार में भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और देवी सुभद्रा के कीमती आभूषण और खाने-पीने के बर्तन रखे हुए हैं। खजाने में वे चीजें हैं, जो उस दौर के राजाओं और भक्तों ने मंदिर में चढ़ाए थे। 12वीं सदी के बने मंदिर में तब से ये चीजें रखी हुई हैं। इस भंडारघर के दो हिस्से हैं, एक बाहरी और भीतरी भंडार।

गोपनीय रहेगी खजाने की जानकारी

श्री जगन्नाथ मंदिर प्रशासन (एसजेटीए) के प्रमुख अरबिंद पाधी ने बताया कि रत्न भंडार के अंदर के चैंबर से सभी कीमती सामान एक अस्थायी स्ट्रांग रूम में शिफ्ट हो गए हैं। इनमें लकड़ी और स्टील की अलमारी और संदूक सहित सात कटेनर शामिल थे। एसओपी के अनुसार भीतरी कक्ष और अस्थायी स्ट्रांग रूम दोनों को बंद कर सील कर दिया गया है। रथ ने कहा कि भीतरी कक्ष के अंदर आभूषण और कीमती सामान सात कटेनरों में रखे गए, इनमें तीन लकड़ी की अलमारियां, दो लकड़ी की पेटियां और एक स्टील की अलमारी और एक लोहे की पेटी शामिल थी। सभी कीमती सामान नए कटेनरों में रखा गया और स्ट्रांग रूम को सील कर दिया गया है। चाबियां पुरी कलेक्टर को दे दी गई हैं। चाबियां खजाने में रखी जाएंगी। खजाने के बारे में न्यायमूर्ति रथ ने कहा कि हमने आंतरिक कक्ष के अंदर जो कुछ देखा, वह गोपनीय है। जिस तरह कोई अपने घर में कीमती सामान का खुलासा नहीं करता, उसी तरह भगवान के खजाने को सार्वजनिक रूप से बताना अनुचित होगा।

उपचुनाव से पहले चिंता बढ़ी, लेकिन कमान योगी ने ही संभाली

लखनऊ (एजेंसी)। यूपी बीजेपी में कलह देखने को मिल रही है। डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य और प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र चौधरी हाल ही में दिल्ली गए थे। इस दौरान जेपी नड्डा और पीएम नरेंद्र मोदी से मुलाकात की थी। यूपी में दस विधानसभा सीटों पर उपचुनाव से पहले इन चर्चाओं ने बीजेपी की चिंताएं बढ़ा दी हैं। इस बीच सीएम योगी आदित्यनाथ ने फ्रंटफुट पर खेलने के संकेत दिए हैं और उपचुनाव की तैयारियों की कमान अपने हाथ में ले ली है। अभी चुनाव की तारीखों का ऐलान नहीं हुआ है, लेकिन सीएम योगी पहले ही सरकार और संगठन के पेंच कसना चाहते हैं। ऐसा इसलिए कि मंत्री अपने इलाकों में जिम्मेदारी संभाल लें और संगठन भी सक्रिय हो जाए ताकि चुनाव के ऐलान के वक्त दबाव न रहे। सीएम योगी ने हाल ही में सभी दस विधानसभा सीटों से जुड़े लोगों की बैठक भी बुलाई थी और प्रभारी तय किए गए थे।

सीएम योगी ने मंत्रियों और नेताओं को संकेत दिया है कि वे लोगों की समस्याओं को सुनें और जनसंपर्क बढ़ाएं। खासतौर पर बूथ मैनेजमेंट पर जोर दिया जाए। बुधवार को हुई बैठक में डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य और ब्रजेश पाठक नहीं पहुंचे। दोनों नेता दिल्ली में थे। इसकी चर्चाएं भी खूब रहीं, लेकिन योगी आदित्यनाथ चुप्पी साधे रहे और मिशन-10 पर जुट गए। कयास इसलिए भी बढ़े थे क्योंकि बीजेपी के संगठन के भी कई वरिष्ठ नेता मौजूद नहीं थे। इस पर जब सवाल हुए तो बीजेपी के नेताओं ने ज्यादा तवज्जो नहीं दी। उन्होंने कहा कि अभी तो यह सरकार का ही काम है। चुनाव के ऐलान के बाद संगठन भी सक्रिय हो जाएगा। यूपी में खराब नतीजों का सीधा असर सीएम योगी की छवि पर पड़ सकता है। इसलिए वह काफी सक्रिय हैं और चाहते हैं कि लोकसभा चुनाव वाली हार की निराशा दूर की जाए। योगी आदित्यनाथ ने मंत्रियों की बैठक तब बुलाई, जब डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य ने एक दिन पहले ही कहा था कि संगठन सरकार से बड़ा है।

महाराष्ट्र सरकार पर आठ लाख करोड़ का कर्ज, जनता को लुभाने ला रहे योजनाएं

-संजय राउत बोले-अपना रंग रूप बदलकर नाटक करने में माहिर हैं छगन भुजबल

मुंबई, (एजेंसी)। महाराष्ट्र सरकार ने लाडला भाऊ (यानी लाडला भाई) योजना की शुरुआत की है। इस योजना में शिंदे सरकार 12वीं पास लड़कों को आर्थिक मदद देगी। सरकार की इस योजना पर शिवसेना उद्धव गुट के नेता संजय राउत ने शिंदे सरकार पर जमकर निशाना साधा है।

संजय राउत ने कहा कि महाराष्ट्र सरकार पर आठ लाख करोड़ रुपए का कर्ज है। यह कोई छोटी रकम नहीं है। लोकसभा चुनाव में हार के बाद सरकार की ओर से लाडला भाऊ योजना ला रही है। लाडली बहना योजना मध्य प्रदेश की योजना है, जिसे महाराष्ट्र सरकार ने कॉपी किया है। उन्होंने कहा कि अब लाडला भाई योजना के तहत 12वीं पास युवाओं को 6 हजार और बेरोजगारों को दस हजार रुपए दिए जाएंगे और लाडली बहिना को सिर्फ 1500 रुपए। हमारी मांग है कि लाडली बहिना योजना के तहत बहनों को भी दस हजार रुपए दिए जाएं, तभी उनका घर चलेगा। संजय राउत ने कहा कि लोकसभा चुनाव के दौरान महायुति के लोग कह रहे थे कि विपक्ष दस सीट भी नहीं जीतेगा। लेकिन, हमने 31 सीटों पर जीत दर्ज की। इसके अलावा चार सीटों पर बहुत कम अंतर से हमारी हार हुई है। आगामी विधानसभा चुनाव में भी महाविकास अघाड़ी 280 सीटों पर जीत दर्ज करेगी। महाराष्ट्र में बीजेपी की सीटों की संख्या 2019 में 23 थी जो हाल के लोकसभा चुनावों में घटकर सिर्फ 9 रह गई है। सीएम शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना को सात जबकि उपमुख्यमंत्री अजित पवार के नेतृत्व वाली एनसीपी सिर्फ एक सीट पर जीत हासिल कर सकी और विपक्षी एमवीए जिसमें शिवसेना (यूबीटी), एनसीपी (शरदचंद्र पवार) और कांग्रेस शामिल हैं, ने बेहतर प्रदर्शन कर 48 में से 30 सीटों पर जीत हासिल की। राउत ने दावा किया कि आगामी विधानसभा चुनावों में एमवीए 288 में से 280 सीटें जीतेगी।

वहीं राउत ने छगन भुजबल पर भी निशाना साधते हुए उन्हें बहुत बड़ा कलाकार बताया है। संजय राउत ने कहा कि उन्होंने फिल्मों में भी काम किया है। अपना रंग रूप बदलकर नाटक करने में छगन भुजबल माहिर हैं। शरद पवार की देश में और महाराष्ट्र की राजनीति में उनकी प्रतिष्ठा है। देखते रहिए आगे क्या होता है। बता दें कि लाडला भाऊ (लाडला भाई) योजना के तहत महाराष्ट्र सरकार ने 12वीं पास को 6 हजार रुपए तो वहीं, बेरोजगार युवकों को 10 हजार की आर्थिक मदद देने का ऐलान किया है। इससे पहले, महाराष्ट्र सरकार ने मुख्यमंत्री लाडली बहिना योजना की शुरुआत की थी। इस योजना के तहत 21 से 60 साल की पात्र महिलाओं को सरकार की ओर से हर महीने 1500 रुपए की आर्थिक मदद दी जाती है।

आरएसएस के मुरीद हुए दिग्विजय सिंह! यूथ कांग्रेस के कार्यकर्ताओं को दे दी सीखने की नसीहत

मुंबई (एजेंसी)। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता दिग्विजय सिंह ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को लेकर बड़ा बयान दिया है। आरएसएस के कट्टर आलोचकों में से एक दिग्विजय सिंह ने इसको लेकर युवा कांग्रेस कार्यकर्ताओं को एक नसीहत दी है। उन्होंने युवा कांग्रेस कार्यकर्ताओं से कहा कि वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से सीखें कि संदेश को प्रभावी ढंग से कैसे संप्रेषित किया जाए और संगठन के विस्तार पर ध्यान केंद्रित करें। दिग्विजय सिंह ने यह बात जबलपुर में कही जब वे कथित नर्सिंग कॉलेज घोटाले और नीट प्रश्नपत्र लीक के खिलाफ युवा कांग्रेस द्वारा आयोजित धरना प्रदर्शन को संबोधित कर रहे थे।

अपने संबोधन में दिग्विजय सिंह ने कहा कि संघ से सीखिए, हालांकि हम उनके कट्टर विरोधी हैं। वे दिमागी खेल खेलते हैं। वे कभी विरोध नहीं करेंगे, कभी प्रदर्शन नहीं करेंगे, कभी पिटेंगे नहीं, कभी जेल नहीं जाएंगे, बल्कि वे हमें जेल भेज देंगे। उन्होंने आगे कहा कि आरएसएस आम तौर पर तीन चीजों पर ध्यान केंद्रित करता है-पर्चे बांटना, चर्चाएं आयोजित करना और अंत में आंदोलन पर होने वाला खर्च। अगर आप उनसे लड़ना चाहते हैं, तो उन्हें उनके ही खेल में हराएं, बेशक, शारीरिक रूप से नहीं बल्कि बौद्धिक रूप से।

मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि जमीनी स्तर पर संगठनात्मक नेटवर्क के अभाव में विरोध प्रदर्शन प्रभावी साबित नहीं होंगे। उन्होंने बूथ से लेकर जिले तक तीन स्तरों पर आंदोलन करने का सुझाव दिया। कांग्रेस नेता ने कहा कि संघ की कार्यप्रणाली और दुष्प्रचार को समझकर उसका प्रभावी ढंग से मुकाबला किया जा सकता है। बाद में पत्रकारों से बातचीत करते हुए सिंह ने राज्य चुनावों में कांग्रेस पार्टी के प्रदर्शन पर निराशा व्यक्त की और कहा कि पार्टी फिलहाल इस असफलता के कारणों का विश्लेषण कर रही है।

सिंह ने कहा कि भाजपा ने दावा किया था कि वह लोकसभा चुनावों में 400 सीटें हासिल करेगी, लेकिन वह 250 सीटें भी हासिल नहीं कर सकी। उन्होंने भाजपा को मिले बहुमत का श्रेय बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू के समर्थन को दिया। इसके अलावा, सिंह ने नीट प्रश्नपत्र लीक कांड के लिए राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (एनटीए) के अध्यक्ष प्रदीप कुमार जोशी की आलोचना की और सवाल किया कि परीक्षा रद्द क्यों नहीं की गई। इसके अतिरिक्त, सिंह ने राज्य सरकार पर भ्रष्टाचार के विभिन्न आरोप भी लगाए।

नवबिहार मीडिया प्रा. लि. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. रामाज्ञा तिवारी द्वारा विश्वेश्वरा पब्लिकेशनंस एलएलपी की ओर से शिवासाईं पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, नियर टेंडर बागीचा पेट्रोल पंप, रातू, रांची (झारखंड)- 835222 से मुद्रित एवं उद्योग भवन मार्ग, 19 A कोकर औद्योगिक क्षेत्र रांची- 834001 (झारखंड) से प्रकाशित। **संपादक- डॉ. रामाज्ञा तिवारी, प्रधान संपादक-देवेंद्र सिंह*** (*पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार), **प्रबंधक- नरेंद्र कुमार सिंह.** 9334331934, 9386895799, 9507466535, **RNI Regn.: JHAHIN/2011/40902**